कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ. प्र.)

नैक द्वारा 'बी'-ग्रेड प्रमाणित

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

ज्ञानाञ्जलि

2016 -17

महाविद्यालय परिवार

प्रथम पंक्ति में बांए से दांए -

डॉ० बलराम सिंह, मो० वकार रज़ा, डॉ० रतन सिंह, डॉ० शिवानी वर्मा, डॉ० रश्मि कुमारी, डॉ० ममता उपाध्याय, डॉ० आभा सिंह, डॉ० अनीता रानी राठौर, डॉ० आर०पी० सिंह, (निदेशक, उच्च शिक्षा), डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या), डॉ० एस०एस० यादव, डॉ० आशा रानी, डॉ० निधि रायज़ादा, डॉ० दीप्ति वाजपेयी, डॉ० जीत सिंह, डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा, डॉ० किशोर कुमार, डॉ० अर्चना सिंह

द्वितीय पंक्ति में बांए से दांए -

श्री मणिक रस्तोगी, डॉ० अरविन्द कुमार, डॉ० ऋचा, डॉ० प्रतिभा तोमर, श्रीमती नेहा त्रिपाठी, श्रीमती कनक लता, श्रीमती भावना यादव, डॉ० वन्दना शर्मा, श्रीमती पवन, डॉ० सोनम शर्मा, श्रीमती दीक्षा, डॉ० पंकज चौधरी, डॉ० सीमा देवी, श्रीमती शिल्पी, डॉ० मीनाक्षी लोहनी, डॉ० विनीता सिंह, डॉ० सुशीला, डॉ० मिन्तु, डॉ० नीलम शर्मा, डॉ० हरिन्द्र कुमार, डॉ० अरविन्द यादव, डॉ० धीरज कुमार, श्री कनक कुमार, श्री अरविन्द सिंह

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

पंक्ति में बांए से दांए -

श्री महेश सिंह भाटी, डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या), श्री मुकेश शर्मा, श्री चन्द्र प्रकाश

ज्ञानाञ्जलि

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

बादलपुर- गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)

नैक द्वारा 'बी'–ग्रेड प्रमाणित

अंक - दशम् **वर्ष** - 2017

प्रधान सम्पादक
डॉ० दीप्ति वाजपेयी

संरक्षक
डॉ० करुणा सिंह
प्राचार्या

:- सम्पादक मण्डल :-

डॉ० अर्चना सिंह
डॉ० निधि रायज़ादा
श्रीमती नेहा त्रिपाठी
डॉ० अरविन्द यादव
डॉ० मीनाक्षी लोहनी
श्रीमती दीक्षा
डॉ० मिन्तु बंसल
डॉ० नीलम शर्मा
डॉ० रतन सिंह

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध

कुल गीत

शस्य श्यामला बादलपुर की हरी भरी उर्वर धरती पर जन-गण मंगल करने के हित, विद्या दीप जलाया है।

गंगा यमुना की धारायें इसके तट पावन करती

मुक्त प्रदूषण शीतल छाया, तन मन को पुलकित करती

शान्ति समन्वय नैतिकता हित ज्ञान का दीप जलाया है।

शस्य श्यामला .....

खेत-खेत क्यारी-क्यारी में, नित्य नया जीवन भरती

श्रम सीकर सिंचित यह माटी चन्दन सा जग महकाती

बाल पुष्प का सौरभ माटी चन्दन अगरु जलाया है

शस्य श्यामला .....

इसका है इतिहास निराला गाथा गायन अलबेला

निहिर भोज की कीर्ति कथा से इसका मस्तक गर्वीला

गत भी है परम्परागत विद्या दुर्ग सजाया है।

स्य श्यामला .....

आजादी के प्रथम युद्ध की साक्षी है पावन धरती

बुद्ध तथागत की करुणा भी ममता का संचय करती

समरस की सुन्दर संध्या में रंजन द्वीप जलाया है।

शस्य श्यामला .....

भव्य भारती के पदतल में करें अर्चना करें नमन

रमा विजय श्री मिले सभी को, जितेन्द्रिय सब बने युवा ज

ज्ञान सूर्य से मिटे तिमिर सब, ज्योतिर्पुंज जलाया है।

शस्य श्यामला .....

ऊर्जा बौद्धिकता मानवता शुचिता पावनता और सृजन

विद्या मन्दिर बादलपुर का आओ कर लें अभिनन्दन

विद्या हर घर-घर तक पहुँचे ज्ञान का शंख बजाया है

शस्य श्यामला .....

अनुक्रमणिका

1. **कुलगीत**	कु.मा.रा.म. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर	
2. **संदेश**	महामहिम राष्ट्रपति, राष्ट्रपति सचिवालय, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली	
3. **संदेश**	श्री राम नाईक, राज्यपाल, लखनऊ, उ०प्र०	
4. **संदेश**	श्री योगी आदित्य नाथ, मुख्यमंत्री, उ०प्र०	
5. **संदेश**	डॉ० राजेन्द्र पाल सिंह, निदेशक, उ०शि० इलाहाबाद, उ०प्र०	
6. **संदेश**	प्रो० नरेन्द्र कुमार तनेजा, कुलपति, मेरठ मंडल, मेरठ	
7. **महाविद्यालय प्राचार्या**	डॉ० करुणा सिंह, प्राचार्या	
8. **प्राचार्या की लेखनी से**	डॉ० करुणा सिंह, प्राचार्या	
9. **सम्पादकीय**	डॉ० दीप्ति वाजपेयी, प्रधान सम्पादिका	
गद्याञ्जलि		07-53
10. अज्ञेय के काव्य में शिल्प विधान	**डॉ० मिन्तु**, असि०प्रो० हिन्दी	08-12
11. हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा	**डॉ० किशोर कुमार**, एसो० प्रो० – (इतिहास विभाग)	13
12. प्रयोजन मूलक भाषा एवं उसके प्रकार	**कु. संजय नागर**, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)	14-16
13. रोजगार परक भाषा	**भावना देवी**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	16-17
14. लोक-वार्ता और लोक संस्कृति	**नेहा**, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)	17-19
15. अपना-अपना कुरुक्षेत्र	**कु० रुबी विकल**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	20-21
16. अन्तर्दृष्टि	**कु० कंचन**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	21-22
17. विचार-बिन्दु	**कु० प्रियंका**, एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)	22
18. क्षेत्रीय पत्रकारिता	**कु० मनु**, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)	22-23
19. समय की कीमत	**मीनाक्षी बैसोया**, एम.ए. प्रथम वर्ष (अर्थशास्त्र)	23
20. काव्यप्रयोजनम्	**डॉ० नीलम शर्मा**, असि०प्रो० संस्कृत विभाग	24-26
21. छात्रों में उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियाँ	**डॉ० दीप्ति वाजपेयी**, एसो०प्रो० संस्कृत विभाग	27-29
22. संघे शक्तिः कलौ युगे	**सविता**, बी.ए. तृतीय वर्ष	30
23. विद्यार्थी-जीवनम्	**कल्पना कुमारी**, बी.ए. प्रथम वर्ष	31-32
24. भारतीय संस्कृतिः	**रिंकी नागर**, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर	32-34
25. वाल्मीकिः	**मोनिका सिंघल**, बी.ए. द्वितीय वर्ष	35-37
26. हिमालयः	**अर्चना रानी**, बी.ए. प्रथम वर्ष	37
27. वसन्तः	**संजू नागर**, एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर	38
28. वैदिक संस्कृतिः	**गीता रौसा**, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर	39-40
29. महाकवि बाणभट्टः	**सरिता रौसा**, बी.ए. तृतीय वर्ष	40-42

30.	Adolescent Health Program in India	**Smt. Shilpi**, Asst. Prof. - (Home Science)
31.	Rural Uplift Programme in India	**Dr. Vineeta Singh**, Asst. Prof. – (Sociology)
32.	Environment and Human Health	**Dr. Meenakshi Lohani**, Asst. Prof. – (Geography)
33.	My Lovely Mother	**Anjali Pal**, B.A. Ist
34.	Story- Do not Boast Yourserlf	**Pooja**, B.A. Ist
35.	Story- Saying 'Sorry'	**Deepanshi**, B.A. Ist
36.	Story- Shibi Rana the King	**Monika**, B.A. IIIrd
37.	Right to Education	**Divya Sharma**, M.A. II Sem.
38.	Jokes	**Kamna**, B.A. Ist
39.	Tulsi: The Best Medicine	**Kavita**, B.A. IIIrd
40.	What is Life or Different view of life	**Neelam**, B.A. Ist
41.	Who is poor- (Story)	**Reeta**, B.A. IInd
42.	Lazy Jack	**Ramna**, B.A. Ist
43.	The Importance of Values and Morals	**Priya Bansal**, B.A. Ist

काव्याञ्जलि

44.	वक्त	**डॉ० कनकलता**, असि०प्रो० संस्कृत विभाग
45.	सत्यता	**कु. मनीषा चौहान**, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
46.	भारत देश	**काजल चौधरी**, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
47.	अनमोल दहशत	**प्रियंका**, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
48.	विश्वास	**कु. पूजा कर्दम**, बी.कॉम. प्रथम वर्ष
49.	उस आदमी का जीना	**कु. मोनिका**, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष
50.	मन के हारे हार है	**काजल नागर**, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
51.	हिन्दुस्तान	**रिंकी नागर**, बी.कॉम. प्रथम वर्ष
52.	बरसात	**कु. मनीषा**, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)
53.	क्या रोये	**कु. मोनिका शर्मा**, एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)
54.	अमन चाहता है	**कु. नेहा नागर**, बी.ए. प्रथम वर्ष
55.	गजब	**पूजा नागर**, बी.ए. तृतीय वर्ष
56.	सरस्वती वन्दना	**अर्चना शर्मा**, एम.ए. प्रथम वर्ष
57.	देवस्तुतिः	**देवेन्द्री**, एम.ए. द्वितीय वर्ष
58.	अग्निपुराणे प्रकृतिः	**रिंकी नागर**, एम.ए. द्वितीय वर्ष
59.	प्रहेलिकाः	**सायना**, बी.ए. द्वितीय वर्ष
60.	शिवस्तुति	**अंजली नागर**, बी.ए. प्रथम वर्ष
61.	महाभारते इच्छामृत्युः	**संजू**, एम.ए. प्रथम वर्ष
62.	महाभारतीयसंवादसमीक्षणम्	**गीता**, एम.ए. प्रथम वर्ष
63.	सुभाषितानि	**अंजना**, बी.ए. प्रथम वर्ष

54-66

43.	Why Didn't you let me live?	**Aanchal Nagar**, B.A. IInd — 64
44.	Teachers	**Pooja Nagar**, B.A. IInd — 64
45.	My Nation	**Priya Bansal**, B.A. Ist — 65
46.	My India	**Priyanka**, B.A. IIIrd — 66
47.	I Love My Country	**Manju**, B.A. Ist — 66

विविधाञ्जलि

67-104

48.	वार्षिक आख्या सत्र –2016–17	**डॉ० अनीता रानी राठौर**, एसो०प्रो० अंग्रेजी — 68–69
49.	हिन्दी परिषद्	**डॉ० मिन्तु**, असि०प्रो० हिन्दी — 70
50.	संस्कृत परिषद्	**डॉ० दीप्ति वाजपेयी**, परिषद् प्रभारी — 70–71
51.	अंग्रेजी परिषद्	**डॉ० अनीता रानी राठौर**, परिषद् प्रभारी — 71–72
52.	राजनीति विज्ञान परिषद्	**डॉ० ममता उपाध्याय**, एसो०प्रो० राज. विज्ञान — 72–73
53.	अर्थशास्त्र परिषद्	**श्रीमती पवन**, असि०प्रो० अर्थशास्त्र — 74
54.	इतिहास परिषद्	**डॉ० निधि रायज़ादा**, परिषद् प्रभारी — 74–75
55.	समाजशास्त्र परिषद्	**डॉ० सुशीला**, परिषद् प्रभारी — 76
56.	गृह विज्ञान परिषद्	**डॉ० शिवानी वर्मा**, परिषद् प्रभारी — 76–77
57.	भूगोल परिषद्	**डॉ० मीनाक्षी लोहनी**, परिषद् प्रभारी — 78
58.	शिक्षाशास्त्र परिषद्	**डॉ० सोनम शर्मा**, परिषद् प्रभारी — 78
59.	संगीत परिषद्	**डॉ० बबली अरुण**, परिषद् प्रभारी — 79
60.	वाणिज्य परिषद्	**डॉ० अरविन्द कुमार यादव**, परिषद् प्रभारी — 79–80
61.	रसायन विज्ञान परिषद्	**श्रीमती नेहा त्रिपाठी**, परिषद् प्रभारी — 80–81
62.	भौतिक विज्ञान परिषद्	**डॉ० ऋचा**, परिषद् प्रभारी — 81
63.	वनस्पति विज्ञान परिषद्	**डॉ० प्रतिमा तोमर**, परिषद् प्रभारी — 81
64.	जन्तु विज्ञान परिषद्	**डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा**, परिषद् प्रभारी — 82–83
65.	शारीरिक शिक्षा विभाग	**श्री धीरज कुमार**, असि०प्रो० शारीरिक शिक्षा — 84
66.	बी.एड. विभाग	**डॉ० बलराम सिंह**, प्रभारी बी.एड. — 85
67.	साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद्	**डॉ० अनिता रानी राठौर**, परिषद् प्रभारी — 86
68.	राष्ट्रीय सेवा योजना	**डॉ० दीप्ति वाजपेयी**, कार्यक्रम अधिकारी — 87–89
69.	National Cadet Corps	**Dr. Meenakshi Lohani, Dr. Neelam Sharma** — 90-91
70.	रेंजर्स	**डॉ० सुशीला**, रेंजर्स प्रभारी — 91–92
71.	महिला प्रकोष्ठ	**डॉ० अर्चना सिंह**, महिला प्रकोष्ठ प्रभारी — 93–94
72.	रोजगार प्रकोष्ठ एवं कैरियर काउन्सलिंग सेल	**श्रीमती भावना यादव**, परिषद् प्रभारी — 94
73.	पुरातन छात्र सम्मेलन	**डॉ० मिन्तु**, असि० प्रो० हिन्दी — 95
74.	वॉल–मैगजीन आख्या	**श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ० नीलम शर्मा** — 96
75.	ESPD Club	**Ms. Diksha, Convenor** — 96
76.	राष्ट्रीय सेमिनार	**डॉ० जीत सिंह**, संयोजक सेमिनार — 97–99
77.	राष्ट्रीय कार्यशाला	**डॉ० बलराम सिंह**, संयोजक राष्ट्रीय कार्यशाला — 100–101
78.	शैक्षिक भ्रमण	**डॉ० रतन सिंह**, असि०प्रो० (बी.एड.) — 102–103
79.	महाविद्यालय परिवार	**श्रीमती दीक्षा**, असि. प्रो. अंग्रेजी विभाग — 104

VISION

To provide low cost quality higher education to the girl students of socio-economically weaker sections of the area, in order to bridge the rural-urban divide and thus bring about holistic national development.

परिकल्पना

इस क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान कर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभेदों को दूर करते हुए समग्र राष्ट्र का विकास करना।

MISSION

As a unit of Uttar Pradesh Government Higher Education, "Kumari Mayawati Govt. Girls Post Graduate College, Badalpur" is engaged in pursuit of academic excellence, in order to achieve the empowerment of women in the adjoining rural area by:
- the development of leadership skills, inner strength and self-reliance,
- inculcate moral values and tolerance and
- making new technological innovations available to the target group, in order to prepare them to face national and global challenges.

संकल्प

उ.प्र. राज्य उच्च शिक्षा की इकाई के रूप में "कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर निम्न बिन्दुओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है –

– छात्राओं में मनोबल, आत्मनिर्भरता एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना।
– उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सहिष्णुता की भावना विकसित करना।
– नवीन तकनीकी एवं नवाचारों के माध्यम से छात्राओं में राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना।

शमीमा सिद्दीकी
SHAMIMA SIDDIQUI
भारत के राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव
Deputy Press Secretary
to the President of India

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली – 110004.
PRESIDENT'S SECRETARIAT
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI - 110004.

'संदेश'

भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.) द्वारा अपनी पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है पत्रिका में दी गई सामग्री पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक होगी।

राष्ट्रपति जी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

नई दिल्ली
31 मार्च, 2017

राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

Tel. (O) : 91-11-23793528 (Direct), 91-11-23015321 Extn. 4442, Fax : 91-11-23010252
E-mail : message-rb@rb.nic.in

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ – 226 027

04 अप्रैल, 2017

'संदेश'

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर (गौतमबुद्धनगर) द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा संस्थानों पर अपने विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा देने की जिम्मेदारी है । मुझे उम्मीद है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका में विद्यार्थियों के उपयोगार्थ महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा।

वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

(राम नाईक)

दूरभाष : 0522–2620494–95, 2236497–98, 2236992,2620331, 2620316, 2236093, फैक्स : 0522–2239488
ई–मेल : hgovup@nic.in वेबसाइट: www.upgovernor.gov.in

G/102/CM-2/7
लाल बहादुर शास्त्री भवन,
लखनऊ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

योगी आदित्यनाथ

'संदेश'

हर्ष का विषय है कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्धनगर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों की पत्रिकाएं विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करके, उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनके माध्यम से पाठकों को शिक्षण संस्थान के क्रियाकलापों के विषय में भी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। मुझे विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होगी।

वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

(योगी आदित्यनाथ)

डॉ० राजेन्द्र पाल सिंह
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय, उ०प्र०
इलाहाबाद

0532–2623874 (का०)
0532–2423919 (फैक्स)
0532–2256785 (आ०)
9415295755 (मो०)

दिनांक 21–04–17

'संदेश'

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्धनगर द्वारा वार्षिक पत्रिका **'ज्ञानाञ्जली'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों व महाविद्यालय में अध्ययनरत विभिन्न संकायों के छात्राओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक विषयों पर लेख प्रकाशित किये जायेंगे।

आशा है कि सार्थक लेखों के संग्रह के द्वारा पत्रिका छात्राओं के लिये सृजनशीलता, सुरुचिपूर्ण, रचनात्मक प्रतिभा व उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास, अनुशासन, संयम, कर्त्तव्यपरायणता एवं देश प्रेम की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकेगी तथा उनके लिये पथ–प्रदर्शक का कार्य करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

(डॉ० आर०पी० सिंह)

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ–250 004 (उ०प्र०)

प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी–एच०डी० (अर्थशास्त्र)
कुलपति

पत्रांक : एस०वी०सी० / 20 /
दिनांक : 27.03.2017

'संदेश'

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, (गौतमबुद्ध नगर) द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **''ज्ञानाञ्जलि''** सत्र 2016–17 का प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वास है कि पत्रिका विद्यार्थियों के विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनेगी और उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशित करने हेतु शुभकामनाएँ ।

नरेन्द्र तनेजा
(एन० के० तनेजा)

डॉ० करूणा सिंह
(प्राचार्या)
कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ – 250 004

कार्यालय : +91–0121–2760554,2760551, फैक्स: 2762838
शिविर कार्यालय : +91–0121–2600066, फैक्स:2760577

वैबसाइट : ccsuniversity.ac.in
ई–मेल: vc@ccsuniversity.ac.in

प्राचार्या

सरल एवं सृजनशील व्यक्तित्व की धनी

प्राचार्या की लेखनी से

महाविद्यालय पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' के लिए अपनी लेखनी से चन्द शब्दों को लिखते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष एव गर्व की अनुभूति हो रही है। मानव अपने जीवन का निर्धारण ज्ञान के द्वारा करता है और यह ज्ञान ही मानव को अमरत्व प्रदान करता है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो मानव जीवन को विकसित कर, अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोकर भविष्य में विश्व के देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकता है।

समाज की महत्वपूर्ण औपचारिक इकाईयाँ हैं – हमारी शिक्षण संस्थाएं। शिक्षा प्रदान करने, संस्कारों के बीजारोपण एवं उन्हें परिष्कृत करने का गुरुतर दायित्व समाज द्वारा इन्हीं शिक्षण संस्थाओं को सौंपा गया है। हमारा महाविद्यालय शिक्षा के इन्हीं उद्देश्यों की परिपूर्ति हेतु प्रयत्नशील है, शिक्षा के उस सुन्दर आदर्श की प्राप्ति की ओर अग्रसर है जो कार्यकुशलता के साथ जीवन का अवलम्ब बन सके, एक सभ्य, सुसंस्कृत राष्ट्र की संरचना कर सके।

हमारा महाविद्यालय प्रतिवर्ष नए एवं उच्च शैक्षिक कीर्तिमान स्थापित करता जा रहा है, जिसका सम्पूर्ण श्रेय महाविद्यालय के प्रबुद्ध, कर्मठ एवं लगनशील प्राध्यापकों को जाता है। महाविद्यालय के प्राध्यापक छात्राओं के ज्ञानार्जन के साथ निरन्तर उनके व्यक्तित्व को निखारने हेतु प्रयासरत हैं, जिससे कि वे समाज में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित कर सकें।

महाविद्यालय पत्रिका 'ज्ञानाञ्जलि' के प्रकाशन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु मुख्य सम्पादिका एवं सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका का प्रकाशन इस बात का द्योतक है कि आपसी सहयोग एवं सामंजस्य से ही कार्य सफल होते हैं। पत्रिका के प्रकाशन में समस्त प्राध्यापकों एवं कार्यालय कर्मचारियों के सहयोग हेतु आभार व्यक्त करती हूँ। समस्त छात्रायें जिन्होंने अपने लेख, निबन्ध एवं कविता से पत्रिका को सुसज्जित किया है, प्रशंसा की पात्र हैं।

पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग हेतु सभी का आभार प्रकट करते हुए अन्त में छात्राओं का आह्वान इन पंक्तियों के साथ करती हूँ :

'हमें नहीं है किसी आसमां की तलाश
इसी जमीं को हमें आसमां बनाना है'

अनन्त शुभकामनाओं सहित

– डॉ० करुणा सिंह
प्राचार्या

सम्पादकीय

संस्कृति हमारे विवेक की संचालिका शक्ति है। इसी से हमारी रुचि की, ज्ञान की सर्जना होती है। सत्यं–शिवं–सुन्दरं की त्रिवेणी संस्कृति के रूप मे प्रतिपल मानव जीवन में प्रवाहित होती रहती है। संस्कृति मानव की मानसिक, नैतिक, भौतिक, आधिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा कलात्मक जीवन की समग्रता का नाम है।

जीवन की सरिताओं, मैदानों, वनों, चट्टानों, वड़वानल, दावानल, मलयपवन, झंझावातों को सहते हुए, सबके साथ बहते हुए आगे बढने वाली जो निर्विकल्पक जीवधारा जीवन को सजीव बनाये रखती है, इसी जीवधारा को संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। मानव जीवन मे जितना भी वैभव है वह मनुष्य के मन, प्राण और शरीर के दीर्घकालीन प्रयत्नों का परिणाम है। धर्म, दर्शन, साहित्य व कला उसी के अंग हैं। संस्कृति आत्मिक उत्थान का चिन्ह, आत्म–उत्कर्ष की सीढ़ी तथा आत्म दर्शन का मार्ग है। संस्कृति आत्मशुद्धि द्वारा सर्वगुणों का विकास करने वाली सर्वोत्कृष्ट मार्ग प्रदर्शिका है। संस्कृति जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण एवं हमारे सृजन का प्रकटीकरण है। यह सृजन जब शब्दों मे आबद्ध होकर साकार रुप लेता है तो वह सृजनकार की आंतरिक सस्कृति को प्रकट करता है।

महाविद्यालय पत्रिका ज्ञानाञ्जलि जहाँ एक ओर छात्राओं की सृजनात्मकता को मंच प्रदान कर उनकी आन्तरिक संस्कृति को आकार देने का एक सहज प्रयास है वहीं आदरणीय प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह की स्नेहिल छत्रछाया में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई विभिन्न शिक्षण सहगामी गतिविधियों, उपलब्धियों तथा भावी आशाओं का प्रतिबिम्ब है।

नवोन्मेषण द्वारा ज्ञानाञ्जलि को नवीन कलेवर प्रदान करने का समस्त श्रेय माननीय प्राचार्या जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन को जाता है। सम्पादन जैसा गुरुतर दायित्व प्रदान कर मेरी सृजनात्मक कल्पनाओं की उड़ान को पंख देने हेतु मैं प्राचार्या महोदया के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

ज्ञानाञ्जलि के सफल प्रकाशन हेतु अपने अमूल्य शुभकामना संदेशों द्वारा हमारा उत्साहवर्धन करने के लिये मैं महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी, महामहिम राज्यपाल श्री राम नाईक, माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, आदरणीय डॉ० आर.पी.सिंह, शिक्षा निदेशक (उच्च शिक्षा) एवं प्रो० नरेन्द्र कुमार तनेजा, कुलपति चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के प्रति हार्दिक आभारी हूँ।

साथी सम्पादक मंडल एवं महाविद्यालय परिवार का पुनः पुनः धन्यवाद व्यक्त करती हूँ, जिनके समवेत सद्प्रयासों के परिणामस्वरूप पत्रिका की अपेक्षित गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सका। अपनी सृजनशीलता से आन्तरिक संस्कृति को मुखर रूप प्रदान करने वाली छात्राएँ साधुवाद की पात्र हैं।

ईश्वर से मेधा एवम् शुभता की कामना के साथ ज्ञानाञ्जलि का यह दशम् अंक आपके सम्मुख है –

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने, मेधाविनं कुरुस्वाहा।।

– डॉ० दीप्ति वाजपेयी
प्रधान सम्पादिका

गद्याञ्जलि

अज्ञेय के काव्य में शिल्प विधान

डॉ० [illegible]
असि० प्रो० [illegible]

वस्तु के साथ शिल्प का अविभाज्य सम्बन्ध है। संवेदन तत्वों को शिल्प ही रुपाकार प्रदान करता है। यद्यपि वस्तु क शिल्प का स्थानापन्न नही माना जा सकता तथापि अज्ञेय के अनुसार – 'वस्तु को शिल्प से अलग नहीं किया जा सकता किसी भी रचना का शिल्प और तन्त्र भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि वह वस्तु जिसका सम्प्रेषण होना है। विशिष्ट क अपने सम्प्रेषण के लिए विशिष्ट शिल्प की अपेक्षा रखती है। शिल्प–विरोधी प्रगतिवादी भी यह मानते हैं कि वस्तु और शिल्प के सामंजस्य से रचना अधिक प्रभावशाली बन जाती है। काव्य में शब्द के माध्यम से अर्थ का विधान होता है। शब्द विधान क सम्बन्ध शिल्प से है और अर्थ का वस्तु से। जिस प्रकार शब्द और अर्थ एक अविभाज्य बंधन में बंधे रहते हैं उसी प्रकार व सम्बन्ध शिल्प और वस्तु में होना चाहिए। अज्ञेय अपने 'रागदीप्त' सत्य को, अपनी अपनी अनुभूतियों का रुपाकार देने शिल्प के उपकरणों का बड़ी सावधानी से प्रयोग करते हैं। सिर्फ शिल्प के लिए, शिल्प की बात वे नहीं करते।

कवि अपनी अनुभूतियों को जिन माध्यमों से प्रस्तुत करता है, वे ही शिल्प के उपकरण कहे जाते हैं। इनकी संख अनगिनत हो सकती है। नए–नए माध्यमों की तलाश निरंतर जारी रहती है। कभी–कभी मौलिक संवेदन तत्वों को अभिव्यक्त करने के लिए शिल्प के नए उपकरण का भंडार निरंतर समृद्ध होता रहता है।

बिम्ब योजना

बिम्ब शब्द मानस–प्रतिमा का पर्याय है। जीवन और जगत् की अनुभूति हमें बाह्य संवेदनों से प्राप्त विभिन्न बिम्बों रुप में ही होती है। व्यक्ति–मानस एक ऐसा चित्र–फलक है, जहाँ बाह्य–परिवेश के सन्निकर्ष से निरंतर बिम्बों का ग्रह होता रहता है। हमारे चिन्तन के मूल में भी बिम्ब निहित होते हैं। चिंतन के समय हमारे मानस में अनेक स्मृतिजन्य त स्वरचित बिम्ब उभरते तथा विलीन होते रहते हैं। इनमें से स्मृतिजन्य बिम्ब तो पूर्वगामी अनुभूति के पुनरुत्पादन मात्र होते जबकि स्वरचित बिम्ब मौलिक होते हैं। काव्य में प्रायः कल्पना के योग से निर्मित स्वरचित बिम्बों का विशेष महत्व होता ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा ग्रहण किये गये ऐन्द्रिय बिम्बों को भी भाषा में रुपान्तरित करते समय कवि–गण उन्हें अपनी कल्पना तूलिका से रंग कर नया बना देते हैं।

काव्य में बिम्बों के प्रयोग का इतना अधिक महत्व है कि इनके आधार पर कवि के व्यक्तित्व तक का मूल्यांकन कि जाने लगा है। कुछ आलोचक तो बिम्ब–विधायनि भाषा को ही कविता मानने लगे हैं। नयी कविता अपने विकास क्रम में द दौर से भी गुजरी है जब कविता के नाम पर बिम्बों की मांग की जाती थी। खास कर ऐसे बिम्ब जो पाठकों में एक ऐ मानस– प्रतिमा के निर्माण में सक्षम हों जो उनके अनुभवों से जुड़कर विशेष अर्थ व्यंजित करने लग जायें अथवा जो उ निजी सौन्दर्य के अतिरिक्त प्रतीकार्थ भी रखते हों, एक अच्छी कविता के घटक तत्व बन सकते हैं। अज्ञेय ने बिम्बों को प्रा अपनी भाषा में मूर्तीकरण की क्षमता बढ़ाने, चिंतन को अधिक प्रेषणीय बनाने, वस्तु को अधिक ग्राह्य एवं स्पष्ट करने, प्रतीक से युक्त का सत्यान्वेषण में सहायक बनाने आदि के लिए किया है।

अज्ञेय के आरंभिक काव्यों में बिम्बों की उतनी बहुलता नहीं है जितनी **'हरी घास पर क्षण भर'** एवं परवर्ती काव्य बिम्ब–चित्रण की कुशलता क्रमशः कवि में बढ़ती गई है। किंतु इसका यह अभिप्राय नहीं कि पूर्ववर्ती काव्यों में सश बिंब–चित्रण के उदाहरण नही मिलते हैं। पूर्ववर्ती रचनाओं में भी अनेक स्थलों पर सफल बिम्ब–चित्रण के उदाहरण जाते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है :

"बादलों का हाशिया है आसपास
बीच कूजों की डार, कि
लिखी पाँत काली बिजली की
आषाढ़ की निसानी।'

जो पंक्तियाँ उदाहरण रुप में यहाँ उद्धत की गयी हैं उनकी मार्मिकता एक विशेष सन्दर्भ में है।

'हरी घास पर क्षण भर' एवं परवर्ती रचनाओं में बिम्बों की बहुलता के साथ विविधता का प्रवेश भी होता है। साध्य एवं साधन रुप में बिम्बों के प्रयोग के अतिरिक्त मानवीय संवेदना के सभी केन्द्रों को छूने वाले बिम्बों का चित्रण कवि ने किया है। विषय की दृष्टि से भी विविधता आई है। ऐन्द्रिय–बिम्बों के अतिरिक्त प्राकृतिक, पौराणिक, वैज्ञानिक प्रगतिसूचक, मनोवैज्ञानिक, प्रतीक समन्वित आदि बिम्बों की अवतारणा उनके काव्य में हुई है। ऐन्द्रिय–बिम्बों के घेरे में न आने वाले अनुभव, दर्द, जीवन–सत्य आदि को रुपायित करने वाले, खंडित तथा विरोधाभास पर आधृत, रहस्य संकेतित करने वाले, विभिन्न मनोभावों को उद्दीप्त करने वाले आदि विभिन्न प्रकार के बिम्बों के अंकन की प्रवृत्ति परवर्ती रचनाओं में बढ़ी है। "अरी ओ करुणा प्रभामय' में तो अनेक कविताएँ बिम्बात्मक ही हैं। गति की दृष्टि से गत्यात्मक एवं स्थिर, स्पर्श पर आधृत कोमल एवं कठोर, आकार के आधार पर विराट एवं लघु आदि अनेक प्रकार के बिम्ब अज्ञेय के काव्य में प्रायः सर्वत्र विद्यमान हैं। 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ', 'सागर मुद्रा' तथा 'पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ' काव्य संकलन की कविताओं के बिम्बों में भावों एवं विचारों को उद्‌बुद्ध करने की शक्ति बढ़ी हुई प्रतीत होती है। चेतना की विभिन्न स्थितियों, काल के विविध रुपों, देश और काल के संश्लेषण से युक्त, अचेतन सत्ता पर चेतना के आरोप से निर्मित अनेक विशिष्ट बिम्ब इन रचनाओं में आये हैं। अज्ञेय द्वारा चित्रित प्रमुख बिम्ब रुपों का विवेचन, यहाँ संक्षेप में किया जा रहा है।

साध्य और साधन रुप

अज्ञेय ने साध्य रुप में बिम्बों का प्रयोग प्रायः कम ही किया है फिर भी अनेक कविताओं में उनका लक्ष्य एक बिम्ब प्रस्तुत कर देना भर प्रतीत होता है। जापानी मुक्तक 'हाइकू' से प्रभावित प्रायः समस्त कविताओं में एवं अनेक दूसरी प्रकृति संबंधी कविताओं में ऐसी स्थिति देखी जा सकती है। यह बात और है कि कवि उन बिम्बों का प्रस्तुतीकरण इस तरह करता है कि उससे हमारे विचार–केन्द्र झंकृत हो उठते हैं। साध्य रुप में बिम्बांकन का एक उदाहरण है, 'शरत पूर्णिमा' कविता। कवि इन पंक्तियों में 'शरत पूर्णिमा' को रुपायित करता है :

चाँद चितेरा
आँक रहा है शारद नभ में
एक चीड़ का खाका।'

यहाँ कवि का मूल उद्देश्य शरत पूर्णिमा का बिम्ब प्रस्तुत करना है। यह किसी विचार को हमारे सामने प्रस्तुत नहीं करना चाहता। इस बिम्ब को प्रस्तुत करने में कल्पना का उपयोग हुआ है। शरत्–चन्द्रिका में एक चीड़ के खाके का दर्शन कवि कल्पना से ही करता है। पाठक अपनी ग्राहक कल्पना से यह समझ लेता है कि किस प्रकार आकाश सफेद बादलों के टुकडे से घिरा हुआ है। यहाँ ध्यान देने कि बात यह है कि यदि आकाश निरभ्र होता तो चितेरा चाँद 'चीड़ का खाका' नहीं बना पाता। इस प्रकार के चित्रों में कवि पाठक की कल्पना को उद्‌बुद्ध भर कर देना चाहता है। बिम्बात्मक कविता यदि कल्पना को उद्‌बुद्ध न करे तो उसे कविता मानना ही नहीं चाहिए। चिड़िया की कहानी, पूनो की साँझ, रात में गाँव, धूप, वसंत, पहाड़ीयात्रा, पगडंडी आदि छोटी कविताओं में बिम्ब का महत्त्व अपेक्षाकृत अधिक है।

'चिड़िया की कहानी' में बिम्बांकन इस प्रकार है कि पाठक अपनी कल्पना का सहज ही उपयोग कर सकता है। चित्र सिर्फ इतना है : 'उड़ गई चिड़िया / काँपी, फिर / थिर / हो गई पत्ती।' पाठक को कल्पना करनी पड़ती है कि पत्ती जो बाद में चिड़िया के उड़ जाने पर थिर हुई, वह पहले भी 'थिर' ही थी। चिड़िया के बैठते समय भी पत्ती काँपी होगी या बैठे होने तक काँपती रही होगी किंतु कवि को यहाँ तक की घटना मार्मिक नहीं लगी। इस चित्र का मार्मिक अंश चिड़िया के उड़ने से आरंभ होता है। चिड़िया के उड़ने के बाद पत्ती का काँपना और फिर थिर हो जाना इस बिम्ब को जीवन के सन्दर्भ में मार्मिक बना देता है। 'पूनो की साँझ' कविता में 'पति सेवारत साँझ, पराये चाँद को उचकता देखकर ललाकर ओट हो जाती है।" इस चित्र में भी पाठक लाज की लालिमा को क्षितिज पर गहराते देखकर विस्मय–विमुग्ध रह जाता है। इसी प्रकार 'रात में गाँव', 'धूप', 'वसंत', 'पहाड़ी यात्रा', 'पगडंडी' आदि कविताओं में बिम्बों का प्रस्तुतीकरण ही प्रधान है। पहाड़ी यात्रा का चित्र देखिये –

मेरे घोड़े की टाप
चौखटा जड़ती जाती है
आगे के नदी व्योम, घाटी पर्वत के आरा-पारा
मैं एक चित्र में
लिखा गया-सा आगे बढ़ता जाता हूँ।'

यहाँ भी पहाड़ी यात्रा का बिम्बांकन ही कवि का लक्ष्य है किंतु कल्पना के उपयोग से उसने यात्री को चित्र में 'लिखा हुआ-सा' बना दिया है।

बिम्बों का साधन रूप में उपयोग ही अज्ञेय के बिम्बांकन का असली रूप है। बिम्ब, प्रतीक आदि वस्तुतः भावाभिव्यक्ति के साधन ही हैं। अज्ञेय ने भी मूलतः बिम्बों का प्रयोग साधन रूप में ही किया है। प्रकृति-संबंधी कतिपय छोटी कविताओं को छोड़ दें तो शेष कविताओं के बिम्ब साधन रूप में बिम्ब के ही उदाहरण कहे जायेंगे।

प्रकृति के बिम्ब

किसी भाव या विचार की पृष्ठभूमि में प्रकृति के नाना रूपों के बिम्ब अज्ञेय के काव्य में आए हैं। अनेक कविताएं प्रकृति के खंड एवं विशृंखल बिम्बों से युक्त हैं। आकाश, क्षितिज, सूर्य, चन्द्र, तारे, बादल, इन्द्रधनुष, वन, पर्वत, नदी, सागर, के खलिहान, दलदल, तट, आँगन, द्वार, सरोवर, झील, धूप, किरण, शैवाल, आदि प्रकृति के अनेक रूपों के खण्डचित्र अज्ञेय के काव्य में देखे जा सकते हैं। ऋतुराज की प्राकृतिक सुषमा का एक बिम्ब देखिये :

शिशिर ने पहन लिया वसन्त का दुकूल
गन्धवह उड़ रहा पराग-धूल झूल,
काँटों का किरीट धारे बने देवदूत
पीत-वसन दमक उठे तिरस्कृत बबूल।

ऋतुराज ने वसंत का दुकूल पहन लिया तथा वायु पराग लेकर उड़ने लगी, यहाँ तक कोई विशेष बात नहीं कि तिरस्कृत बबूल भी पीले वस्त्रों में दमक उठा, काँटे उसके लिए मुकुट के सामान बन गय; इससे अवश्य ही ऋतुराज की महिमा प्रकट हो गई। अन्य ऋतुओं से ऋतुराज की श्रेष्ठता के निरुपण के लिए यही एक संकेत काफी है। जब उसके प्रभाव से तिरस्कृत बबूल भी देवदूत बन उठता है तो औरों का क्या कहना। इसी प्रकार कवि ने शरद, वर्षा, हेमन्त आदि ऋतुओं के भी बिम्बांकन किया है।

प्रकृति के बिम्ब कहीं अलंकृत हैं, कहीं मानवीकृत तथा कही प्रकृति पर चेतना का आरोप कर उसे चेतन-सत्ता के रूप में अंकित किया गया है। 'ऋतुराज' कविता में प्रकृति का मानवीकृत रूप ध्यान देने लायक है। एक स्थल पर सूर्य में कुरर पक्षी का आरोप कर कवि ने संध्याकालीन धूप का बहुत ही प्रभावशाली रुपाकन किया है :

सूप-सूप भर
धूप-कनक
यह सूने नभ में गयी बिखर :
चौंधाया
बीन रहा है
उसे अकेला एक कुरर।

सूप में भरकर धूप-रुपी कनक का नभ-रुपी आँगन में बिखेरा जाना तथा सूर्य-रुपी अकेले कुरर पक्षी का उसे बीन जाना संध्याकालीन प्रकृति का एक चेतन बिम्ब उपस्थित कर देते हैं। धूप पर कनक के आरोप से स्वर्ण अथवा गेहूँ के रंग का रुपक ही नहीं सधता धूप की पीली पड़ती छवि भी आँखों के सामने आ जाती है। इसी तरह 'बीन रहा है उसे अकेला एक कुरर' से सूर्य के द्वारा धूप-रुपी दानों का चुनना ही निरुपित नहीं होता, क्रमशः धूप के विलीन होने और संध्या बेला के गहराने का संकेत भी मिलता है।

प्रकृति के विविध पुष्प, पेड़, पौधे, पशु-पक्षी, छोटे जीव-जन्तु आदि के बिम्ब भी अज्ञेय के काव्य में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। फूलों में – रजनीगंधा, कचनार, मालती, टेसू, शेफाली, बुरुंस, गुलाब, कुँई, चंपा, जूही, नलिनी, गुडहल, पलाश,

आदि; पेड़ पौधों में बबूल, पीपल, झाऊ, रोमर, बकुल, नरसल, चीड़ आदि, पक्षियों में – काक, बुलबुल, श्यामा, दहगल, फूलसुंघनी, हंस, टिटहरी, चातक, सारस, मोर आदि, पशुओं में – कुत्ता, गधा, जागर, मृग आदि, छोटे जीवों में – साँप, केंचुए, दादुर, घोंघे, भुनगे, मछली आदि अज्ञेय के काव्य में प्रकृति के बिम्ब के रुप में आये हैं।

प्राकृतिक क्रिया-व्यापार-भोर, दोपहर, साँझ, रात आदि के घटित होने तथा सूर्योदय, सूर्यास्त आदि के बिम्ब भी अनेक स्थलों पर अज्ञेय के काव्य में दृष्टिगत होते हैं। सूर्यास्त का एक आलंकारिक एवं भावपूर्ण चित्रांकन दृष्टव्य है :

यह सूरज का जपा फूल
नैवेद्य चढ़ चला
सागर-हाथों
अम्बा तिमिरमयी को :
रुको साँस भर,
फिर मैं यह पूजा-क्षण
तुमको दे दूँगा।'

सूर्यास्त प्रतिदिन घटने वाली एक साधारण घटना है किन्तु कवि ने इसके रुपांकन पर पूजा-क्षण का आरोप कर इसे अपनी भावना से रंजित कर दिया है। मानो सूर्यास्त की घटना अपने आप में एक पूजा की घटना हो, जिसमें सूरज रुपी जपा फूल सागर हाथों नैवेद्य रुप में अंबा तिमिरमयी को अर्पित कर दिया जाता है। सागर के किनारे सूर्यास्त का यह बिम्ब साधारण प्राकृतिक घटना को निश्चय ही चमत्कारपूर्ण बना देता है। इसी प्रकार 'भादों की उमस', माघ, फागुन, चैत, 'बदली की साँझ' 'वीर बहू' 'वसंत गीत' 'हरी घास पर क्षण भर', 'उषा के समय', 'रजनीगंधा', 'पावस प्रात, शिलङ', 'वैशाख की आँधी' दूर्वाचल, चक्रांत शिला, 'महानगर कुहरा', 'सागर-मुद्रा', 'नंदादेवी' आदि अनगिनत कविताओं में किसी न किसी रुप में प्रकृति के बिम्बों की उपस्थिति देखी जा सकती है।

ऐन्द्रिय बिम्ब

रुप-रंग, ध्वनि, गंध, स्पर्श और रस से संबंधित बिम्बों का अज्ञेय ने संश्लिष्ट प्रयोग किया है। नेत्र से रुप और रंग का बोध होता है। कवि ने अनेक वर्णयुक्त रुपाकारों का अंकन किया है। लाल, नीला, उजला, काला, पीला, हरा, रुपहला, भूरा, धूसर, आदि वर्णों से युक्त बिम्ब अनेक स्थलों पर आये हैं। रंग-संवेदना की दृष्टि से संभवतः अज्ञेय को लाल रंग सर्वाधिक प्रिय है। इसके विभिन्न शेड्स का चित्रण दृष्टव्य है :

(1) और ऊषा की धुंधली-सी
अरुणाली थी सारा जग सींचे
(2) भाल पर धरे लाल आग
(3) लाल अंगारे से डह डह इस
पंचमुख गुडहल के फूल को
(4) उजली लालिम मालती
गंध के डोरे डालती
(5) बदन घाम से लाल
(6) फूल अनोखा अग्निशिखा के रंग का सूरजमुखी
(7) मद्धिम लालिमा ढरकी अलक्षित
(8) अटपटी लाली ऊषा की हुई प्रगल्भ विभोर

इन प्रयोगों में लाल रंग एक ही प्रकार के लाल रंग का द्योतन नहीं करता – डह डह अंगारे के समान लाल रंग से ऊषा की धुँधली सी अरुणाली भिन्न है। इसी प्रकार उजलापन लिये हुए मालती की ललिमा घाम से लाल हुए बदन की लाली से भिन्न है।

अन्य रंगों का प्रयोग भी कवि ने विभिन्न शेड्स में किया है। 'चांदनी सित', 'शुभ्र अभ्र खण्ड', गोरी-चमक बालू की', 'धवल केश कुंचित मुख', 'धुँधला उजला पछी', 'अप्रत्याशित उजला दिपती धूप भरा उत्तर वासंती दिन,' उजली कपासी धूम डोरियाँ' आदि में उजले रंग के विविध रुप अंकित हुए हैं।

चिकनी काली स्पटन', 'काले घोल की–सी रात', 'बीहड़ काली एक शिला', 'नंगी काली डाली पर', धुएँ का शोर आदि प्रयोगों में काले रंग का विविध रुप चित्रित है। एक ही कविता में अनेक रंगो का अंकन दृष्टव्य है :

गेहूँ की हरी बालियों में से
कभी राई की उजली,
कभी सरसों की पीली फूल–ज्योत्स्ना दिप गई
कभी लाली पोस्ते की सहसा चौंका गई –
कभी लघु नीलिमा तीसी की चमकी और छिप गई।'

अज्ञेय के रंग–प्रयोग की विशेषता यह है कि उन्हें रंगों की बारीकियों का ज्ञान है तथा वे इसके अभिश्रित एवं [illegible] रुपो का प्रयोग करते हैं। उनके संश्लिष्ट रंग–प्रयोगों की अनेक विशेषताएं हैं। रंग–संवेदना के द्वारा उन्होंने रुप को [illegible] नही दिया है बल्कि इसके माध्यम से वे कभी भावना के स्वरुप को व्यक्त करना चाहते हैं, कभी इसका उपयोग प्रतीक के [illegible] में करते है। इसके अतिरिक्त चित्र को अधिक प्रखर बनाने के लिए रंग–संवेदना को अंकित किया गया है।

ध्वनि–बिम्बों की दृष्टि से अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' कविता का विशेष महत्व है। इस कविता में अनेक बिम्बों [illegible] सफल प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिये– अन्न की सौंधी खुदबुद, नयी वधू की सहमी–सी पायल ध्वनि, शिशु की किलकारी मछली की तडपन, चहक चिडिया की, ताल युक्त घण्टाध्वनि, नौका पर लहरों की अविराम थपक, बहते जल की घुल–घुल सझा गोधूलि की लघु दुन–दुन, प्रलय का डमरु नाद आदि। दूसरे स्थलों पर भी अनेक ध्वनि–बिम्ब ध्यानाकर्षक है जैसे चट–चट–चट कर सहमा हिम खण्ड का।

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि अज्ञेय बिम्ब योजना में अत्यन्त कुशल हैं। अनेक बिम्बों में विविधता एवं नवीनता है। उन पर कवि की भावानुभूतियों का गहरा रंग चढा हुआ है। जिस प्रकार चित्रकार कुछ ही रेखाओं में रेखाकृति को स्पष्ट कर देता है उसी प्रकार अज्ञेय थोडे से शब्दों में वांछित बिम्ब गढ लेते हैं। रुपाकार में निराकार भावों को प्रतिष्ठित करना तथा निराकार को आकार देना उनके बिम्ब विधान की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है।

'उडने में बुराई नहीं है, आप भी उड़े
लेकिन उतना ही जहाँ से जमीन साफ दिखाई दें'।

हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का योगदान

डा० किशोर कुमार
एसो० प्रोफेसर - (हिन्दी विभाग)

सूचना एवं प्रौद्योगिकी हमारे जीवन, शिक्षण, शोध, स्वाध्याय एवं प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है। वैश्वीकरण के युग में दुनिया से जुडना और अपना अस्तित्व बचाना एक अपरिहार्यता है, और चुनौती भी। हिंदी साहित्य और उसके प्रणेताओं ने इस चुनौती को स्वीकार कर अपने अस्तित्व को एक नई सशक्त पहचान दी है। यह पहचान और सशक्त और विश्वसनीय बने इस हेतु अधिक प्रयास किये जाने आवश्यकता है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य अपनी समस्त विधाओं के माध्यम से सामाजिक संवेदनाओं एवं विसंगतियों दोनों को, सर्वोच्च सत्य के माध्यम से अभिव्यक्ति करने में सक्षम है, वही प्रौद्योगिकी पारदर्शिता एवं जवाबदेही से सर्वोच्च सत्य को तीव्रता और शीघ्रता से अधिकतम जनसमूह तक पहुँचाने का माध्यम है। अतः जब प्राणयुक्त कला, साहित्य, भाषा, एक उपकरण सूचना एवं प्रौद्योगिकी में समन्वय बनाते हैं तो यह संयोग साहित्य को एक नवीन आयाम की ओर अग्रसर करता है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी से जुडते ही साहित्य एव साहित्यकार के क्षेत्र का विस्तार हो जाता है, यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि तकनीक यहाँ एक मात्र एक उपकरण है जो पाठकों, श्रोताओं आदि के सम्बन्ध में साहित्य के क्षेत्र का विस्तार करती है। साहित्य का स्तर साहित्यकार की रचनात्मकता, उसकी वैश्विक तथा मानवतावादी मनोदशा पर निर्भर करता है तकनीक पर नहीं। अतः तकनीक उपकरण है लक्ष्य नहीं। लक्ष्य है–श्रेष्ठ हिंदी साहित्य के माध्यम से अधिकाधिक जनसामान्य के जीवन को सकारात्मकता के साथ व्यापकता की ओर अग्रसर करना। साहित्यकारों एवं साहित्य को समर्पित वेबसाइट, ब्लॉग, फेसबुक एकाउंट्स एंड पेजेज, अन्य सोशल बेबसाइट, ई–मेल, ई–बुक्स, ई–कंटेंट्स, पीडीएफ एंड डाक्यूमेंट्स फॉर्मेट में उपलब्ध अनंत हिंदी साहित्य आज हमारे जीवन का हिस्सा हैं। यहाँ उसकी विश्वसनीयता की जाँच हमारे विवेक और तकनीक के सही प्रयोग पर निर्भर करती है।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी का एक बडा योगदान इसका लोकतान्त्रिक स्वरुप होना है। यह तकनीक प्रत्येक साहित्यकार एवं उसकी रचना को समान अवसर प्रदान करती है। यहाँ प्रख्यात साहित्यकार की सामान्य रचना और लोकप्रियता की ओर अग्रसर युवक लेखक और कवि की रचना यथासंभव न्यायसंगत स्थान प्राप्त करती है। प्रासंगिक होना यहाँ ज्यादा बडी चुनौती है, क्योंकि साहित्यवादों के साथ–साथ प्रत्येक पाठक और श्रोता आपका विशेषण करता है ओर प्रायः टिप्पणी भी करता है।

संक्षेपतः साहित्य का वैश्विक विस्तार, साहित्यकार के विचारों का अधिकतम प्रसार, समान अवसर, समालोचनात्मकता तथा चहुँमुखी विचार–प्रवाह से साहित्य एवं साहित्यकार का परिमार्जन इत्यादि अनेकानेक तथ्य हिंदी साहित्य की विकास यात्रा में सूचना एवं प्रौद्योगिकी के योगदान को परिलक्षित करते हैं।

'कला केवल यथार्थ की नकल का काम नहीं है कला दिखती तो यथार्थ है,
पर यथार्थ होती नही है। उसकी खूबी यही है कि वह यथार्थ मालूम हो।

मुंशी प्रेमचन्द

प्रयोजन मूलक भाषा एवं उसके प्रकारः एक अध्ययन

पु. संजय
एम.पु. हिन्दी वि.

प्रयोजन मूलक भाषा अंग्रेजी Functional Language का हिन्दी रुपान्तरण है। इससे तात्पर्य एक ऐसी भाषा से जो विभिन्न प्रयोजनो मे प्रयुक्त होकर कार्य सिद्ध करती है। प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान, उद्योग विधि, संचार अर्थात् राजनीति, शोधकार्य, शिक्षण कार्य आदि समस्त क्षेत्रो मे प्रयुक्त होकर तथा भौतिक चिन्तन एवं अभिव्यक्ति के स्तर पर द्वारा अपनी सार्थकता तथा अर्थवत्ता को सिद्ध करती है। जो भाषा जितने अधिक से अधिक क्षेत्रों में प्रवेश कर, जितने प्रयोजनो को सिद्ध करती है, वह उतनी ही अधिक प्रयोजनशील सिद्ध कहलाती है।

जिस प्रकार नदी अपने मार्ग अवरोधको को नष्ट करती हुई नित्य नवीन धाराओं में विभक्त होकर अपनी उर्वरा द्वारा विभिन्न प्रदेशों का सिंचन कर सार्थक होती है वैसे ही प्रयोजन मूलक भाषा भी ज्ञानविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश होती हुई अपनी अर्थवत्ता मे अवसरानुकूल नित्य वृद्धि करती जाती है।

हिन्दी भाषा के प्रयोजनमूलक हिन्दी अध्ययन के अन्तर्गत कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी व्यवसाय उपयोग मे आने वाली हिन्दी अनुवाद तथा जनसंचार आदि विभिन्न क्षेत्रों की भाषा का अध्ययन किया जाता है। हिन्दी विभिन्न रुपो मे सृजनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, एवं मातृभाषा, प्रमुख है। जिनका पृथक-पृथक अध्ययन आगे किया जाता है।

सृजनात्क भाषा :– सृजनात्मक भाषा से तात्पर्य किसी भाषा से किसी भाषा की साहित्यिक उपलब्धियों से है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि हिन्दी एक अत्यधिक समर्थ एवं सशक्त भाषा है। आदिकालीन साहित्य से ही हिन्दी भाषा साहित्य एक समृद्ध परम्परा रही है। आरम्भ में यह भाषा काव्य के माध्यम से भावाभिव्यक्ति करती थी लेकिन आधुनिक काल इसका केवल स्वरुपगत विकास नहीं हुआ अपितु इसने काव्य के क्षेत्र में निकलकर सशक्त गद्य को अपनाया और विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे काव्य, नाटक, कथा–साहित्य, आलोचना, यात्रावृत्त, संस्मरण में प्रवेश कर अपने को विकसित किया। अतः सृजनात्मक भाषा के रुप मे हिन्दी एक सशक्त भाषा है, इसमें सन्देह नहीं।

संचार विधि :– सचार से तात्पर्य विभिन्न सूचनायें देने वाला अथवा मनोरंजन करने वाला है। हिन्दी विभिन्न संचार माध्यमों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। यह स्पष्ट है रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट सभी पर हिन्दी की पहुँच संचार माध्यमों मे होने वाले भाषा सम्बन्धी परिवर्तनों से मिलता है कि हिन्दी की बनावट एवं क्षमता में निरन्तर विकास है। यह विकास एवं परिवर्तन सामाजिक जागरुकता का तथा नवीन संचार माध्यमों को तेज रफ्तार का परिणाम है। आज हिन्दी पत्रकारिता केवल संचार वितरण का कार्य नहीं करती अपितु उसमें अपनी एक मौलिकता समझ भी विद्यमान जनखर्च को लक्ष्य कर बनती सवरती हिन्दी संचार के प्रतिस्पर्धा संसार में पत्रकारिता को विविधता व्यावहारि प्रयोजनिकता आदि के नए अनुभव लगातार दे रही है।'' मात्र समाचार–पत्रों में ही नहीं अपितु रेडियो, टेलीविजन की भाषा समसामयिक सन्दर्भो से नित्य नवीन शब्दावली गृहण कर अधिकाधिक समर्थ एवं सक्षम होती जा रही है।

राजभाषा – हिन्दी में 'राजभाषा' शब्द अंग्रेजी के ऑफिशियल लैंग्वेज के रुपान्तरण के रुपों में प्रयोग होता है। राज का पारिभाषिक अर्थ है – 'सरकारी राजकाज के लिए प्रयुक्त भाषा।

भारतीय संविधान के निर्माण से पूर्व राजभाषा राज्य–भाषा एवं राष्ट्र भाषा को विद्वानों द्वारा प्रायः एक ही मान लिया जाता जो अनुचित था। वास्तविकता यह है कि राजभाषा राष्ट्रभाषा को विद्वानों द्वारा यह है कि राजभाषा, राष्ट्रभाषा राज्यभाषा मे सूक्ष्म होते हुए भी स्पष्ट अन्तर है। 'राजभाषा' वह भाषा होती है। जिससे सरकारी कामकाज हेतु कानून सम्पर्क हेतु स्वतः ही प्रयोग में लाई जाती है। राज्यभाषा किसी प्रान्त विशेष की व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त तथा उस राज्य सरकारी काम काज हेतु कानून द्वारा मान्यता प्राप्त भाषा होती है। संघ के विधानांग कार्यांग तथा न्यायांग आदि तीनों अंगो के कार्य कलाप में प्रयुक्त भाषा से है। अर्थात – ''किसी भी प्रकार की सरकार के विधानांग, कार्यांग तथा न्याय कार्य–कलाप के लिए माध्यम के रुप में प्रयुक्त संवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषा ही राजभाषा कहलाती है।

राजभाषा की कुछ विशेषताएँ :-

1. राजभाषा को विधि द्वारा मान्यता प्राप्त होती है।
2. राजभाषा एक प्रयुक्ति के रुप मे प्रयुक्त होती है।
3. इसकी शब्दावली पारिभाषिक होती है।
4. इसका साहित्य सरकारी साहित्य कहलाता है।
5. राजभाषा सदैव शासन से जुड़ी रहती है।
6. किसी देश की राजभाषा राष्ट्रभाषा और राज्यभाषा भी हो सकती है जैसे – हिन्दी।
7. आवश्यक नहीं है कि देश की राजभाषा राष्ट्रभाषा भी हो।
8. किसी राष्ट्र में एक से अधिक राजभाषा विधि द्वारा मान्यता प्राप्त हो सकती है।
9. राजभाषा आलंकारिक न होकर नीरस एवं औपचारिक होती है।
10. राजभाषा की शब्दावली एकार्थक एवं निश्चित अर्थ वाली होती है।

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा के रुप में हिन्दी को स्वीकार किया गया और संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार निर्देश दिये गये कि भारतीय सामाजिक संस्कृति को अभिव्यक्ति देने वाली हिन्दी का पूर्ण विकास हो।

माध्यम भाषा :– माध्यम भाषा से तात्पर्य उस भाषा से होता है जो किसी भी समाज में शिक्षा, ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, प्रशासन और राजकाज के अंगो में अभिव्यक्ति का कार्य करती है। इस दृष्टि से हिन्दी अत्यधिक सशक्त एवं सूक्ष्म है किन्तु इन सभी क्षेत्रों में हिन्दी का रुप कार्य नहीं कर सकता, इसी कारण हिन्दी का रुप क्षेत्र एवं विषयानुरुप परिवर्तित होता रहता है। प्रत्येक प्रयोग क्षेत्र में हिन्दी की पृथक –पृथक प्रयुक्तियाँ मिलती हैं। हिन्दी का लक्ष्य भारतीय सामाजिक विकास के साथ–साथ संस्कृति प्रगति की दिशा में भी अग्रसर करना है। वह एक और व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों को वहन करने का माध्यम है तो दूसरी ओर शिक्षा, प्रशासन और राजकाज के सभी अंगों की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी केवल साहित्य का नहीं अपितु साहित्येवर प्रशासन, राजभाषा, संचार भाषा, कम्प्यूटर, इंटरनेट फिल्म एव पत्रकारिता का भी सशक्त माध्यम भाषा बन गई है।

मातृभाषा :– मातृभाषा से तात्पर्य उस भाषा से होता है जो हमें अपनी परम्परागत भाषा के रुप में प्राप्त होती है। अर्थात्, मातृभाषा माता की भाषा। इस दृष्टि से हिन्दी हिन्दुस्तान के अधिकांश क्षेत्र में बोली व समझी जाने वाली भाषा है और इसे मातृभाषा के पद पर स्थापित किया जाता है। उपर्युक्त रुपों के अतिरिक्त हिन्दी के भाषायी प्रयोगों की दृष्टि से नित्य नवीन रुप सामने आते जा रहे हैं। इन नवीन रुपों से वृद्धि द्वारा हिन्दी की अर्थकता, गुणवत्ता, प्रयोगधर्मिता एवं व्यायकता में वृद्धि हो रही है तथा यह वृद्धि हिन्दी के बहुआयामी विकास एवं उन्नति की द्योतक है।

बोलचाल की भाषा :– हिन्दी का सबसे सरल और सामान्य रुप उसका बोलचाल की भाषा है। घरों में रेलों, बसों में सडको पर बाजार में, मेंलो में, हिन्दी का जो रुप देखने को मिलता है, वह उसका बोलचाल का रुप है । घरों में तथा प्रान्तों में यह बोली रुप से भी दिखाई देती है। हिन्दी के इस रुप को उसकी शैलियां समृद्ध करती है तथा अहिन्दी–भाषी प्रदेशों में देश की अन्य भाषाओं का योगदान रहता है बोली उस स्थानीय और उस घरेलू बातचीत को कहते हैं। जो साहित्यिक नहीं होती, केवल बोलने वाले के मुख में ही रहती है। इसका क्षेत्र सीमित होता है। इस बोली को बोलने वालों में से ही जब कभी कोई

योग्य व्यक्ति इसे अपनी कविता की भाषा बना लेता है तो उसे साहित्य में प्रवेश मिल जाता है फिर भी इसकी सीमा क्षे प्रान्त तक ही रह जाती है। इस प्रकार यह समस्त प्रान्त की बोलचाल तथा साहित्यिक रचना की भाषा होती है। अप्रान्तीय भाषा या विभाषा भी कह देते हैं। ब्रज, अवधि, भोजपुरी, मैथली आदि हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ बोलचाल की का अच्छा उदाहरण है।

भाषा :– कई विभाषाओ मे प्रयुक्त होने वाली एक शिष्ट एवं परिगृहित विभाषा ही भाषा कहलाती है। यह भाषा प्रा भाषाओ पर अपना प्रभाव डालती है। विभाषायें अपने रुप की पूरी रक्षा करती है। विभाषाओं को अपने–अपने प्रान्त पर सिद्ध अधिकार होता है, परन्तु, कोई विभाषा किसी राजनैतिक, साहित्यिक, सामाजिक अथवा धार्मिक आन्दोलन से ही का पद प्राप्त करती है।

आजकल खड़ीबोली भाषा बनी हुई है। यह मेरठ, बिजनौर और दिल्ली के आसपास की भाषा थी पर राजनैतिक धार्मिक कारणो से इसको भाषा का पद मिला। मुसलमानों के दिल्लीश्वर होने से इसका प्रयोग बढ़ा दिल्ली के शासक– के लोग पूर्व की ओर बढते गए इसके साथ खड़ी बोली को शिष्ट समाज में बढ़ाने का अवसर मिला और फिर यह –बढते दिल्ली से लेकर कलकत्ता तक बढ़ते शिष्ट समाज के प्रयोग कि भाषा बन गई। उधर स्वामी दयानन्द ने भी इसे अपने धर्म प्रचार की भाषा बनाया।

संक्षेप मे कहा जा सकता है कि जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली सहज, सीधी और सरल भाषा ही जन कहलाती है। यह भाषा का नैसर्गिक रुप है, जिससे हर व्यक्ति अनायास अपने दायरे के माहौल से परीचित हो जाता है। दृष्टि से आम बोलचाल की हिन्दी को जन भाषा कहा जा सकता है। महामना मदनमोहन मालवीय जी ने कहा था कि, हि भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे सब भेदभाव छोड़कर प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

रोजगार परक भाषा

आदेश
बी.ए. द्वि

सरकार का लक्ष्य 2022 तक 50 करोड़ लोगों को रोजगार परक शिक्षा देने का है। क्या यह लक्ष्य देश के ग्र अँचल में मौजूद जीविका के सकट के समाधान से प्रेरित है और क्या यह लक्ष्य देश की श्रमशक्ति कि वास्तविक जरू मेल खाता है ?

रोजगार परक शिक्षा की जरुरतों के तहत नए शिक्षा आयोग के गठन की कवायद और इसी तर्क के तह मशहूर केन्द्रीय विद्यालय विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम मे किए गये बदलाव के बीच आई हाल की दो शोध–रिपो कहना है कि न तो पचास करोड लोगो को रोजगार परक शिक्षा देने का सरकारी लक्ष्य का वास्तविकता से मेल है बेरोजगारी दूर करने की प्राथमिकता की लिहाज इस लक्ष्य सही में उठा कदम माना जा सकता है।

गौरतलब है कि इन रिपोर्टों में से एक इन्स्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड मैनपावर रिसर्च (आईएएमआर) की है, जो आयोग के अधीन संचालित होता है आईएएमआर एस्टीमीटिंग द स्किल गैप ऑन रियलिस्टिक बेसिस फॉर 2022 अध्ययन ने कहा है कि सरकार ने ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के शुरुआती सालों में नेशनल पॉलिसी ऑन स्किल डेव के तहत 50 करोड लोगों को रोजगार के लिहाज से हुनरमन्द बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया जबकि साल 202 अधिकतम 29 करोड़ कुशल कामगारों की जरुरत होगी। अध्ययन में कहा गया है सरकारी लक्ष्य में जरुरत की तुल बढा चढाकर पेश किया गया है क्योंकि एक तो आकलन में "कौशल (स्किल कोई परिभाषा निर्धारित नहीं कि गयी है गैर खेती हर क्षेत्रों में कार्यरत श्रम शक्ति की संख्या का अनुमान सरकारी लक्ष्य में वास्तविकता से अधिक कर लिया और मान लिया गया है सभी खेती हर मजदूर एक न एक दिन "खेती–किसानी का काम छोड़ देंगे" अध्ययन के इ साल 2009–10 श्रम शक्ति का फीसदी हिस्सा (24 करोड़ 40 लाख) खेती किसानी पर निर्भर था और साल 202 मौजूदा चलन को देखते हुए जीविका के लिए खेती किसानी पर निर्भर लोगों की संख्या हद से ज्यादा घटने के बावजू

से कम 19 करोड़ रहेगी जो कि कुल श्रम शक्ति का 33 वीं फीसदी हिस्सा होगा अध्ययन मे एक कदम आगे बढ़कर दलील यह दी गयी है कि खेती किसानी के काम को अकुशल श्रम नहीं कहा जा सकता क्योंकि सदियों से ये लोग किसान के रुप मे अपना काम कुशलतापूर्वक करते आये हैं और जब खेती–किसानी के काम को छोड़कर गैर–खेतीहर काम की ओर कदम बढ़ाते है तब ही उन्हे अकुशल कहा जा सकता है।

अर्थव्यवस्था की गति को बनाये रखने के लिए कुशल श्रम की जरुरतों को पूरा करने के लिए लिहाज से सरकार के द्वारा उठाये गये कदमों की आलोचना करते हुए दूसरे शोध अध्ययन शॉर्टेज ऑफ स्किल्ड वर्कर्स–अ पैराडाक्स ऑफ इंडियन इकॉनामी में कहा गया है कि भारत में दी जा रही रोजगारपरक शिक्षा की अर्थव्यवस्था की वास्तविकता से मेल नही है क्योंकि भारत में श्रमशक्ति का 90 फीसदी हिस्सा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है और गरीब दिहाड़ी मजदूरी की है जो ग्रामीण क्षेत्रों में जीविका की खोज में शहर चले आते हैं।

इस तादाद को नए रोजगार के लिए सबसे कौशल की सबसे ज्यादा जरुरत होती है जबकि रोजगारपरक प्रशिक्षण की मौजूदा व्यवस्था उनके विरुद्ध काम करती है। कौशल अर्जित करने के किसी भी कार्यक्रम से जुड़ने के लिए किसी व्यक्ति का कम से कम आठवीं जमात पास होना जरुरी है और ऐसी व्यवस्था अपनी बनावट के कारण ज्यादातर जरुरतमंदों को नामांकन की शुरुआती प्रक्रिया से शामिल होने से पहले ही बाहर कर देती है।

गौरतलब है कि भरारत की कुल श्रमशक्ति में 59 साल की आयु–वर्ग के लोगों की संख्या 43 करोड 10 लाख है और इसमें 12 करोड़ 60 लाख (29 फीसदी) रोजगारपरक शिक्षा तो दूर की बात है, कायदे से साक्षरी ही नहीं है। देश की श्रमशक्ति में 24 फीसदी (10 करोड़ 20 लाख) प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है या फिर उससे भी कम (विस्तार के लिए देखें एनएसएसओ की रिपोर्ट) देश की श्रमशक्ति (15–59 साल के आयुवर्ग के लोग) में रोजगारपरक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले या कर रहे लोगों की संख्या साल 2009–10 में मात्र 4 करोड़ 30 लाख थी यानि श्रमशक्ति के मात्र 10 फीसदी हिस्से को ही रोजगारपरक कौशल 10 हासिल था।

लोक–वार्ता और लोक संस्कृति

नेहा
एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

अंग्रेजी के 'फोर लोर' शब्द के लिए समुचित हिन्दी शब्द को स्वीकार करने में विद्वानों में मतभेद रहा है। कुछ विद्वानों ने 'फोक–लोर' का पर्याय 'लोक–वार्ता स्वीकारते हैं तो कुछ अन्य 'लोक–संस्कृति को, यद्यपि दोनों शब्दों का आंतरिक भाव लगभग एक है, मात्र शब्दों का हेर फेर है। कुछ विद्वानों 'लोक–वार्ता' शब्दों को 'लोक–संस्कृति' की अपेक्षा अधिक विस्तृत मानते हैं तो कुछ इसके विरोधी हैं। इन्साइक्लोपीड़िया ऑफ ब्रिटानिका में सभी प्राचीन विश्वासों, प्रथाओं और परम्पराओं का सम्पूर्ण योग जो सभ्य समाज के अल्पशिक्षित लोगों के बीच आदिकाल से आज तक प्रचलित है, उसे 'फोक लोर' कहा गया है। इसकी परिधि में परियों की कहानियाँ, लोकानुभूतियाँ, पुराणगाथाएँ , लोकगीत, प्रचलित कहावतें, कला कौशल तथा ऐसी अन्य सभी बातें सम्मिलित की जा सकती हैं।

'लोक–संस्कृति' शब्द को स्वीकार करने में डॉ० उपाध्याय ने कुछ तर्क दिए हैं –

एक लोक – संस्कृति शब्द की व्यापकता, दो – चिरपरिचितता और तीसरा – डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी समर्थित किए जाने का यदि हम लोक–साहित्य का अध्ययन करना चाहते हैं तो हमें लोक – संस्कृति को अपनी दृष्टि के सम्मुख रखना पड़ेगा जिसके लोक–संस्कृति, लोक साहित्य के रुप में अपना परिचय अपने आप दे देगी।"

लोक–साहित्य में लोक–संस्कृति एवं लोक जीवन के विविध पक्षों का अनुशीलन हम निम्नलिखित प्रकार से भी कर सकते हैं।

सामान्य मानव जीवन

जब हम मानव के सामान्य जीवन की बात करते हैं तो उसके अन्तर्गत उस समाज की आवास व्यवस्था, राज्य विधान, वस्त्राभूषण एवं वाहनों आदि का उल्लेख सहज ही हो जाता है। किसी देश या प्रदेश की जनपदीय संस्कृ

अभिव्यक्ति उस स्थान के लोक-साहित्य से भली-भाँति हो जाती है। लोक-साहित्य उस दर्पण के समान है जि
प्रतिबिम्ब एकदम स्वच्छ व साफ दिखाई पड़ता है।

लोक-साहित्य मे वस्त्रो के माध्यम से भी लोक-संस्कृति के दर्शन होते हैं।

विभिन्न उत्सवो, संस्कारों आदि के अवसरों पर साफा या पगड़ी के रेशमी एवं तारकसी युक्त कारीगरी युक्त
से लेकर साधारण वर्ग के वस्त्रो में 'गजी', 'डोरिया, खासा वास्तविकता तो यह है कि 'फोक -लोर' के पर्याय के
'लोक-वार्ता' तथा 'लोक-संस्कृति' शब्द में से किसी का भी प्रयोग किया जाये, दोनों के आन्तरिक भाव एक होने मे
कोई विशेष अन्तर नहीं है।

लोक-संस्कृति और लोक-साहित्य

साहित्य अथवा लोक-साहित्य को यदि जन जीवन का दर्पण कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी। सामान्य
हृदय के उदगार ही कुछ समय पश्चात् साहित्य का रुप धारण कर लेते है।

भारतीय संस्कृति का सच्चा और स्वाभाविक चित्रण लोक साहित्य में प्राप्त होता है। इसी से लोक-साहित्य
लोक-संस्कृति अभिन्न हैं। लोक संस्कृति के वास्तविक स्वरुप को देखने के लिए हमें लोक-साहित्य का ही अध्य
करना होता है और यह पूर्ण सत्य है कि ग्राम या नगरों का ही नहीं अपितु किसी भी देश का साहित्य उस देश के निवा
के जीवन के अनेक पक्षों का प्रतिबिम्ब होता है ।

"साहित्य की परिभाषाओं की विवेचनाओं में न पडकर हम इस बात को मान लें कि साहित्य लोक-संस्कृ
आत्मा है और लोक-संस्कृति उसकी काया। यदि हम 'खासा, गाढा' आदि सामान्य एवं मोटे कपडों से निर्मित धोती
भी लोक-साहित्य में वर्णित किया गया है।

पहनने के वस्त्रों के अलावा ओढने-बिछाने के वस्त्रों में भी अभिजात्य और साधारण वर्ग के वस्त्रों में रेशम और
खादी के रूप में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। दरी-बिछौने, कालीन, जाजिम आदि वैवाहिक अवसरों पर काम आने
वस्त्रों का वर्णन भी लोक-साहित्य मे प्राप्त होता है।

आवास एवं भोज्य व्यवस्था तथा वस्त्राभूषण के पश्चात् लोक-साहित्य में श्रृंगार-प्रसाधनों का बड़ा विस्तृत वर्ण
इसके अतिरिक्त दाँतों में चोप लुकवाना, लीला गुदवाना, आदि ऐसे अतीत के बहुप्रचलित श्रृंगार प्रसाधन
लोक-साहित्य मे बहुत चर्चित है।

पारिवारिक जीवन का चित्रण

परिवार के संगठन, उसकी पारिवारिक शैली, उसकी समस्याओं एवं सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के इस
में पूर्ण मनोयोग के साथ उकेरा गया है।

पारिवारिक जीवन के सौमनस्य, ऐश्वर्य, निर्धनता कलेश आदि सभी स्थितियों का चित्रण लोक-साहित्य
है। इसमे जहाँ एक ओर आज्ञापालन पुत्र, सती-साध्वी पत्नी सेवारत पुत्र-वधू का आदर्श रूप है तो दूसरी ओर सा
ननद-भावज आदि कटुपूर्ण सम्बन्धो पर भी प्रकाश डाला है।

- पारिवारिक समस्याओं में 'न्यारे रहने' (अलग रहने) की नारी की प्रबल आकांक्षा
- 'सौतिया डाह'
- सोलह संस्कार
- अभिवादन स्वागत-सत्कार एवं
- पत्राचार विषयक शिष्टाचार
- आशीर्वचन आदि

सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा एवं प्रथाएँ

लोक-साहित्य में सामाजिक पक्ष का चित्रण भी बहुतायत से प्राप्त होता है जिसमें लोक-प्रचलित विश्व
मान्यताएँ एवं त्यौहार आदि पर विचार किया गया है।

इसके साथ ही जाति-व्यवस्था, लोक-प्रथाएँ, आश्रम-व्यवस्था आदि पर भी सविस्तार चर्चा की गई है। भारतीय संस्कृति की इस गौरवमयी परम्परा के विभिन्न रूपों को हम इस प्रकार श्रेणीबद्ध कर सकते है-

व्यापक प्रथाएँ :- इसमें सती प्रथा, सत्य की स्थापना हेतु शपथ प्रथा तथा नर-नारियों के विक्रय की दासा प्रथा आती है।

साधारण परम्परागत रीति-रिवाज :- इनमें कुआँ पूजन, चाक पूजन, विधवा होने पर चूड़ी-बिछुआ-बिंदी आदि आभूषणा का परित्याग आती हैं।

सामान्य अवसरों से सम्बद्ध परम्पराएँ :- करवाचौथ पर कन्या पक्ष की ओर से खांड के करवे भेजना, पुत्री या बहिन के यहाँ पुत्र उत्पन्न होने पर छोछक भेजना तथा विवाह के अवसर पर भात देना, परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु होने पर दूसरे सम्बन्धियों के यहाँ से 'हांडी भेजना', 'त्यौहार उठाना' आदि प्रमुख हैं।

लोक-विश्वास तथा मान्यताएँ :- लोक-विश्वास और मान्यताएँ लोक-संस्कृति के वे विधायक तत्व हैं जिन्हें सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। तंत्र-मंत्र-टोटका से शकुन-अपशकुन तक के लोक-विश्वासों को जन-जीवन में व्याप्ति रही है। इन्हें हम निम्न रूपों में प्रयुक्त हुआ देख सकते हैं-

अद्भुत जीवोत्पत्ति विषयक लोक-विश्वास :- इन लोक कथाओं में घड़े से कन्या का जन्म (सीता), कुशा (घास) से (लव-कुश) का जन्म आदि कथाएँ प्रचलित हैं।

पशु-पक्षी-वृक्ष आदि के बोलने के सम्बन्ध में लोक-विश्वास :- लोक-गीतों में स्वर्ण हंस या गरूड़ द्वारा दूध-पानी को पृथक करने का वर्णन है और हंस द्वारा संदेशवाहक बनकर प्रेमी-प्रेमिका (नल-दमयंती) के मिलाने का सफल प्रयास किया गया है।

लोक-विश्वास :- इन लोक-विश्वासों में शेषनाग या कछुए (कच्छप) की पीठ पर या गाय के सींगों पर पृथ्वी का टिका होना, लक्ष्मण द्वारा सीता को धरती में समाने से रोकने पर हाथों में रेखाओं का बनना, कजरी वन-बबरी वन की भयावहता, छठी के दिन भाग्य लेखन, भूत-प्रेतों से सम्बन्धित विश्वास। पुरूष की बायीं तथा स्त्री की दायीं आँख का फड़कना आदि असंख्य लोक-विश्वास है जिन्हें हम लोक-कथाओं व लोक-गाथाओं में देख सकते हैं।

कृषक जीवन की झांकी :- भारत खेतीहार देश है। अतः यहाँ की शस्यश्यामला भूमि में वरदान स्वरूप यहाँ का प्रत्येक क्षेत्र विपुल सम्पदाओं से भरा रहता है। इसी से यहाँ के लोक-साहित्य में खेती सम्बन्धी विस्तृत जानकारियाँ भरी हुई हैं। जैसे कृषक के अन्न भंडारगृह को 'खस, खत्ती या बुखारी' कहते हैं।

बड़े कमरे को 'दुकड़िया' या 'बैठक' बरामदे को 'दुआरी', बाबरे को अट्टा कहते हैं। लोक-साहित्य में ऐसी अनेको गाथाएँ हैं जिनमें कृषक जीवन और उसकी समृद्धि तथा पिछड़ेपन को बहुत ही सटीक तरह से व्याख्यायित किया गया है।

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पक्ष के बाद धार्मिक पक्ष को भी लोक-साहित्यकार ने अपनी पैनी नजरों से बचने नहीं दिया है। धर्म विषयक मान्यताएँ, मत-मतांतर, पूजा-पद्धतियाँ, भगवान के विविध रूपों की कल्पना जितनी लोक-साहित्य में जीवंत है उतनी तो शिष्ट साहित्य में भी नहीं है।

अंत में श्री कोमलसिंह सोलंकी का कथन इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है-

"साहित्य लोक-संस्कृति की आत्मा है तो लोक-संस्कृति उसकी काया।"

और इन उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह सुनिश्चित करने में सफल रहे हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है।

अपना-अपना कुरूक्षेत्र

कु. रुची विश्नो
एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

घर पहुँचकर भी वह तनावग्रस्त ही था। सिर में अत्यधिक दर्द हो रहा था। थोड़ी देर और ऐसा ही रहा तो सिर फट ही जायेगा, वह सिर पकडकर बैठ गया।

सुबह दफ्तर पहुँचते ही अधीनस्थ कर्मचारियों से काम को लेकर बहुत कहासुनी हो गयी। वह सुबह से ही बडबडा रहा था। "लगता है सबकी आत्मा मर गयी है। कोई काम ही नहीं करना चाहता। बस बैठे–बैठे ही तनख्वाह मिल जाये। जाने क्या होगा इस देश का।" जब वह अपने अफसर के पास पहुँचा तो उन्होंने निर्दोष हुये भी उसे ही निकम्मा सिद्ध कर दिया। उसका पारा ऊपर चढ गया। इतनी मेहनत व ईमानदारी से काम करने के बाद भी यह निराधार आरोप। उसे लगा वह चक्की के पाटारें के मध्य फंस गया है। अधीनस्थ काम करने को तैयार नहीं और अफसर कुछ सुनने को। वह पैर पटकते हुये अपने कमरे में आ गया।

तभी से उसके मस्तिष्क में तरह–तरह के ख्याल आ रहे हैं। क्या करे? नौकरी छोड़ दे, पर खायेगा क्या? गाँव जाकर जमीन पर खेती करने लगे, पर शहर में पले बच्चे वहाँ कैसे रहेंगे, क्या घर में सब साथ देंगे? शायद नहीं। और भी तो दोस्त हैं उनकी नौकरी कितनी अच्छी लगती है, पर उनकी भी कुछ समस्यायें बनी रहती हैं क्या करें? तभी उसे लगा उसका तनाव कम हो रहा है उसे एक कविता की पंक्ति याद आ गई–

"भाग कर कोई कहाँ जायेगा आखिर आज रण से।
जिन्दगी का युद्ध तो लडना ही पड़ेगा प्राण पण से।"

उसे लगा यह जिन्दगी रणभूमि है। सबका अपना–अपना कुरूक्षेत्र है। सभी को अपना युद्ध लडना पड़ता है। हमें अपनी समस्याएँ ज्यादा और दूसरों की कम लगती हैं। पर सभी की अपनी–अपनी समस्याएँ हैं। फिर हम क्यों मानें?

उसका तनाव कम हो गया। उसने अपने कुरूक्षेत्र में लड़ने की नये सिरे से तैयारी जो कर ली थी।

उत्साह और उमंग

जीवन में सफलता प्राप्त करने के सभी साधनों में 'उत्साह' का प्रमुख स्थान है। उत्साह के बिना उन्नति के किसी कार्य में आप सफल नहीं हो सकते या यों कहिए, उमंग का सहारा लेकर ही अपने परिश्रम का पूर्ण लाभ उठा सकते हैं। व्यक्ति के जीवन में अगर किसी कार्य को लेकर उत्साह और उमंग है तो उसके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है और जटिल से जटिल कार्य को भी सहजता से पूर्ण कर लेता है। कहते हैं उत्साह अथवा हौसला मनुष्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

"हौसला अगर तुम्हारे पास होगा,
तो वक्त एक दिन तुम्हारा दास होगा"

जीवन में आप कुछ भी करना चाहे–एकाग्रता का पाठ पढना चाहे अथवा अर्जित करना चाहे, सभी में उत्साह आपको क्रियाशील बनाता है वह आपको कार्यरत रखता है और उन्नति की ओर अग्रसर करता है। किन्तु यह उत्साह हमें नहीं बल्कि स्थायी होना चाहिए उत्साह बड़ा ही प्रेरणापद है, बिना उत्साह के बड़े–बडे प्रभावशाली तर्क–वितर्क भी हमें क्रियाशील नहीं बना सकते। किसी भी कार्य में अगर आप श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं अथवा पदोन्नति करके शिखर पहुँचना चाहते हैं, तो उसके लिए आपको हौसला या उत्साह उत्पन्न करना होगा कहते हैं बिना मेहनत और उत्साह के कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। इसके सम्बन्ध में निम्न पंक्तियाँ याद आती हैं–

जब टूटने लगे हौसले तो इतना याद रखना
बिना मेहनत के हासिल तख्तो–ताज नहीं होते।

ढूँढ लेते हैं अंधेरे में मंजिल अपनी
क्योंकि जुगनू रोशनी के मोहताज नहीं होते।

उत्साह को उत्पन्न करने और बढ़ाने के कितने ही नियम हैं। आप उन नियमों का पालन करने का प्रयत्न कीजिए सफलता सदैव आपकी दासी बनकर रहेगी। अपने विषय में विशेषज्ञ बनने का प्रयत्न कीजिए अगर आप विद्यार्थी हो तो अध्ययन, चिकित्सक हैं तो रोगियों, अपने–अपने कार्य में एकाकार हो जाइये। अपने विषय की गहराइयों में प्रवेश कीजिए तो उत्साह बढ़ता ही जाएगा। जैसे ही किसी विषय में आपका उत्साह कम होने लगे, उस विषय की सूक्ष्मताओं की खोज में लग जाइये जो भी कार्य कीजिए उसमें नया जीवन फूँक दीजिए।

सदा सर्वत्र आपके मुख पर आशा और उमंग की छाया होनी चाहिए। अपने सफलताओं पर निराश मत होईये। ये विफलताएँ ही सफलता का रास्ता खोल देती हैं। अपनी सफलताओं को और पूरे किए कार्यों के विषय में दूसरों से बातचीत कीजिए, परन्तु ध्यान रखिए कि अहंकार का भाव न आये अपने सौभाग्य के विषय में चुप परन्तु सावधान रहिए। आपका उत्साह दिन दूना रात चौगुना बढता जाएगा।

एक विद्यार्थी जो विद्याध्ययन करना केवल कर्त्तव्य मानता है वह एक साधारण नागरिक ही बन पाता है जबकि दूसरा विद्यार्थी यदि अपना कोर्स साहस और उत्साह के साथ करे तो वह महान बनने की योग्यता रखता है। उत्साह आपके कार्य को उस प्रसन्नता और सफलता में बदल देगा जिसकी आप बहुत दिनों से आशा लगाये बैठे थे। उत्साह ही सफलता का रहस्य है जो कि आपके गुणों में चार चाँद लगा देता है।

अन्तर्दृष्टि

कु. कंचन
एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

बैठने वाले का भाग्य भी बैठ जाता है और खड़े होने वाले का भाग्य भी खड़ा हो जाता है। इसी प्रकार सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है और जगने वाले पुरूष का भाग्य भी गतिशील हो जाता है इसीलिए चलो। **–वेद वाणी**

जैसे कभी छत में जल भरता है वैसे ही अज्ञानी के मन में कामनायें जमा होती है। **–गौतम बुद्ध**

अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की तरफ एक बड़ा कदम है। **–डिजरैली**

ज्ञानी अभिमानी होता है मानों उसने बहुत कुछ सीख लिया है। बुद्धि विनीत होती है मानों अभी वह कुछ जानती ही नहीं। **–काउपर**

किसी जरूरतमन्द की वक्त पर मदद करना इन्सानियत है। **–बेंजामिन**

यदि तुम भूलों को रोकने के लिए द्वार बन्द कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायेगा। **–रविन्द्र नाथ ठाकुर**

सोई हुई आत्मा को जगाने के लिए भूलें एक प्रकार के दैविक मंत्रणायें हैं जो हमें सदा के लिए सतर्क कर देती हैं। **–प्रेम चन्द**

दूसरों की भूलों से बुद्धिमान लोग अपनी भूल सुधारते हैं। **–साइरस**

यदि मनुष्य सीखना चाहें तो उसकी प्रत्येक भूल कुछ ना कुछ शिक्षा दे सकती है। **–डिकेस**

यह सनातन नियम याद रखो कि कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना भी सीखो। **–सुभाष चन्द्र बोस**

आप सब आदमियों को बराबर नहीं कर सकते लेकिन हम सबको समान अवसर तो दे ही सकते हैं। **–जवाहरलाल**

अमृत और मृत्यु दोनों इसी शरीर में स्थित हैं। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है।
—वेदव्यास

विचार-बिंदु

कु. प्रियंका
एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

- जिस बोल से प्रतिध्वनि नहीं आती, वह सत्य नहीं हो सकती।
- गुनाह छिपा नहीं रहता, वह गुनहगार के मुख पर लिखा रहता है।
- जो नाविक अपनी यात्रा के अन्तिम पडाव को नहीं जानता, उसके अनुकूल हवा कभी नहीं बहती।
- बिना अतीत के आशीर्वाद से वर्तमान कभी पनप नहीं सकता।
- कार्य को ही अपना पारितोष समझो।
- असफलता को सफलता का प्रथम सोपान बनाना ही कला है।
- शालीनता बिना मोल मिलती है किन्तु इससे अमोल वस्तुयें खरीदी जा सकती है।
- श्रद्धा व प्रेम भाव के विषय है, इन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते।
- उन्हें कभी न भूलो, जिन्होंने तुम्हारा जीवन संवारा है।
- दुःख वह अमृत है जिससे पाप घुलते हैं।
- आत्म विश्वास वीरता का सार है।
- नम्रता का अर्थ है भय मिट जाना।
- जानकर गलती न करो, अनजाने में हुई गलती तो ईश्वर भी माफ कर देते हैं।

क्षेत्रीय पत्रकारिता

कु. मनु
एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

पत्रकारिता के बदलते आयामों के साथ-साथ समाचार पत्रों का स्वरुप भी बदलता है। राष्ट्रीय स्तर के समाचार-पत्रों का वर्चस्व घटा है और क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने अपने क्षेत्रों में एक अलग विशिष्ट पहचान बनाई है।

क्षेत्रीय समाचार पत्रों की महत्ता इस बात से भी आँकी जा सकती है के राष्ट्रीय समाचार पत्रों के साथ क्षेत्रीय समाचार-पत्र भी प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता बन गये हैं। इन पत्रों में प्रकाशित समाचारों की विश्वसनीयता को भी नकारा नहीं जा सकता। कभी-कभी तो कोई महत्वपूर्ण समाचार राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में प्रकाशित होने से पूर्व क्षेत्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका होता है।

प्रत्येक व्यक्ति यह जानना चाहता है कि उसके आस-पास क्या घट रहा है। आर्थिक एवं राजनैतिक घटनाओं के अतिरिक्त सामाजिक घटनाओं से भी आज का नागरिक अवगत होना चाहता है और यह सच है कि उस समाज, जिसमें वह ा हैं और यह सच है कि उस समाज, जिसमें वह रह रहा है
का एक सीमित दायरा होता है उस समय के क्रिया कलापों का ज्ञान केवल क्षेत्रीय समाचार-पत्रों के द्वारा ही हो पाता है।

राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में राष्ट्र एवं विश्व के उन समाचारों को ही पढ पाते हैं। उन सामाजिक पत्रों के लिए एक छोटे शहर में हो रही सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ कोई महत्व नहीं रखती जब तक कोई घटना राष्ट्रव्यापी समाचार का स्वरुप न ले। परन्तु एक आम नागरिक का सर्वप्रथम अपने शहर से सरोकार होता है वह अपने शहर में हो रही समस्त गतिविधियों के विषय में अधिक से अधिक जानकारी रखना चाहता है अपने शहर के सुख, दुख, अच्छाई-बुराई उन्नति अथवा अवनति के साथ वह भावनात्मक स्वरुप से गहरे जुडा होता है। क्षेत्रीय समाचार पत्रों के आम नागरिक की दुखती रग को पकड़ा है। उसके मनोभावों को समझा है। अब तो राज्य स्तर के समाचार-पत्रों में भी विभिन्न शहरों से सम्बन्धित समाचारों के लिए अलग पेज प्रकाशित किये जाने लगे है और यही कारण है कि इन समाचार पत्रों की माँग दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है।

इसी प्रकार क्षेत्रीय भाषा के समाचार-पत्रों का भी विस्तार हुआ है इनकी माँग में वृद्धि हुई है। केवल अपनी भाषा का ज्ञान रखने वाली व्यक्ति की दुविधा भी समाप्त हो गई है कि वह आस-पास के समाचारों से किस प्रकार अवगत हो।

अतः हमको यह बात माननी पडेगी कि क्षेत्रीय समाचार-पत्रों का आज हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। हमें अपने समाज से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है और क्षेत्रीय समाचार पत्रों से जुड़े पत्रकार बन्धु भी साधुवाद के पात्र है जो अभावों से जुझते हुए भी अपने कार्य क्षेत्र में वीर योद्धा की भाँति डटे हुए विजय की ओर अग्रसर है। समाज सदैव उनका ऋणि रहेगा।

समय की कीमत

मीनाक्षी बैसोया
एम.ए. प्रथम वर्ष (अर्थशास्त्र)

1 वर्ष की कीमत– उस लड़के/लड़की से जो परीक्षा में फेल हो गया हो और एक वर्ष पिछड़ गया हो वह जानता है एक वर्ष की कीमत।

1 महीने की कीमत– उस महिला से पूछो जिसने बच्चों को एक महीना जल्दी या देरी से जन्म दिया हो वह जानती है एक महीने की कीमत।

1 दिन की कीमत– दिहाड़ी मजदूर से जिसे एक दिन काम न मिले तो रोटी का सवाल खड़ा हो जाता है वह जानता है एक दिन की कीमत।

1 घण्टे की कीमत– उस लडके से पूछो जो अपनी प्रेमिका का इंतजार कर रहा हो और वह एक घण्टे देरी से आये वह जानता है एक घण्टे की कीमत।

1 मिनट की कीमत– उस यात्री से पूछो जिसकी रेल या बस एक मिनट देरी की वजह से निकल गयी हो और यात्रा रद्द हो गयी हो वह जानता है एक मिनट की कीमत।

1 सैकेण्ड की कीमत–उस व्यक्ति से पूछो जो एक सैकण्ड देरी की वजह से किसी दुर्घटना से बच गया हो वह जानता है एक सैकेण्ड की कीमत।

1 माइक्रो सैकेण्ड की कीमत– उस अंतरिक्ष यात्रा से पूछो जो ब्रह्माण्ड की खोज में लगा है जिसकी एक माइक्रो सैकेण्ड की गणना से अंतरिक्ष मिशन फेल हो गया हो वह जानता है एक माइक्रो सैकेण्ड की कीमत।

हमें प्रतिदिन 86400 सैकण्ड चैक के रुप में मिलते हैं जिसको अगर न गुना गया हो तो स्वयं ही नष्ट हो जायेगा। "अगर मैं एक मिनट जाया करती हूँ तो मैं एक दिन गँवा देती हूँ अगर मैं एक दिन जाया करती हूँ तो मैं पूरी जिंदगी गँवा देती हूँ।

'पराजय से सत्याग्रही को निराशा नहीं होती, बल्कि कार्यक्षमता और लगन बढती है।'

- महात्मा गाँधी

काव्यप्रयोजनम्

डॉ0 नीलम
असिस्टेन्ट प्रो
संस्कृत

प्रवृत्ति प्रति इष्टसाधनताज्ञान कारणं भवति। इदमनुभूयैव केनापि अभिरूपेण कथितमस्ति यत् 'प्रयोजनमनुद्दि मन्दोऽपि न प्रवर्तते। काव्यसर्जनासदृशे अतिमहति कार्ये प्रयोजन विना कस्यचिदपि प्रवृत्तिः सुतरामसम्भवा एवास्तीत्य करणेऽपि जनस्य विसंवाद भविष्यति। तर्हि कानि प्रयोजनानि ?

विषयोऽयमत्र प्रस्तूयते–

काव्यप्रयोजनविचारमालाया सर्वप्रथम **भरतमुनिना** स्वकीये नाट्यशास्त्रे नाट्यविषयकं काव्यप्रयोजनमित्थं प्रस्तुतम्

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्।
लोकोपदेशजनन नाट्यमेतद् भविष्यति।

अत्र स्पष्टमाभाति यद् भरतमुनेः काव्यप्रयोजनविषयको दृष्टिकोणो व्यापकोऽस्ति। सः दुखिनां श्रमश्रान्तानां च मनोरञ्जन काव्यप्रयोजन मन्यते एव किन्तु तेन सहैव धर्मबुद्धिप्रचारम् यशोवृद्धिकामनाम्, आयुषो रक्षा भावानाम्, बुद्धिविशदता त लोकोपयोगिसंदेशवाहकतामपि काव्यप्रयोजनत्वेन संख्याति। **भामहेनाप्युक्तं** यदुत्तमकाव्यनिबन्धनात् धर्मार्थकाममोक्ष प्राप्तिर्भवति, कलासु वैचक्षण्यं समायति, कीर्तिमिलति, आनन्दोपलब्धिर्भवति। यथाहि

"धर्मार्थकाममोक्षाणां वैचक्षण्यं कलासु च,
करोति कीर्तिं प्रीतिञ्च साधुकाव्यनिबन्धनम्।

वामनमतानुसारम् – "काव्य सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्। वामनेन काव्यप्रयोजनं सर्वाधिकरसंक्षिप्तत्वेन प्रतिपादित तेन प्रीति काव्यस्य दृष्टप्रयोजन कीर्तिं चादृष्टप्रयोजनं मन्यते।

अग्निपुराणमतानुसारम् – नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।।

अपि च – 'त्रिवर्गसाधनं नाट्यम्'

भोजराजेन काव्यरचनायाः द्वौ प्रयोजनौ मन्येते कीर्तिं प्रीतिञ्चेति –

"निर्दोषगुणवत्काव्यमलङ्कारैरलङ् कृतम्।
रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।

आचार्य कुन्तकमतानुसारम् –

सरस सरलयुक्त्या कथितं काव्यं धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनोपायः तथा च सत्कुलोत्पन्न राजपुत्राणा हृदयाह्लादकारकं भवति। अन्यशास्त्रापेक्षया सत्काव्येन लोकव्यवहारज्ञानं सुकरं भवति। सहृदयस्य हृ रसानन्दसृष्टिचमत्कारस्याधानमपि काव्यस्य प्रयोजनम्–

"धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः।।
व्यवहारपरिस्पन्दसौन्दर्य व्यवहारिभिः।
सत्काव्याधिगमादेव नूतनौचित्यमाप्यते।।
चतुर्वर्गफलास्वादप्यतिक्रम्य तद्विदाम्।
काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते।"

इत्थं कुन्तकमते काव्यस्य मुख्यप्रयोजनं सच्चरित्राणां निबन्धनपूर्वकं पुरुषार्थचतुष्टयस्य व्यवहारज्ञानस्य काव्यामृ सहृदयस्य हृदये चमत्करणम्।

ध्वन्यालोकेऽपि **आनन्दवर्धनः** काव्यप्रयोजनविषये कथयति यत्

"तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।"

काव्यप्रकाशे **मम्मटाचार्येण** सप्रयोजनमुक्तम् –

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

एतान्येन षट् प्रयोजनानि सन्ति। काव्यरचनया यशः प्राप्तिर्भवति । काव्यरचनया धनमपि मिलति। धावकनामा कविर्यथा श्रीहर्षाख्यभूपतितः निर्माय रत्नावली प्रचुरं धन प्राप्य तथा धनप्राप्तिः काव्यस्य फलम्। राज्ञि, सचिवे गुरुमुख्यादौ च गतो य उचित आचारा स्तत् परिज्ञानम्। काव्येन साकजता लोकव्यवहारज्ञानं भवति। काव्यरचना अनर्थनिवारणञ्च करोति। काव्यसमनन्तरमेव अलौकिकमानन्दं भवति। सकलेषु यशः प्रभृतिषु प्रयोजनेषु मौलिभूतेदम्। काव्याध्ययनश्रवणयोः समनन्तरमेव स्वविषयातिरिक्तवेद्यान्तरसम्पर्कशून्यो भवति, किमपि वेद्यान्तर न भासते, केवला आनन्दानुभूतिः। उपदेशाय काव्यस्य उपयोगः। उपदेशस्य शब्दव्यापाररूपत्वात्। रसप्रधानञ्च काव्यं शब्दार्थाभ्यां विलक्षणं कान्तासम्मितमुपदेश करोति सरसतापादानेन सम्मुखीकृत्योपदेशं ग्राहयति। अतः काव्यं कान्तासम्मिततया युक्तोपदेशाय भवतीति सप्रयोजनत्व तरय।

कविवरो **विश्वनाथः** काव्यस्य धर्मार्थकाममोक्षरूपं पुरुषार्थचतुष्टयं प्रयोजनत्वेन प्रतिपादयति –

"चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।।

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत् इत्यादि कृत्याकृत्यप्रवृत्तिनिवृत्युपदेशद्वारेण सुप्रतीता एव। चतुर्वर्गप्राप्तिर्हि वेदशास्त्रेभ्यो नीरसतया दुःखादेव परिणतबुद्धीनामेव जायते। परमानन्दसंदोहजनकतया सुखादेव सुकुमार बुद्धीनामपि पुनः काव्यादेव।

पण्डितराजजगन्नाथः संक्षिप्तरूपेण काव्यप्रयोजनं प्रतिपादयति –

"तत्र कीर्तिपरमाह्लादगुरुराजदेवताप्रसादाद्यनेकप्रयोजकस्य काव्यस्य।"

काव्यस्य अनेकानि प्रयोजनानि – कीर्ति परमाह्लादः गुरुराजदेवताप्रसादः, गुरुदेवतयोः प्रसादेन अनर्थनिवारणम्, नृपदेवतयोः प्रसादेन अर्थप्राप्तिः च प्रयोजनानि गृहीतं शक्यन्ते। आदिपदेन व्यवहारज्ञानस्य, कान्तासम्मिततयोपदेशस्य च संकेतो प्राप्यते । इत्थं रसगंगाधरकारस्य प्रयोजनविषयकं मतमपि मम्मटेन सह साम्यं भजते।

समीक्षा – इत्थं विविधाचार्यैः विविधानि काव्यप्रयोजनानि प्रस्तुतानि। यथा कीर्ति, प्रीतिः, व्यवहारज्ञानम्, धर्मार्थ काममोक्षादीनि।

एतेषु सर्वेषु काव्यप्रयोजनेषु षड्प्रयोजनानि प्रमुखानि यथोक्तं मम्मटेन –

यशः, अर्थः, व्यवहारज्ञानम्, शिवेतरक्षति, सद्यः परनिर्वृतिः कान्तासम्मिततयोपदेशः ।यतोहि कीर्तेः अन्तर्भावः यशसि, प्रीतेः सद्यः परनिर्वृत्यां च इत्यादि। मम्मटः स्वकीय काव्यप्रयोजनेषु सर्वेषामाचार्याणां काव्य प्रयोजनानि अन्तर्भावयति। अतः तस्य मत सर्वाधिकं बुद्धिगम्यं व्यवहारिकञ्च मन्यते।

एतानि काव्यप्रयोजनानि कवेः पाठकस्य च दृष्ट्या वर्गीकर्तुम् शक्यन्ते। यशः, अर्थः, अनर्थनिवृत्तिश्च मुख्यतया कवेरेव।

व्यवहारज्ञानोपदेशयोगौ सहृदयस्यैव, कवेस्तयोः सिद्धत्वात्। परनिर्वृतिरपि सहृदयस्यैव रसास्वादकाले कवेरपि सहृदयत्व पतित्वात्। तदुक्त प्रदीपे –

काव्यास्वादनकाले, कवेरपि सदृश्यान्तः पातितया रसास्वादः।

अत्र विचारणीयमिदं यत् एतेषु काव्यप्रयोजनेषु कस्य प्राधान्यम्। केचित् आचार्याः यशं प्रधानरूपेण प्रतिपादयन्ति किन्तु प्रायः सर्वेराचार्यैः प्रधानतया परमाह्लादः (परनिर्वृतिः) एव स्वीकृतः। यथोक्तं मम्मटेन –

'सकलप्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वदसमुदगतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दम्'

ध्वन्यालोके आनन्दवर्धनोऽपि इदमेव प्रतिपादयति –

'तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरुपम्।"

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दकम्॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥

छात्रों में उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियाँ : कारण एवं निवारण।

डॉ० दीप्ति वाजपेयी
एसो० प्रो० संस्कृत

भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से निष्पन्न है। जिसका अर्थ "व्यक्तायां वाचि" अर्थात् व्यक्त वाक् है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। आज भाषा के बिना जीवन की कल्पना अधूरी लगती है। महाकवि दण्डी तो भाषा के अभाव में तीनों लोकों को अन्धकारमय मानते हैं।

"इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।"

अर्थात् यह सम्पूर्ण भुवनत्रय अन्धकारपूर्ण हो जाता है यदि संसार में शब्द रुपी ज्योति (भाषा) का प्रकाश न होता।

भाषा मूलतः उच्चरित होती है। अतः उच्चारण वह मेरुदण्ड है जिसके आधार पर भाषा का समस्त भवन अवलम्बित होता है। भाषा का सौन्दर्य, सौष्ठव, गठन व शुद्धता उच्चारण की शुद्धता पर निर्भर है। भाषा में व्याकरण से भी दुगुना महत्व उच्चारण का है। एक सुःउच्चरित वाक्य व्याकरण असम्मत रहने पर भी अर्थ प्रदान करता है किन्तु पूर्ण व्याकरण सम्मत वाक्य अशुद्ध उच्चरित होने पर श्रोता को बोधगम्य नहीं हो पाता या वह उसे अपूर्ण रूप से समझता है।

वस्तुतः सभी भाषाओं में उच्चारण का महत्त्व है किन्तु देववाणी संस्कृत में उच्चारण का विशिष्ट महत्त्व है क्योंकि संस्कृत के आदि ग्रन्थ वेदों की परम्परा मौखिक चली आयी है। महर्षि पतंजलि ने उच्चारण की विशेषता बताते हुये कहा है

"एको शब्दः सम्यक्ज्ञातः सुप्रयुक्तः।
स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति।।"

अर्थात् एक भी शब्द अच्छी तरह जाना हुआ व अच्छी तरह प्रयुक्त किया हुआ इस लोक व परलोक में इच्छाओं की पूर्ति करने वाला होता है।

वेदाध्ययन में उच्चारण का विशेष महत्त्व था। इसीलिये वेदों को गुरू अपने शिष्य को व्यक्तिगत रूप से पढ़ाता था। पाणिनी ने कहा है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा।
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।।"

अर्थात् स्वरों एवं वर्णों के शुद्ध उच्चारण से रहित मन्त्र अर्थ का अनर्थ कर देता है। अतः भाषा में उच्चारण की महत्ता सुस्पष्ट है। किन्तु अधिकांश छात्रों में उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियाँ व्यापक रूप से दृष्टिगोचर होती हैं जिसके अनेक कारण हो सकते हैं।

. प्रयत्न लाघव :–

यह मानव की सहज प्रवृत्ति होती है कि वह कम श्रम में अधिक पाना चाहता है। यही नियम भाषा के उच्चारण में भी दृष्टिगत होता है। छात्र कम उच्चारण द्वारा अधिक अर्थ अभिव्यक्त करना चाहते हैं और इसी प्रवृत्ति के कारण उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो जाती हैं जैसे– मास्टर साहब को मास्साब, बहिन जी को बैनजी व डॉक्टर साहब को डॉकसाब कहना।

. अज्ञानता :–

अधिकांश छात्र अज्ञानतावश भी अशुद्ध उच्चारण करते हैं। उचित ध्वनि निर्गम, मात्रा सम्बन्धी व शब्द व्युत्पत्ति सम्बन्धी ज्ञान न होने के कारण उच्चारण की अशुद्धियाँ होती हैं। यथा–ज्योति को ज्योती, प्रश्न को प्रशन व प्रताप को परताप आदि उच्चरित करना।

. भावातिरेक :–

कभी–कभी भावावेश में प्रेम, क्रोध, शोक आदि के अतिरेक के कारण भी छात्र अशुद्ध उच्चारण कर बैठते हैं यथा–

बच्चा को बच्चू लालसिंह को लल्लूसिंह इत्यादि कहना।

4. शिक्षक द्वारा अशुद्ध उच्चारण :– छात्रों के लिए उनके गुरू आदर्श होते हैं तथा अपनी अनुकरणात्मक प्रवृत्ति के कारण सर्वाधिक अनुकरण अपने शिक्षक का ही करते हैं। यदि शिक्षक का स्वयं का उच्चारण अशुद्ध है तो आदर्श मानने के कारण छात्र भी अशुद्ध उच्चारण करने लगते है उदाहरणार्थ – आशा को आसा या सुषमा को सुसमा उच्चरित करने पर छात्र तथैव उच्चारण करेंगे।

5. असावधानी :– बहुत सी उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियाँ असावधानी व लापरवाही के कारण हो जाती है। प्रायः कठिन ध्यानपूर्वक न बोले जाने के कारण गलत उच्चरित हो ध्यानपूर्वक न बोले जाने के कारण गलत उच्चरित हो जाते है। किकर्त्तव्यविमूढ़ किकर्त्यविमूढ़ या लखनऊ को नखलऊ कहना।

6. शारीरिक दोष :– छात्रों में किसी प्रकार का शारीरिक दोष भी उनके उच्चारण को अशुद्ध बना देता है। जैसे हकलाना जिह्वा सम्बन्धी दोष अशुद्ध उच्चारण का कारण बन जाता है।

7. मनोवैज्ञानिक कारण :– छात्रों में भय, झिझक या भावना ग्रन्थि आदि मनोवैज्ञानिक कारणों से भी उच्चारण सम्ब अशुद्धियाँ आ जाती है अर्थात् मनोवैज्ञानिक कारणों से भाषण प्रवाह में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है जिससे उच्च अशुद्ध हो जाता है।

8. प्रान्तीय भाषाओं का प्रभाव :– प्रान्तीय भाषाओं के प्रभाव के कारण भी उच्चारण में अशुद्धियाँ आ जाती हैं। यथा ज बोलने वाला छात्र तालव्य श को दन्तव्य स ही उच्चरित करता है। भोजपुरी बोली के प्रभाव से छात्र सन्ध्या को सझा क लगता है।

9. अन्य कारण :– उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त अन्य कई कारण भी छात्रों के उच्चारण को प्रभावित करते हैं जैसे ज आत्म प्रदर्शन या ध्यानाकर्षण की प्रवृत्ति।

महर्षि पाणिनि ने अशुद्ध उच्चारण के अनेक कारण बतायें है जो अग्रिलिखित है :–

"उपाशुद्रष्टं त्वरितं निरस्तं
विलम्बितं गद्गदितं प्रगीतम्
निष्पीडितं ग्रस्त पदाक्षरं च
वदेन्नदीनं न तु सानुनास्यम्।"

अर्थात् : 1. जब छात्र जीभ दबाकर उच्चारण करते हैं व वर्णों को मुख में ही काटने लगते हैं तो उच्चारण अशुद्ध हो जा
2. जब छात्र त्वरित अर्थात् वर्णों को जल्दी जल्दी बोलते है तो उच्चारण में अशुद्धि आ जाती है।
3. जब छात्र वर्णों को फेंकता हुआ बोलता है तो उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।
4. जब छात्र रुक–रुक कर बोलता है तो उच्चारण अशुद्ध हो जाता है।
5. जब छात्र गद्गद् स्वर में उच्चारण करता है तो उच्चारण में अशुद्धि हो जाती है।
6. जब छात्र गा–गाकर बोलता है तो उच्चारण में अशुद्धि करने लगता है।
7. जब छात्र तुतलाकर एवं मुख के अंदर ही बुदबुदाते हुये बोलता है तो वह अशुद्धियाँ करने लगता है।
8. कभी–कभी छात्र अपूर्ण उच्चारण करता है।
9. जब छात्र दीनता के स्वर में बोलता है तब भी वह अशुद्ध उच्चारण करता है।
10. जब छात्र सानुनास्य अर्थात् सभी वर्णों को नासिका से बोलने लगता है तब उच्चारण में अशुद्धि आ जाती है

इस प्रकार छात्रों में पाये जाने वाले उच्चारण सम्बन्धी दोषों के उपर्युक्त में से कोई एक या अनेक कारण हो सक हैं।

निवारणात्मक उपाय :–

छात्र के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः छात्र में उच्चारण सम्बन्धी अशु निवारण करने के लिए अध्यापकों को विशेष उपाय करने चाहिए जिससे छात्र के व्यक्तित्व को उच्चारण दोष से मुक्त

जा सके–

1. ध्वनि तत्व का ज्ञान :–

किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसके ध्वनि तत्व को जानना आवश्यक होता है। अतः अध्यापक को स्वर व व्यंजन के अतिरिक्त अनुस्वार (ं), विसर्ग (ः) अनुनासिक (ँ) आदि का उच्चारण सिखाकर इनके प्रयोग में कुशल बनाना चाहिए।

2. आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना :– उपदेश में उदाहरण की श्रेष्ठता सिद्ध है अतः अध्यापक को चाहिए कि वह स्वयं शुद्ध उच्चारण का उदाहरण छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करें जिससे अनुकरण करके अज्ञानतावश अशुद्ध उच्चारण करने वाले छात्र अपना उच्चारण शुद्ध कर सकेंगे।

3. अभ्यास :– अशुद्ध उच्चारण को पुनः पुनः अभ्यास के द्वारा शुद्ध कराया जा सकता है। शुद्ध उच्चारण समवेत स्वर में भी कराया जा सकता है और व्यक्तिगत रुप से भी। यदि किसी शब्द का शुद्ध उच्चारण अधिकांश छात्र नहीं कर पाते हैं तो उस शब्द की उच्चारण आवृत्ति समवेत स्वर में कक्षा के समस्त विद्यार्थियों से करानी चाहिए।

4. मनोवैज्ञानिक व शारीरिक दोषों का उपचार :– यदि छात्र किसी मनोवैज्ञानिक समस्या अथवा शारीरिक दोष के कारण अशुद्ध उच्चारण करते हैं तो सर्वप्रथम इसको दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए मनोवैज्ञानिकों व चिकित्सकों की सहायता लेनी चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह इस उपचार के लिए अभिभावकों से विचार–विमर्श करे व उनसे अपेक्षित सहयोग लें।

5. यांत्रिक सुविधायें :– छात्र के उच्चारण को शुद्ध करने के अभ्यास का महत्वपूर्ण योगदान होता है किन्तु कक्षा के सीमित समय में अपेक्षित उच्चारण अभ्यास नहीं हो पाता है तथा सम्बन्धित छात्र अन्य विद्यार्थियों के समक्ष संकोच का भी अनुभव करते हैं। ऐसी स्थिति में यांत्रिक सुविधाओं का सहारा लिया जा सकता है। इनमें ग्रामोफोन, टेप रिकार्ड, रेडियो, टी०वी० आदि प्रमुख हैं। इसमें रेडियो, टेलीविजन में शुद्ध उच्चारण सुन–सुनकर छात्र उच्चारण में सुधार कर लेते हैं। शिक्षक टेप रिकार्डर में अपनी आदर्श वाणी में शुद्ध उच्चारण रिकार्ड कर सकते हैं व छात्र उसे खाली समय में सुनकर तथा स्वयं का उच्चारण रिकार्डर कर पुनः सुनकर अपने दोषों का निवारण कर सकता हैं।

6. उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन :– शिक्षकों को कक्षा में समय समय पर उच्चारण प्रतियोगिताओं का आयोजन करेते रहना चाहिए। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से उच्चारण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकता है। अन्ताक्षरी की भांति इस प्रतियोगिता का संचालन किया जा सकता है अथवा पाठ्य पुस्तक से कठिन शब्द छांटकर पर्चियों पर लिख दिये जायें तथा कक्षा – विद्यार्थियों की टोली बना दी जायें। जिस दल के छात्र पर्चियों का शुद्ध उच्चारण करें उस दल को सर्वाधिक अंक दिये जायें।

7. उच्चारण व वर्तनी परीक्षा :– समयाभाव, पाठ्यक्रम की विशालता व कक्षा आकार में वृद्धि होने के कारण उच्चारण व वर्तनी संशोधन कार्य आज शिक्षकों के लिए दुरुह होता जा रहा है अतः मासिक परीक्ष में उच्चारण व वर्तनी सम्बन्धी परीक्षा का भी समावेश किया जाना चाहिए। यह परीक्षायें उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों के निवारण का अच्छा साधन बन सकती हैं।

8. वैयक्तिक संशोधन :– बहुत से छात्र नाक से बोलते हैं, हकलाते या तुतलाते हैं अथवा उच्चारण की अधिक अशुद्धियाँ करते हैं तो ऐसे छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। इन छात्रों के वाग्दोषों का निवारण करना भाषा–शिक्षक का ही नहीं वरन् समस्त शिक्षकों का उत्तरदायित्व है।

अन्ततः छात्रों में पाई जाने वाली उच्चारण सम्बन्धी समस्याओं के कारण व निवारण के विवेचनोपरान्त कहा जा सकता है कि यदि शिक्षक अभिभावकों के सहयोग से प्रेम, सहानुभूति व धैर्य के साथ उपर्युक्त दोषों को दूर करने का प्रयास करेंगे तो वह अवश्य ही छात्रों के उच्चारण दोषों को दूर कर उनके व्यक्तित्व को एक नई दिशा प्रदान कर सकेंगे।

संघे शक्तिः कलौ युगे

मनुष्यो हि सामाजिकः प्राणी। सः समाजे एव उत्पद्यते, तत्रैव वर्द्धते, तत्रैव च जीवनं यापयति। व्यक्तीनां च समूह समाज इति कथ्यते। यदा मानवा समाजे ऐक्यभावेन निवसन्ति तदैव समाजस्य प्रकामं समृद्धिर्भवति नान्यथा।

कस्यचित् समाजस्य राष्ट्रस्य वा समुन्नत्यै संघो हि परमावश्यकः। संघेन एकतया वा मानवाः बलवन्तो भव एकतयैव समाजः, राष्ट्रं, संसारो वा उन्नति पथमधिरोहित। संसारे एकतयैव सुखस्य प्राप्तिः सम्भवति। संघटितः निर्बला बलिनो भवन्ति।

ऐक्यभावमापन्नाः तन्तवोऽपि पटरूपं धारयन्ति। मिलितैः क्षुद्रतृणैरपि बलवान् गजो बध्यते। उक्तं च केनापि कविन

"अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका।"

एकतायाः अभावे तु मानवः शक्तिहीनो जायते। समाजो विघटितो भवति। एकतायाः अभावेन एवास्माकं देश पराधीनतापाशेन बद्धोऽभवत्। एकता विना हि जीवने सुखं नोपलब्ध शक्यते। उक्तं हि–

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्म न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः।
न वै भिन्नाः गौरवं प्राप्नुवन्ति, न वै भिन्नाः प्रशमं रोचयन्ति।।

मानवस्येतिहासे आदिकालतः एव संघस्य महत्वं श्रूयते।

वेदेषु अपि एकतायाः महत्त्वं प्रतिपादितम्–

संगच्छध्वं संवदध्वम् सं वो मनांसि जानताम्।

ज्ञाने, विचारे, भाषणे गमने सर्वे मनुष्याः एकत्वभावसमन्विताः स्युरित्यैव वेदानामुपदेशः। ऋषयोमहर्षयस्त महापुरूषाः अपि ...स्यस्य महत्त्वमवर्णयन्। एकतयैव च समाजः सदा समुन्नतिमलभत।

कलौ युगे तु संघस्य विशिष्टं स्थानम्। सम्प्रति हि मनुजः राष्ट्रं वा स्वार्थमेव समीहते। स्वार्थ साधनाय राष्ट्रमन्यस्य विनाशायपि यतते, एकतां विना तु मनुजः स्वजीवनमपि रक्षितुं न प्रभवति राष्ट्ररक्षणस्य तु का कथा? एकता अभावे निजस्वातन्त्र्यमपि रक्षितुं न शक्यते।

अद्यत्वे तु संघे एव शक्तिः, न सेनासु, न सम्पतौ, न विद्यायाम् अतः सत्यमिदमुच्यते–

"संघे शक्तिः कलौ युगे।"

'अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम, उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।'

विद्यार्थी-जीवनम्

जगति मानवजीवनस्य महत्व विविधात्मकं वर्तते। भारतीयसंस्कृतौ मानवजीवनं चतुर्धा विभक्तम्, ब्रह्मचर्य गृहस्थ–वानप्रस्थ–संन्यासश्चेति। अनेनैव विभागे आश्रमाः सन्ति। ब्रह्मचर्याश्रमेव विद्यार्थीजीवनं कथ्यते। मानवस्य सर्वविध–शारीरिक–बौद्धिक–मानसिक शक्तीनां विकासस्य कालोऽयम् अयमेव कालो विद्यार्थी जीवनस्य स्वर्णकाल उच्यते। समस्तजीवनस्य–विकासस्यह्रासस्य वा कारणमेतज्जीवनमेवास्ति।

विद्यार्थीजीवनं नूनं साधमिदं जीवनम्। नानाविधकष्टान् सोढ्वैव विद्यामर्जयतिमानवः। वस्तुतस्तपोमयं जीवनम्। "तपसा किल्बिषं हन्ति विद्ययाऽमृतश्नुते" इत्युक्तं च। तपोहि कष्टसाध्यम् विद्यार्जनमपि क्लेशमयमस्ति। उक्तं च सुखार्थी चेत् त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम्, सुखार्थिनः कुतोविद्या। विद्यार्थिनः कुतः सुखम्।

निःसन्देह सुख–विद्ययोः परस्परं विरोध वर्तते। ब्रह्मचर्यस्य पालनम् अस्मिन् काले एव भवति।

छात्राणामयं परमोपयोगी कालः सर्वेषामभिभावकानाम् गुरूणाम् हितैषिणां च परमं कर्तव्यमस्ति यत् ते छात्राणां समयस्य दुरूपयोगं नैव कुर्युः। तान् सन्मार्गं प्रतिप्रेरयन्तु तेषां मार्गदर्शनं कुर्युः। छात्राणां यौवनसुलभचाञ्चल्यं प्रति सावधानाः दैनिकदिनचर्यां प्रति च सचेष्टमावाः प्रयतमानाश्च भवेयुः ये अभिभावकाः स्वबालकं नैव पाठयन्ति, ते वैरिणः सन्ति। सत्यमिदम्–

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभति सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

प्राचीनकाले विद्यार्जनपद्धतिरन्याएवासीत्। गुरुग्रहमेव गत्वा द्वादशवर्षपर्यन्तं छात्राः गुरोः सेवा कुर्वन् सकल शास्त्राध्ययनं कुर्वन्ति स्म। परमद्य तद्विपरीतमेव। अध्यापिताः छात्रा, ये मनसा वचसाकर्मणा वा गुरुं नाद्रियन्ते स्म, ते विद्याफलं नैव प्राप्नुवन्ति स्म। शास्त्राध्ययनमेव ते परमं कर्तव्यं पुण्यं च मन्यन्ते। उक्तं च–

अनेक संशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्र सत्य नास्त्यनघ एव सः।

ज्ञानचक्षुं प्राप्यैव विद्यार्थी यावज्जीवनं सुखी भवेत्। प्राचीन काले गुरूणा सूत्ररूपोपदेशो विद्यायाः साक्षात्कारो भवति स्म। ते आचारवन्तः भवितुमर्हन्ति स्म। अधुना छात्राणां जीवनम् बाह्याडम्बरपूर्णमस्ति। ज्ञानं विनाऽपि कथंचित् ते परीक्षां समुतीर्य स्वजीविकोपार्जनं कुर्वन्ति। गुरुत्व समाप्तप्रायः जातम्। इदन्तु दौर्भाग्यम्।

इदानीं छात्रछात्रासु धार्मिकशिक्षाऽभावतया नितान्तं चंचलता, उच्छृंखलता, कर्तव्यहीनता, अनुशासनहीनता वृद्धिमाप्नोति प्रत्यक्षदृश्यमाणेष्वपि–अनेकेषु दोषेषु कस्याऽपि ध्यानं न गच्छति। कदाचित् नेतृजनाः कथयन्ति त्ववश्यम्, परमस्य दोषस्य निराकरणं न कोऽपि कुर्तमीहते। छात्राः स्वाध्यायप्रकाशं नैव सत्कुर्वन्ति, नाऽपि अध्यापकैः सह आत्मीयताप्रकाशकं व्यवहारं कुर्वन्ति। तत् कथं छात्रजीवनं सौख्यमयं भवेत्।

वस्तुतः गुरूभक्तिर्विद्यार्थिजीवनस्य कृते तथैवऽनिवार्यम् अङ्गम्, यथा– ईश्वरजने भक्तिरनिवार्या। गुरुभक्तिं विना न कोऽपि विद्यार्थी विद्यावान् भवितुमर्हते। गुरुभक्तिमहत्त्वमित्थं वर्णितम्– विद्या श्रुत्वा गुरू ये नाद्रियन्ते प्रत्यासना मनसा कर्मणा वा। तेषां पाप भ्रूणहत्याविशिष्टंनान्यस्तेभ्य पापकुदस्ति लोके। "अन्यदपि– येन प्रीणात्युपाध्यायं तेन पादु ब्रह्मपूजितम्" छात्राणां पंच लक्षणानि– उक्तं च "काकचेष्टा बको ध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च अल्पाहारी गृहत्यागी, विद्यार्थी

पच विद्यार्थिजीवने–एव समस्तमानवोचितगुणानां विकासो भवति। अनुशासन– सदाचार– अहिंसा– विनय– क्षमा दया– अध्यवसाय– कर्तव्यपरायणता– प्रेम सेवादयो गुण अस्मिन् जीवने समायन्ति। विद्यार्थी राष्ट्रस्यानुपमा निधिरस्ति। ते एव भाविराष्ट्रकर्णधाराः सन्ति। तेषा शारीरिक चारित्रिक विकास नितान्तपेक्षणीयम्। इदं जीवनं शेषजीवनस्य आधार भितिरस्ति। अतः सम्यग् रक्षणीयम्, पोषणीयम् अनुशासनीयं च।

भारतीय संस्कृतिः

रिंकी नाक
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

इहख , अस्माकं भारतीयानां संस्कृतिः परमपुरूषार्थ प्रयोजनं अस्ति। साक्षात् परम्परया वा आत्मस्वरूपावाप्तिरूपं मोक्षाख्यश्चतुर्थ. पुरूषार्थ एव सर्वासां विद्यानामुद्देश्यम्, सर्वेसां मानवानां लक्ष्यं च। परं विविधकर्मपरिपाकवशात् तदवाप्ति सर्वेषां प्राणिनां समानतया न संभवति। संस्कृतिरेव मानवानां हृदयस्य परिष्कारं करोति। यतः सा आभ्यन्तरस्वरूपा, सभ्यता तु बाह्यरूपा वर्तते। हृदयाभ्यन्तरे राष्ट्र–देश–जाति–धर्मपरम्परया आधृतानि यानि संस्काराणि भवन्ति, तानि संस्कृतिबलेनैव भवन्ति। मानवस्य हृदये–इयमेव विश्वबन्धुत्वभावनामुत्पादयति। अज्ञानम्, चित्तभ्रमम्, द्वैतभावम्, दीनभावम् इयमेव दूरीकरोति। आध्यात्मिकभावना–धार्मिकभावना–सदाचारभावना–पारलौकिभावना, वर्णाश्रमव्यवस्था प्रभृतिगुण–सम्पन्ना भारतीय सस्कृतिः। जीवने–आध्यात्मिकभावनैव शान्तेर्मूलम्। चत्वारो वेदाः सर्वा–उपनिषदः आध्यात्मिभावनाप्रधानाः सन्ति येषु ग्रन्थेषु जीव–ब्रह्मयोरैक्यं स्थापितम्। उपनिषन्नाम अध्यात्मविद्यातत्तवम् अतीवोज्ज्वलं मनस आत्मनश्च अतीवशान्तिप्रदं मोक्षप्रदं च।

सर्वैः मनुष्यैः सदा स्वधर्मः पालनीय ?ः। स्वधर्मो न कदाचिदपि त्याज्यः। यद् उक्तं–

"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।"

धर्मभावनैव मानवान् पशुभ्यः व्यवच्छेदयति। उक्तं च– "धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीनः पशुभिः समानाः इति। धार्मिक–भाव- वैव मानवः सन्मार्गमनुगच्छति। धार्मिकभाव–एव भारतीया शिक्षा आसीत्। अतः एवोक्तं च।

"पुण्यतीर्थे कृत येन तपः क्वाप्यतिदुष्करम्।
तस्य पुत्रो भवेद् वश्यः समृद्धो धार्मिकः शुचिः।।

वस्तुतस्तु–शास्त्रीयभावना–एव धर्मः, अशास्त्रीयभावनात्वधर्मः। मानवानां कृते तपो विद्या च परं निःश्रेयस्करम्। यत् तपसा किल्विषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते।

मानवजीवने आचारस्य प्रधानता वर्तते। सदाचारस्य महत्वं भारतीयग्रन्थेषु सर्वत्र प्रदर्शितम्। उक्तं च– "आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः यद्यप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः।"

शास्त्रेषु–आचार–लक्षणमेतदुक्तम्–"साधुता च यथावृत्तदाचारलक्षणम्।" पुरूषः प्रेत्य–इह च सदाचारात्- आयुर्लभते, श्रियम् प्राप्नोति, अक्षयं कीर्तिं च विन्दते। पारलौकिकभावनाया वैशिष्ट्यं सर्वत्र विद्यते। सत्कर्म कृत्वा स्वर्गमवाप्नोति मानवः।

यतः–"नाभुक्तं क्षीयते कर्म, कल्पकोटिशतैरपि" इत्यपि–उक्तम्। भौतिकपदार्थानामोपभोगेन लौकिकसुखावाप्तिः सम्भवा, किन्तु मानवपतननपि निश्चितम्। भगवन्नाममस्ता सर्वत्र विद्यते। उक्तं च– "सुलभं भगवन्नाम जिह्वा च वशवर्तिनी इत्येषा वाङ्मयीपूजा" एषा पूजा मानवानां कृते परमोपकारिणी। भारतीयजीवने रामकृष्णयोमहत्वं स्तः।"रामो विग्रहवान् धर्मः धर्मो विश्वस्य प्रतिष्ठः" इत्यपि कथितम्।

वर्णव्यवस्था– आश्रमव्यवस्था च तु भारतीय संस्कृतेर्मूलम्। ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्यशूद्रेषु सर्वे मानवाः गुणकर्मानुसारेण विभक्ताः सन्ति। कार्यभारसंचालनार्थमेव समाजशरीरे ब्राह्मणादयश्चत्वारो भेदाः सन्ति। मानवजीवनमपि चतुर्षु विभागेषु विभक्तम्। आश्रम्यते स्थीयते यस्मिन् स आश्रमः। चत्वार आश्रमा उच्यन्ते। समाजस्य मूलाधाराश्रमव्यवस्थाया सर्वमान्यस्य जीवनस्वरूपस्य व्यवस्था प्रतिपादिता खलु। बाल्यकाले विद्याध्ययनम् यौवने सांसारिक सुखोपभोगः, वार्धक्ये मुनिवृत्तिः, अन्ते

च योगबलेन शरीर त्यागः। अर्थात् ब्रहमचर्य गार्हस्थ्यं वानप्रस्थं सन्यासयश्चेति। इयमेव भारतीयसंस्कृतेराश्रमव्यवस्था खलु। एतदनुरूपं महाकविना कालिदासेनाऽपि उक्तम्–

"शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयेषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृतीनां योगेनान्ते तनुत्यनाम्।"

वैदिकधर्मे ईश्वर एव सर्वशक्तिमान् भारतीय संस्कृतौ मानवस्य वैदिकधर्म प्रति नितरां निष्ठा वर्तते। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, शिक्षादीक्षान्तरमयमुपदेशो गुरूणामासीत्। मातृ–पितृ–गुरु–अतिथीनां वैशिष्ट्यं सम्यक् प्रचारितम्। उक्तं च–

"अपूजितोऽतिथिर्यस्य गृहाद्याति विनिश्वसन्।
गच्छन्ति विमुखास्तस्य पितृभिः सह देवताः।।"

इत्येवोक्तम्–मातृवान्, पितृवान्, आचार्यवान् पुरूषो वेद। देव–ऋषि–पितृ–ऋणत्रयमपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्, भारतीया संस्कृतेरेषः उपदेश। दुर्जनः सज्जनो भूयात्, सज्जनः शान्तिमनुभूयात। समानी व आकृतिः, समाना हृदयानि वः समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति। संगच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम्। एषैव भारतीया संस्कृतिः। अत्र महापुरूषाणां दर्शन–फलमपि श्रेष्ठं वर्तते। उक्तं च–

"महतां दर्शनं ब्रह्मन् जायते न हि निष्फलम्।
द्वेषादज्ञानतो वापि प्रसङ्गाद्वा प्रमादतः।।"

वस्तुतो "वसुधैव कुटुम्बकम्" इति भावना भारतीय–संस्कृतावुपलभ्यते। "स्वयं जीव, अन्याऽपि जीवतु" इतिभावः सर्वत्र प्रसरतु। अयमेव भारतीयसंस्कृते–स्वल्पस्वरूपः।

भारतीय संस्कृतेर्महत्त्वम्

भारतीयसंस्कृतेर्महत्त्वं सर्वथा अद्वितीयम् अक्षुण्णं च। अस्याः कतिपयविशिष्टताः सन्ति याभिरेषा प्राचीनतमापि सती अद्यावधि स्वविजयवैजयन्तीं दोधूयमाना विश्वप्रांगणे विराजतेतराम्। भारतीयसंस्कृतेः काश्चन विशेषताः अत्र संक्षपतो निर्दिश्यन्ते–

सहिष्णुता

सेयं भारतीया संस्कृतिः सहिष्णुतायाः प्रतिमा वरीवर्ति। अस्यां सर्वे जनाः, सर्वे वर्गाः, सर्वे सम्प्रदायाः, सर्वा जातयः उपजातयश्च समावेश लभन्ते। अत्र संकुचितताया लेशोऽपि नास्ति। न चात्र कश्चिदपि भेदभावः। इतिहासोऽत्र साक्षी। भारते वर्षे विभिन्नजातीया जनाः आक्रामकरूपेण समागताः। तैः सार्ध तेषां संस्कृतयोऽपि विविधरूपेण भारतं चक्रमुः परं ताः सर्वाः सभ्यता निखिलाश्च संस्कृतयो भारतीयसंस्कृतावेव अन्तभूताः। अद्यशकहूणादीन् नैव पृथक्तया प्रत्यभिज्ञानन्ति जनाः। इदमस्ति सहीष्णुतायाः प्रबलं प्रमाणम्। वस्तुतो भारतीयसंस्कृतेरखिलानि तत्वानि, सर्वे सिद्धान्ताः सर्वाश्च परम्पराः देशकालसीमानमतिक्रामन्ति। अत एव सा सर्वेरपि ग्राह्या।

विश्वबन्धुत्वम्

विश्वबन्धुत्वं भारतीयसंस्कृतेरात्मा। यजुर्वेदे कथितम्–

"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।"

एकस्मिन् मन्त्रे सर्वासु दिक्षु तत्र वास्तव्येषु च मानवेषु मित्रभावना इत्थमभिव्यक्ता–

"सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।"

भारतीयसंस्कृत्यनुसारं सर्वे मानवाः एकस्येव पितुः परमेश्वरस्य पुत्राः। अत एव सर्वे परस्परं बान्धवाः। व्यर्थ एव निजस्य परस्य च भेदः। वस्तुतः सर्वथा सत्यमेव इद कथनम्–

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।"

विश्वपरिवारस्य एकत्वस्य चेयं भव्यभावना एव विश्वशान्ति सौहार्द सौख्यं च संस्थापयितुं समर्था।

विश्वमंगलभावना

भारतीया संस्कृतिः सर्वेषां मंगलम् इत्थं कामयते–

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।"

भारतीयसंस्कृतेरियं विशेषता अस्ति यदत्र सर्वाः कामनाः सर्वा भावनाः सर्वाश्च प्रार्थनाः समष्टियुताः सन्ति। तद्यथा वेदमन्त्रे
(क) वयं स्याम पतयो रयीणाम्।
(ख) यद्भद्र तन्न आ सुव।
(ग) धियो यो नः प्रचोदयात्।
(घ) शं योरभिस्त्रवन्तु नः।
(ङ) शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।

इयं भद्रभावना इयं च लोककल्याणकामना वस्तुतः उदारतायाः पराकाष्ठा एव अस्ति यामवलम्ब्य विश्वकल्याणं संभवम्।

त्यागभावना

अस्मिन् जगति त्यागभावना श्रेयस्करी। भूमण्डले अन्नानि, फलानि, वस्त्राणि, अन्यानि च सर्वाण्यपि भोग्यवस्तूनि ईशकृ प्रकृतिप्रदत्तान्येव। तेषु न कस्याप्येकाधिकारः। अतः सर्वैरपि मानवैः सर्वाणि वस्तूनि त्यागभावनया समुविद्रवितरणे भोक्तव्यानि। अमुमेव सिद्धान्तमाश्रित्य त्यागपूर्वक भोगमुपदिशति भगवती श्रुतिः–

"तेन भोक्तव्यानि भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य– स्विद्धनम्"।

भारतीयसंस्कृतौ स्वार्थस्य शोषणस्य च लेशोऽपि नास्ति। अत्र तु स्वार्थी केवल भोजी जनः केवलपापीत्यभिधीयते –

"केवलाघो भवति केवलादी"

इत्थमेव – "एकः स्वादु न भुञ्जीत" इति सिद्धान्तोऽपि त्यागस्यैव प्रतीकभूतः।

अध्यात्मवाद :

भारतीया संस्कृतिः अध्यात्मवादे विश्वसिति। भौतिकं संघातं संचालयितुं चेतन स्वरुपस्य आत्मतत्वय अनिवार्यत्वं स सिद्धम् यथा देहे जीवात्मा संचालकस्तथैव जगति विश्वात्मा परमात्मा वां नियामकः। न्यायदर्शने – "इच्छाद्वेषप्र सुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगम्" – इत्येवंरुपेण आत्मनः स्वरुपं वठितिम्। परमात्मा तु अनाद्यनन्तः सच्चिदानन्दस्वर कर्मानुसारं अध्यात्मतत्त्वं सर्वस्मिन् जगति सन्निविष्टम्। इत्थमध्यात्मवादोऽपि एकत्वस्य परिपोषकः।

यज्ञप्राधान्यम्

भारतीयसंस्कृतौ जन्मनः आरभ्य मरणपर्यन्तं सर्वेष्वपि संस्कारेषु अन्यष्विपि च शुभकर्मसु यज्ञानामनिवार्यत्वेन विधानम्। "यज् देवपूजासंगतिकरणदानेषु" – इति धातोः निष्पन्नः यज्ञशब्दो वस्तुतः त्यागस्यैव पर्यायः। श्रीमद्भगवद्गीतानुसार यज्ञं कृत्वा तच्छिष्टं भुनक्ति स पापेभ्यो मुच्यते–

"यज्ञशिष्टाशिनः सर्वे मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः"

भगवता मनुना पंचयज्ञविधानं विहितम्–

"अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिभौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।"

एते पंचयज्ञा वस्तुत परिवारस्य समाजस्य च समुन्नतेः पंच सूत्राण्येव। यज्ञेन सकलमपि वातावरणं शुद्धं, पवित्रं, सुपुष्ट जायते।

यज्ञकुण्डे मन्त्रोच्चारपुरःसरं आहुतिरेव न यज्ञः। किन्तु–"यथावसरं दीनानां–सज्जनानां त्राणार्थं, देशरक्षार्थं सदैव च परोपकारार्थं स्वधनस्य, आवश्यकतानुसारं स्वशरीरस्यापि च समर्पणं"–यज्ञस्य सर्वोत्तमं व्यावहारिकं रूपम्। सर्वस्व समर्प अहकारपरित्यागपूर्वकं–"इदं न मम" इति–उदात्तभावनायाः संचार एव यज्ञस्य सारः। इत्थं यज्ञः संस्कृते प्राणभूतः।

शतायुर्वै पुरुषः

इति सिद्धान्तमनुसृत्य मानवजीवनोन्नत्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षरूपं पुरुषार्थचतुष्टयसिद्धयर्थं च जीवनं चतुर्धा विभज्य भारतीय संस्कृतिसाधकैश्चत्वारः आश्रमाः प्रकल्पिताः – "ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, सन्यासाश्रमश्चेति। तत्र – "ब्रह्मचर्याश्रमे विद्याबलादिवृद्धिः, गृहस्थाश्रमे योग्यसंतानप्राप्तिः भौतिकसमृद्धिश्च, वानप्रस्थाश्रमे दार्शनिकचिन्तनम्, सन्यासे च मायामोहादिकं त्यक्त्वा तपश्चरणं गृहे – गृहे च ज्ञानविज्ञानप्रसारणम्"– इति महती खलु कल्याणपरम्परा परिपूर्णजीवनस्य। इत्थम् अभ्युदयनिश्रेयस्साधिका व्यष्टिसमष्ट्युन्नायिका च खलु वर्णाश्रममर्यादा।

एवमेता विशेषताः भारतीयां सस्कृतिं सर्वोच्चपदवीं प्रतिष्ठापयन्ति खलु। एतदतिरिक्तम् – सदाचारः, सत्यव्यवहारः, अहिंसापालनम्, समत्वभावना, परोपकारः, सहअस्तित्वम्, दया, उदारता, सर्वभूतेष्वात्मदृष्टिइत्यादीनि, तत्त्वानि भारतीयसंस्कृतेर्महत्तां, विशालतां, श्रेष्ठतां, सार्वभौमिकतां, सर्वग्राह्यतां च प्रमाणयन्ति।

वाल्मीकिः

मोनिका सिंघल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

लौकिकसंस्कृतसाहित्ये, महर्षिः वाल्मीकिः आदिकविः कथ्यते। उत्तररामचरिते ब्रह्मणा 'आद्यकविरसि' इत्येवम्प्रकारेण वाल्मीकेः प्रशंसा कृता। एकदा तमसा नाम नदी तीरे कविरसौ हनं क्रौञ्चं वीक्षय करूणाक्रान्तचितः संजातः। तदा एकपदे एव तस्य मुखाद् अयं श्लोकः स्फुटित :–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

अयमेव श्लोकः तस्य कवेः आद्यः श्लोकः आसीत् लौकिकसंस्कृतस्य च प्रथमा सृष्टिः ततो रामम् अधिकृत्य वाल्मीकिना आदिकाव्यं रामायणं नाम रचितम्। इदमेव महाकाव्यं लौकिकसंस्कृतकाव्यमालायाः प्रथमं पुष्पं वर्तते। रामायणे ऐतिहासिक महाकाव्यत्वं, वीरकाव्यत्वं च समाहितं वर्तते। भाषायाः लालित्यं, भावनां मनोहारिणीच्छटा, रसपरिपाकः, अलंकाराणां सहजता, नायकस्य उदात्तता, नीतेः चरमोत्कर्षः नैतिकतापरिपालना, प्रकृतिवर्णना, इत्येतेषाम् अन्येषां च गुणानाम् आकरोऽस्ति वाल्मीकिः कृतिः रामायणम्।

रामायणं सप्तसु काण्डेषु विभक्तम् अस्ति। रामयाणाश्रितानि नैकानि काव्यानि सन्ति। रामायणस्य प्रतिष्ठा अद्यापि अक्षुण्णां वर्तते। वाल्मीकेः रचनेयं निरन्तरम् अद्यापि प्रासंगिकता भजते अत एव रामायणमञ्जर्याम् असौ कविः इत्थं स्तूमेत स वः पुनातु वाल्मीकेः सूक्तामृतमहादधिः ओंकार इव वर्णानां कवीनां प्रथमो मुनिः।। इति।

वाल्मीकिरामायणम्

आदिकाव्यत्वम् – रमणीयं खलु वाल्मीकिरामायणम्। "रामायणम्" आदिकाव्यं तत्प्रणेता च वाल्मीकिरादिकविः। यद्यपि रामायणात् पूर्वमति बहवः काव्यमयाश्छन्दोबद्धाश्च ग्रन्था ग्रथिताः। किन्तु तेषु रसमयता नास्ति। न च तत्रालंकारच्छटा दृश्यते। लौकिकधरातले बाल्मीकिरामायणे एतादृशं प्रथमं काव्यं यदरसभावथ रितं गुणगौरवान्वितं अलंकारैरलंकृतंच सत् सहृदयहृदय सततं रञ्जयति। अतो वाल्मीकिरामायणमेव अदिकाष्यत्वेन आद्रियते संस्कृतकाव्यकानने।

प्रादुर्भावः रामायणस्य प्रादुर्भावपरम्परापि विलक्षणा। एकदा महर्षिवल्मीकिः स्नानार्थं तमसायास्तटे जगाम। तत्र स कामकेलिमत्त–क्रौञ्चमिथुनादेकं व्यापाद्यमानं अवलोकयामास। एतत्करुणदृश्यं दृष्ट्वा ऋषिमुखादित्यं संजाता –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

सोऽयं श्लोकः कवितायाः प्रथमाविभविः महाकविना भवभूतिना उत्तररामचरितनाटके द्वितीयाङ्के।

"ऋषे आषः कविरसि। आम्नायावन्यत्र नूतनरछन्दसामवतार ?"

इत्युक्त्वा आस्य प्रमाणिकता प्रतिपादिता।

'रस एव काव्यस्यात्मा" इति काव्याशास्त्रिणां मतम् रसश्च व्यङ्ग्यो भवति। ध्वङ् यार्थमेव काव्यात्मरुपेण मन्यमानो हृदय लोककासस्तत्रभवान् आचार्यप्रवरः आनन्दवर्धन उवाच –

काव्यास्यात्मा स एवार्थत्तस्मादादिकवेः पुरा।
क्रौञ्चद्वन्द्वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः ।। ध्वन्यालोकः

रामायणस्य वैशिष्ट्यम् – आदर्शचरित्रचित्रणं रामायणस्य अदितीय वैशिष्ट्यम्। अस्य नायकः श्रीरामः मर्यादापुरुषोतमः। स आदर्शाः मर्यादाः रामचरिते साकारतां गताः। किमधिकम् सत्यवादित्वेन, वचन–पालकत्वेन आज्ञाकारिपुत्रत्वेन, विश्व शिष्यत्वेन, भ्रातृवत्सलत्वेन एकपत्नी–व्रतयतित्वेन, शरणागतवत्सलत्वेन सन्मित्रत्वेन, उदारस्वामित्वेन, दीनबन्धु–त्वे नयायकारिभूपतित्वेन, लोकराहाकत्वेन च रामायणचित्रितो रामः सर्वथा सर्वैः सर्वत्र सततमनुकरणीयः पूजनीयश्च वस्तुतस्तु–"रामो विग्रहवान् धर्मः" इत्यनुसारं धर्म एव रामरूपं धारयित्वा धरामवततार।

भगवती सीता वाल्मीकिरामायणस्य नायिका। सा खलु भारतीय–संस्कृतेः प्रतिमा एव। पतिव्रतानां धुरि कीर्तनी सीता वनं गच्छतमपि राममनुजगाम। तत्र सा वनवासदुः खानि न गणयामास। रावणेनपहूता सीता प्राणबाधास्वपि सत्सु स्वी पतिव्रतधर्मं न व्यक्तम्। रामेण परित्यक्ता सा दारूणं पतिवियोगमपि सेहे। तस्यामव्यवस्थायां तस्या मनसि केवलं राम एव रे नितान्तं सत्यमेवेयमुक्तिः–

"कृत्स्नं रामायणं काव्यं सीतायाश्चरित महत्।।"

सर्वथा सर्वतोभावेन अनुकरणीयं सीताचरितं कल्याणकामाभिः कामिनीभिः। रामायणस्य अन्यानि चरित्राण्यादर्शभूतानि। पदे–पदे चारूचरित्रचित्रणमेव वाल्मीकिरामायणस्य महनीय महत्त्वम्। तत्र न केवल राम मातृपितृगुरूभक्तिः सीताया वा पतिभक्तिः अपितु भरतलक्ष्मणशत्रुघ्नानां मातृभक्तिः तत्रभवतः हनूमतः स्वामिभक्तिः, सुग्रीव चानुरक्तिरपि सहृदय–हृदयान्याकर्षति।

रामायणस्य शैली– वाल्मीकिरामायणस्य शैली सरल सरसा सुकोमना च खलु। सरलाया मधुरया गार्वाणगिरारामकथाकथनं वाल्मीकिः प्रतिभायाः परिचायकम्। श्रृंगारहास्यकरूणादिरसानां रमणीयताः अभिनव–भाव भाष्यता, उपमाहालकारणं चारूता, माधुर्योजः, प्रसादगुणानां च गरिमा रामायणमहिमानं द्विगुणयति।

रामायणस्य प्रसिद्धिः– स्वकीयगुणगौरवेणैव रामायणं सर्वत्र प्रसिद्धिं लोकप्रियतां च प्राप्य व्यक्तेः समाजस्य जीवनोपयोगिनः सर्वे विषयाः रामायण समाविष्टाः। रामायणस्य अध्ययनं–विदुषां– अविदुषाम् धनिनां–निर्धनानां सन्यासिनां , गृहीणाम्, बालवृद्धयूनां, द्विजना–शूद्राणाम्–स्त्रीणां–पुरूषाणां च स्वान्तं नितान्तमाकर्षति। रामायण लोकप्रियत्व सर्वकालस्थायित्व च प्रख्यापयता

भगवता वाल्मीकिना कथितम्।

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

रामायणस्य लोकप्रियताया एतत् प्रत्यक्षं प्रमाणं यद्रामायणोत्तरकालिकैः कविभिः रामकथामाश्रित्य बहूनि काव्यां नाटकानि च विचारितानि। तानि यथा–प्रतिमानाटकम् रघुवंशमहाकाव्यम्, कुन्दमाला, भट्टिकाव्यम्, उत्तररामचरित महावीरचरितम् अनर्घराघवः मंजरी, रामायणचम्पूः चेत्यादीनि। इत्थं रामायणस्य उपजीव्यत्वमपि सिद्धयति।

रम्या रामायणी कथा– रामायणस्य रम्यता भृशं प्रशंसिता संस्कृतसाहित्ये। रामायणं प्रशसन्तं अर्वाचीनकवयः वाल्मीकिमं

अभिवादयंयंचक्रुः। नलचम्पूकारस्तत्रभवान् त्रिविक्रमभट्ट विरोधाभासन रामायण– कथां खरामपि (खरनामपात्रयुक्तामपि सुकोमलां) सदूषणामपि (दूषणाम्–पात्र युक्तामपि) निर्दोषां कथयन् वाल्मीकिमित्थमभिनन्द–

सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।
नमरतस्मै कृता येन रम्या रामायणी कथा।।

श्रीभोजराजो वाल्मीकिं मधुसूक्तिनां मार्गदर्शकमेने–

मधुमयभणितीनां मागदर्शे महर्षिः। रामायणचम्पूः?

साहित्समालोचकास्त कविताशाखायां –"राम राम" – इति मधुर कूजन्तं कोकिलं कथयामासुः–

कूजन्तं राम शमेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरूह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।

रामायणीकथा वस्तुतो गंगेव, या भुवनत्रयं सततं पुनाति–

वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामाम्भोनिधि सगता।
श्रीमद्रामायणी गंगा पुनाति भुवनत्रयम्।।

हिमालयः

अर्चना रानी
बी.ए. प्रथम वर्ष

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराजः।

सर्वोत्तमोऽयं शैलः, पर्वतराजः कथ्यते हिमालयः। 'भारतीयपर्वतेषु इमं शिखरिणं परित्यज्यान्यत्र क्वचिदपि हिमस्योद्भवो नास्ति।' अत एव प्राचीनकालतः एवास्थ नाम हिमस्यालयः इति प्रथितः। सुविदितमेव सर्वेषांयत् पर्वतराजो हिमालय उत्तरदिशतः प्रवहन्तं शीतवायुं रूणाद्धि। अतः भारते शीतवायोः प्रभावोऽसह्यो न भवति। ये पयोदा धावन्त एव भारताद्बहिर्गन्तुं क्षमाः तानपि हिमालयो निरोधयति, भारते एव जलवर्षणं कर्तुं नियोजयति च। अर्धसभ्यानां जातीनां भारते आगमनमपि हिमालयः पुरा प्रतिरूणद्धि स्म। फलतः तासां भारते समागमः स्वल्पोऽभवत्। नान्यथा भारतीय–संस्कृते परम्परा चिरस्थायिनी जायेत। न केवलं भारतस्यापि तु विश्वस्य कतिपयपरमरम्याणि स्थलानि हिमालयस्याङ्के स्थितानि। हिमालयो वैदिककालत एव पावनप्रदेशः सम्मतः। गंगा–सिन्धु–सरस्वती–ब्रह्मपुत्रादीनां पवित्रनदानां जन्मदाता पर्वतोऽयं कथं न पुण्यभाक् भवेत? पुरा महर्षीणां साधनाभूमिरभूत् हिमालयः। असंख्यास्ते आसन् आश्रमाः, मठाः, मन्दिराणि, तपोवनानि च हिमालयेप्रदेश यतः भव्या भारतीधारा भारतं विश्वं च सन्दिदेश। शंकराचार्यस्य बदरिकाश्रम विश्वविद्यालयः अधुना तीर्थ संजातम्। कैलास–गौरी–नन्दाप्रभृतीनि स्थानानि महर्षीणां कीर्तिस्तम्भरूपेण प्रतिष्ठितानि। तेषां महर्षीणामुपदेशं समाहृत्य सन्तोऽद्यापि ज्ञानानुसन्धानार्थं हिमालयं गच्छति। भारते हिमालयानुरूपमेव महर्षीणामाध्यात्मिकं (दर्शनं विकसितम) परमुच्चत्वमेव विचारणायाः हिमालयेन प्रादुर्भावीति निश्चितमेव।

वैदेशिकाः शत्रवो हिमालयस्य तीर्थप्रदेशानपिस्वायत्तीकर्तुं समुत्सुकादृश्यन्ते। न ते प्रतारका विश्वसनीयाः। तासां सर्वा योजनाः विकलीकरणीया अस्माभिरिति व्रतं भवतु सर्वेषाम्।

वसन्तः

संजू नायक
एम ए, द्वितीय सेमेस्टर

चैत्रवैशाख्योः वसन्तः। अस्य ऋतोः बहूनि नामानि सन्ति। तद्यथा ऋतुराजः, कुसुमाकरः, पुष्प–सभयः, सुरभिः, मधुश्च। कथं नाम वसन्तो भवति? वसन्ति अत्र मदनोत्सवाः इति वसन्तः। वसन्ते श्रृंगाररानिर्भरा बहव उत्सवाः क्रियन्ते। अयं ऋतुराजः ऋतूनां राजा भवति। कृष्णेन गीतायामुक्तम्–

'ऋतूनां कुसुमाकरः इति।'

ऋतुषु राजते इति ऋतुराजः। यथा राज्ञः शोभा उत्तमा भवति, तथैवास्य वसन्तस्यापि। कुसुमाकरस्तु प्रत्ययक्षमेवायमृतुः। बहूना वृक्ष–लतादीनां पुष्पैः रागमयो प्रवृत्तिः रंजिता एवं लक्ष्यते। तेषां पुष्पाणां बहुदर्शनात् वसन्तोऽयं पुष्पसमयः 'मधु भवति वसन्तः सर्वत्र मधुर संचारयति' इत्यनेन।

अहो कापि विशिष्टैव शक्तिः वसन्तस्य। नीरसेषु शुष्केषु च वृक्षलतादिषु रसं संचारयति, पल्लव–पुष्प–समृद्धिं च दधाति। सर्वेषा प्राणिना मनसि कापि रमणीया प्रवृत्तिः भृशं जायते तथा हिं

अविरलकमलविकासः सकलालिमदश्च कोकिलानन्दः।
रम्योऽयमेति सम्प्रति लोकोत्कण्ठाकरः कालः।।

लोके वसन्ते नृत्य–गीत–वाद्य–नाट्यादिषु मनोरंजनं करोति।

बसन्ते वनश्रीः बहु राजते। प्रथमं तावत् कोकिलानां मधुपानां च गानं श्रूयते। तथा हि–

कुसमजन्म ततो नरपल्लवास्तद्धनु षट्पदकोकिलकूजितम्।
इति यथाक्रमाविर भून्मधुर्दुमवतीमवतीर्य वनस्थलीम्।।

वसन्तकाले अशोकभ्र–किंशुक–तिलक–कर्णिकार–प्रियाल–कुरवकरादीनां मंजरीपुष्पादयः विलसन्ति। तत् कालिदासमनुसृत्य–

मलय–पवन–विद्धः कोकिलालापरम्यः।
सुरभि मधुनिषेकाल्लब्धगन्धप्रबन्धः।
विविधमधुपयूथर्वेष्ट्यमानः समन्तात
भवन्तु तव वसन्तः श्रेष्ठकालः सुखाय।।
इति

। परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते। स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

वैदिक संस्कृतिः

गीता शर्मा
एम ए, प्रथम सेमेस्टर

वैदिकसंस्कृतेः स्वरूपम् – मनसा आत्मनो वा संस्करणं संस्कृतिः संस्करणस्य या वैदिकी वेदमन्त्रप्रति पादिता वा पद्धतिः सैव वैदिकसंस्कृतिः। साक्षात्कृतधर्माणेमन्त्रद्रष्टारः ऋषयस्तपश्चर्यया सततसाधनया च मानव–जीवनस्य परिष्करणार्थं संस्कारणार्थं वा शाश्वतसिद्धान्तानां दर्शनं चक्रुः। इत्थं वेदमन्त्रेषु परोपकारस्य, औदार्यस्य विश्वबन्धुत्वस्य, लोक–कल्याणस्य, मानवप्रेम्णः, त्यागस्य च ये भव्यभावा वर्णितास्त एक वैदिकसंस्कृतेरात्म–भूताः।

प्रथमा संस्कृति – यथा वेदाः प्राचीनतमास्तथैव वैदिकी संस्कृतिरपि प्राचीनतमा। विश्वसंस्कृतेः बीजानि सर्वप्रथमं वेदमन्त्रेष्य एव समुदभूतानि। अतो "वैदिकी संस्कृतिरेव प्रथमा संस्कृतिः"–इति सर्वैरपि विद्वद्दिभर्निर्विवादं स्वीकृतम्। वेदमन्त्रेऽपि कथितम्–

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा।"

अत्र "विश्वाराः इतिपदेन वैदिकसंस्कृतेः सार्वभैमिकता विश्वजनीनता च प्रकाशिता भवति।

वैदिकसंस्कृतेरूदात्तभावना – वैदिकसूक्तेषु विविधविधा उदात्तभावना विलसन्ति। तद्यथा–

"शत्रो भव द्विपदे श चतुष्पदे।"

अत्र सर्वभूतहितभावना सुरम्यतया अभिव्यक्तिं गता। "सर्वं सर्वान् प्रेमदृशा–अवलोकयन्तु सर्वेषां च प्रियमिच्छन्तु।" इत्यस्याप्यस्ति मन्त्रे उपदेशः–

"प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।"

विश्वमैत्रया महनीभावनापि प्रथमं वेदमन्त्रेष्वेवाविर्भूता–

मित्रस्य मा चक्षूषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

विश्वहितकारिणी त्यागभावना वेदेष्वेव जन्म लेभे–

"तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।"

इत्थं सर्वथां सर्वांगीणतां धारयति वैदिकसंस्कृतिः।

"मनुर्भव" – इत्यस्य मधुरतामयोपदेशः संस्कृतेः सारभूतः। एवं वैदिकीसंस्कृतिरेव मानवसंस्कृतिः।

वर्णाश्रमव्यवस्था – वैदिकसंस्कृति वर्णाश्रमप्रधाना वरीवर्ति। पुरूष–सूक्तस्य एकस्मिन्नैव मन्त्रे चतुर्णा वर्णानां वर्णनं विद्यते–

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तवस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।

अत्र चत्वारो वर्णाः पुरूषस्य प्रजापतेर्वा अंङ्गभूताश्चित्रिताः। वस्तुस्तु चत्वारोऽप्येते भगवतो विराड्रूपस्य समाजस्यैवाङ्गानि। "यद् ब्रह्माण्डे–तत्पिण्डे"– इति सिद्धान्तानुसारं शरीरे ज्ञानेन्द्रि सम्पन्नस्य मुखस्य यादृशी मुख्यता ताहश्येव समाजे ज्ञानविज्ञान विस्ताराकाणां ब्रह्माणां श्रेष्ठता। देहे रक्षार्थं भुजयोर्यत्स्थानं तदेवं समाजे राष्ट्रेवा रक्षकत्वेन क्षत्रियाणां वैशिष्ट्यम्। देहपुष्टयर्थं देहे उरूभागस्य या स्थिति सैव समाजसमृद्धयर्थंसमाजे वैश्यानां स्थितिः। देहे बगत्यर्थं पादयोर्यन्महत्वं तदेव प्रगतिशीले समाजे शूद्राणं महत्त्वम्। ठतथं चातुर्वर्ण्यव्यवस्थायामेव सर्वांगपूर्णं सामाजिकं सुखमुत्थानं चावलम्बितम्।

"शतायुर्वै पुरूषः" – इति मान्यतानुसारं – "ब्रह्मचर्यगृहस्थ–वानप्रस्थ–संन्यासा" श्चत्वार आश्रमाः। तत्र–प्रथमे ब्रह्मचर्याश्रमे तपोममजीवनयापनेन विद्यार्जनंबलसंचयश्च विधीयते। द्वितीये गृहस्थाश्रमे दाम्पत्यजीवनयापनेन योयसंतानोत्पत्तिः पंचमहायज्ञानुष्ठानं चानुष्ठीयते। तृतीये वानप्रस्थाश्रमे दार्शनिकचिन्तनं ईश्वराराधनं च क्रियते। चतुर्थे संन्यासाश्रमे वैराग्यभावनया सर्व संन्यस्य योगाभ्यासः, सर्वत्र धर्मप्रचारः अन्ते च येगेनैव तनुत्यागः" – इतीयं परमपावनो खलु पद्धतिर्वैदिकसंस्कृतिसामुपासकानामार्याणां जीवनस्य।

यज्ञस्य सिद्धान्तः – वैदिकसंस्कृतौ यज्ञस्य प्राधान्यम्।
वैदिकसंस्कृतेः केन्द्रभूतः खलु यज्ञः।

वेदमन्त्रैकः प्रश्नः प्रस्तुतः –

"पृच्छामि त्वां यत्र भुवनस्य नाभिः"
अस्योत्तरं ददता वैदिककविना व्याहृतम्–

"अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः"।

यज्ञस्यायं वैदिकः सिद्धान्तः शाश्वतः सार्वभौमश्च। विश्व स्मिन्नस्मिन् परिलक्षितं प्रत्येकं कर्म यज्ञः। प्रकृतिरपि यज्ञपरा ईश्वरोऽपि होता –

अयं होता प्रथमः पश्यतेमम्"।

सृष्टिरपि यज्ञमयी प्रकल्पिता । वैदिकपुरूषसूक्तानुसारं सृष्टियागेसर्वात्मकः विराट् पुरुष एव हुतः। भगवद्गीतायामप्ययं सिद्धान्तोविशदतां नीतः–

"सहयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः"।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्त्विष्टकामधुक्।।

त्यागस्य भ्रूज्ञावना एवं यज्ञस्य आत्मा। यः परार्थे स्वात्मानं जुहोति स एवोत्तमयाज्ञिकः । वस्तुतः लोककल्याणार्थं–अभ्युदयः श्रेयसृसिद्धयर्थं च विहितं सकलमपि कृत्यजातं यज्ञ एव।

आशावादः आशावादः वैदिक संस्कृतेः प्राणभूतः । मन्त्रेषु सर्वथा स्वस्थम् – अदीन, समृद्ध च जीवनमांशसितम् –

पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम्,
शृणुयाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदःशतम्
भूयश्च शरदः शतात्।।

आशा एव एतादृशं ज्योतियज्जीवनं सततं प्रकाशयति –

"आशा हि परम ज्योतिः"। आशामेवाश्रित्य जनो भीषणं दुःखपारावारं समुत्तीर्य जीवन पथि अग्रे सरति। वेदेषु –

"वयं स्याम पतयो रयीणाम्"।
महयं नमन्तां प्रदिशस्चतस्त्रः।
उच्छ्यस्व हमते सौभगाय।

इत्यादिमन्त्रेषु आशावादस्य परमपातनस्शेत सततं प्रवहति। संक्षेपतो वैदिकीसंस्कृतिश्चेतः संस्करोति, आत्मानं विमली करोति लोकमंगलभावनां विभावयति, विश्वबन्धुत्वं विकासयति, जनमानसमुद्बोधयति, यज्ञभावं प्रबोधयति, आशावादं चोन्मेषयति।

महाकवि बाणभट्टः

सरिता शैल
बी.ए. तृतीय व

बाणभट्टः संस्कृतसाहित्यस्यैकः कविः यस्य जीवनवृतस्य सम्बन्धे असमांक पर्याप्तं ज्ञानमस्ति। तस्य पूर्वजः कुबेरः कर्मनिष्ठ श्रुतान्वितः शास्त्राभिज्ञश्चासीत्। कुबेरस्य चत्वारः पुत्राः अच्युतः ईशानः, हरः, पाशुपतः आसन्। पाशुपतस्य पुत्रोऽर्थपतिरभवत् अर्थपतेरेकादशसु पुत्रेषु एकश्चित्रभानुरासीत्! अस्य चित्रभानोः सुता बाणः । शैशवे एव बाणस्य पितरौ दिवंगतौ।

बाणस्य पार्श्वे प्रचुरा पैत्री सम्पत्तिरासीत्। संरक्षणाभावाद बाणो देशाटनकारी संजात । बाणस्य मित्राणि एवंरूपाणि आसन् कतिपये विद्वासः कतिपयेचौराः कतिपये नर्तकाः, कतिपये नेताः, कतिपये ऐन्द्रजालिकाः देशादेदेशान्तरमटन्बाणो बुद्धिसन्यन्नऽनुभवी चाभवत्। प्रत्यावर्त्य स विद्याध्ययनमकरोत् ।

बाणभट्टः श्रीहर्षवर्धनस्य राजकविरासीत्। हर्षवर्धनस्तं 'वश्यवाणीकविचक्रवर्ती' इत्युपाधिना विभूषयति स्म। अतो बाणस्य

स्थितिकालः सुगमतयाऽनुमातुं शक्यते। बाणभट्टस्य स्थितिकालः खिष्टाब्दपूर्वसप्तमसतकमस्ति। वामनस्य काव्यालकारसूत्रे उदधृतेन कादम्बरी गद्येनापि कवेरस्योपयुक्तिः कालः सिध्यति। 'हर्षचरितम्' बाणस्य प्रथमा गद्यकृतिरस्ति। बाण इमामाख्यानि कामाचष्टे। ऐतिहासिककाव्यरचनाया वास्तविक आरम्भो हर्षचरितेन भवति।

हर्षरितं साहित्यकशैलीमाश्रित्य लिखितमेकं रोचक वर्णनात्मक गद्यकाव्यमस्ति। काव्यसौन्दर्य वर्णनाशक्तिश्चात्रा प्रतिमे स्तः। हर्षचरितस्य शैली आलंकरिकी कल्पनाप्रचुरा च वर्तते। तत्कालीनांनां सामाजिकव्यवस्थानां, राजनीति कादर्शानां, च हर्षचरिते सुन्दरं चित्रणमस्ति। भासकालिदास प्रवरसेनभट्टारहरिशचन्द्राढ्यराजप्रभृतीनां समयनिर्धारणमप्यस्य साहाय्येन भवति। सोड्ढलो हर्षचरितस्य मुक्तकण्ठेनेत्थं श्लाघामकरोत्।

बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती चकास्ति यस्योज्जलवर्णशोभा।
एकातपत्रं भुवि पुष्पभूतिवंशाश्रयं हर्षचरित्रमेव।।

कादम्बरी संस्कृतसाहित्यस्य सर्वोत्कृष्ट उपन्यासोऽस्ति। तस्याः समस्ता कथा कौतूहलेनापूरिता आस्ते। पाठकानाम् उत्कण्ठोत्तरोत्तरं वर्धते। नायिकयाः कादम्बर्या उल्लेखो मध्य स्थले कृतः कविना। महाश्वेतायाः प्रणयकथा मूलकथाया उपोद्घातत्वेन निबद्धा। कथामुखे शूदगकस्य राजसभायामद्भुतेन तेन शुकेन सार्धमायान्त्याश्चाण्डालकन्यायाः प्रवेश ईहगुह्यो यत्पाठको बलाद् रहस्यभेदायोत्कण्ठते। उपसंहारे चेद रहस्यं भिद्यते। मूलकथाया उपकथायाश्च समन्वय कवेर्वस्तुविन्यासकौशलं प्रकटयति।

बाणभट्टस्य पात्राणि नहि भूलोकस्य पात्राणि, तानि तु चन्द्रलोके, गन्धर्वलोके, मर्त्यलोके चाप्रतिहतगत्या पर्यटन्ति। कथानके शाकुन्तलवत्स्वर्लोकभूलोकयोर्मिलनमास्ते। बाणस्य कृते कथातत्व चरित्रचित्रणं च नहि तावती अनिवार्ये यावन्ति सन्ति विविधाप्रासंगिकवर्णनानि यैः कादम्बरी परिपूर्णाऽस्ति। तथापि तस्य पात्राणि नहि सर्वथा व्यक्तित्वशून्यानि जीवरहितानि च। कादम्बर्या पात्राणि आदर्शवादिनो बाणस्य हस्तपुत्तलिका अवश्यमेव सन्ति, परं बाणेन तेषां संचालनमियता कौशलेनकृत यत्तानि सजीवानि व्यक्तियुतानि चायवन्। वस्तुस्त बागस्य पात्रसष्टि सजीव व्यक्तित्वयुत्ता च विद्यते। प्रजापालकस्य पराक्रान्तस्य शूद्रकस्य वीराकृतिः सर्वेषाः हृदये उत्साहस्य संचार करोति। व्यवहारकुशलोऽमात्यः शुकनाशः, शुभ्रवसना तपस्विनी महाश्वेता कमनीयकले चरा कादम्बरी–एतानि पात्राणि पाठकानां हृदये स्वकीय मनाशय प्रभवामड्कयन्ति। कादम्बयशिचरित्रचित्रणं कल्पना वैभवस्य वर्णनपटुतायाः मनवृत्तीनां सूक्ष्मनिरीक्षणस्य च निदर्शनं खलु।

बाणभट्टस्य प्रणयचित्रणमप्यत्यधिकमुदात्त रमणीयं चास्ति। कादम्बरीचन्द्रापीड्योः प्रथममिलनप्रसंग प्रथमरागोद्बोधनस्य मार्मिकचित्रणमपि दर्शनीयम् – "अथ तस्याः कुसुमायुध एव स्वमेदजनयत्, ससम्भमोत्थानश्रमो व्यपदेशोऽभवत्। उरूकम्प एव गतिं, नूपुररवाकृष्टहंसमण्डलमपयशो लेभे निःश्वासप्रभृतिरेवाशंकुं चलं चकार, चामरानलो निमित्तता यसौ। अन्तः प्रविष्टचन्द्रापीड्स्पर्शलोभेनैव निपपात हृदये हस्तः स एव करः स्तनावरणव्याजो बभूव। आनन्द एवाश्रुजलमपतयत् चलितकर्णावतसकुसुमरजो व्याजमारसीत्। लज्जैव वक्तु न ददौ, मुखकमलपरिमलागतालिवृन्दं द्वारतरगात्। मदनशरप्रथमप्रहारपवेदनैव सीतकारमकरोत् कुसुमप्रकरकेतकी कण्टकक्षतिः साधारणतामवाय। वेपथुरेव करतलमकम्पयत्, निवेदनोद्यतप्रतिहारनिवारणं कपटमभूत्। तदा च कादम्बरी विशतो मन्मथस्यापि मन्मथ इवाभूत द्वितीयः तथा सह यो विवेश चन्द्रापीड्हृदयम्। तथाहि असावपि तस्य रत्नाभरणद्युतिमपि तिरोधानममस्त, हृदयप्रवेशमपिपरिगृहमगणतय भूषणरवभूपि संभाषणमन्यत, सर्वेन्द्रियाहरणमपि प्रसादमचिन्तयत् देहप्रभासंपर्कमपि सुरतसमागमसुखमकल्पयत्।"

अस्मिन्नुद्धरणे कवियुगपन्नायिकानायकयोः प्रथमदर्शनजन्यस्य रागोद्बोधस्य चित्रणमकरोत्। महाश्वेतापुण्डरीकयाः प्रथममिलनस्य चित्रणमप्यतिमार्मिकं भव्यं चास्ति।

विप्रलभश्रृंगारस्योदाहरणो महाश्वेताविलापः कादम्बरीविरहवर्णनं च स्तः। नारीसौन्दर्यवर्णनेऽपि बाणः खलु पटुः। चाण्डालकन्याविलासवतीवारविलासिनीप्रभृतीनां भव्यं चित्रणमस्य निदर्शनं वर्तते। बाणभट्टः कदाचित्सुखसमृद्धिसमान्वितजीवनस्य कदाचिद् भोगविलासानुरजिंत जीवनस्य, कदाचित्च तपस्विजीवनस्य मार्मिकाभिव्यंजनायां निरतो खलु। वस्तुतस्तु कवेरनुभवो विशालो विविधो यथार्थश्चास्ति।

बाणभट्टस्य प्रकृतिवर्णनं विशदं, सजीवं, संश्लिष्टं चास्ति, कवचिद् भीषणप्राकृतिकदृश्येषु कवेश्चेतो रमते, क्वचिदसौ प्रकृतेः रम्यरूपाण्यप्यड्कयति स बहुविद्यानामलंकाराणां प्रयोगमकरोत्। उपमोत्प्रेक्षापरिसंख्याविरोधाभासप्रभृतीनलंकारान्

पुरस्कृत्य स वर्ण्यविषयस्य मनोहारिणीमभिव्यंजनामकरोत्। विन्धयारण्यस्य भयावहतां यावत्या सफलतया कविरडक यति स तावतो विस्मापिका। तपोवनस्य वर्णनमप्यप्रतिममास्ते। ऋतूना चित्रणमप्यतिमार्मिक विद्यते प्रभावसन्धयाऽन्धकारचन्द्रोदयादीनां विभिन्न प्राकृतिकदृश्यानां वर्णनमपि अतिसहृदयतया यर्थाथतया च अंकयति कविः।

अच्छोदसरोवरस्य वर्णनमपि बाणभट्टस्य निरीक्षणशक्ति प्राचुर्यस्य सुतरां बोधकम्। साँयकालस्याधस्तनं वर्ण लोकोत्तरमास्ते–

क्वापि विहृत्य दिवसावसाने लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्तमाना सान्ध्या तपोधनैरदृश्यत। अचिरप्रोषि सवितरि शोकविधुरा कमलमुकुलकमण्डलधारिणी हंसपतिदुकुलपरिधाना मृणालधवलयज्ञोपवीतिन मधुकरमण्डलाक्षवलयमुद्वहन्ती कमलिनी दिनपतिसमागमव्रतमिवाचरत् अपरसागराम्भसि पतिते दिवसकरे वेगोत्थितमूर्ध सीकरमिवतारागणमन्वधारयत्। अचिराच्च सिद्धकान्यकाविक्षिप्त सन्ध्यार्चनकुसुमशबलमिव तारकितं वियदराजत। क्षणे चोन्मुखेन मुनिजनेनोर्ध्वविप्रकीर्णे प्रणामांजलिसलिलैः क्षाल्यमान इवागलदखिलः सन्ध्यारागः।''

स्थाने प्रयुक्ता अलंकारा अपूर्वा शोभामावहन्ति। उपमोत्प्रक्षाश्लेषविरोधाभासप्रभृतीनामकारणां व्यवहारो भावोद्रेकाय संश्लिष्टार्थ प्रभावोत्पादकार्थ च कृतः कविना। परिसंख्याऽलंकारस्य तु बाणभट्टः सम्राट खलु। नह्यन्येन केनचित्कवि शिष्टपरिसंख्याया एतादृशश्चमत्कारपूर्णः प्रयोगः कृतः। हर्षचरिते बाणेन आदर्शगद्यस्य ये गुणा निरूपितास्तेऽस्य गद्ये पूर्णरूपे विद्यन्ते–

नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषः स्पष्टः स्फुटो रसः।
विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम्।।

अर्थस्य नवीनता, स्वभावोक्तेः नागरिकता, श्लेषस्य स्पष्टता, रसस्य स्फुटता, अक्षरस्य च विकटबन्धता युगपत्स गद्यकाव्यस्य शोभां प्रकटयन्ति। श्लेषप्रयोगेऽपि कविर्नितान्तः सफलः खलु। निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो महास्त्रजश्च ककुड्मलैरिव इत्युक्तिः कादम्बरीमुद्धिश्यैव कथिता तैनेव। रसनोपमाया इदमुदाहरणं कीदृक् मनोरमस्ति।

''क्रमेणच कृतं मे वपुषि चसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण मधुकर इव मदेन नवयोवनेन पदम्।''

परिसंख्याया अयं मनोहारी प्रयोगो विदग्धानां हृदयं नितान्तमावर्जयति यत्र बाणभट्टो जाबालेराश्रमस्य सुन्द चित्रमंकयति ''यत्र च महाभारते शकुनिवधः, पुराणे वायुप्रलपितं, वयः परिणामे द्विजपतनम् उपवनचन्द्रनेषु जाड्यम्, अग्नौ भूमित्वमेणकानां गीतव्यसनं, शिखण्डिनां नृत्यपक्षपातः, भुजंगमानां भोगः, कवीनां श्रीफलाभिलाषः, मूलानामधोगतिः कादम्ब हृदयपक्षस्य प्राधान्यमस्ति। मानवीयभावनामभिव्यक्तौ कोमलमनोभावनां च मार्मिक विश्लेषये बाणोऽद्वितीयः खलुः। कस्या अ मनोदशाया विस्तृतं विशदं संजीव च वर्णनं बाणभट्टस्य विशेषताऽऽस्ते। भावगाम्भीर्येऽप्रतिमः खलुः कविः।

बाणभट्टस्य शैली गद्यकवीनां कृते आदर्शभूताऽस्ति।

अस्य लेखन शैली विषयवर्णनस्य नितान्तमनुरूपा खलु। चित्रणस्य सजीवतां प्रभावशालितां चोत्पादयितुं की समासबहुलाभोजगुणामण्डितां च शैली स्थाने स्थानेऽवश्यामाश्रयते। परमन्यत्रादीर्घवाक्यनि प्रयुज्य स शैली सशक्तां मार्मि चाकरोत्। कपिंजलो ब्रह्मचारी मदनव्यथ संतप्त पुण्डरीकं भर्त्सयति–

''सखे पुण्डरीक, नैतदनुरूपं भवतः। क्षुद्रजनक्षुण्ण एष मार्गः। धैर्यधना हि साधवः। किं यः कश्चित्प्राकृत इ विकलीभवन्तमात्मान न रूणत्सि। क्व ते तद् धैयम्। क्वासौइन्द्रियजयः।''

तत्तवतो बाणस्य गद्यशैल्यां वर्ण्यविषये चादभु तम् सामंजस्यं विद्यते। राजशेखरस्य मते बाणभट्टस्य शैली पांचाली खलु–

शब्दार्थयो समो गुम्फ पांचाली रीतिरिस्यते।
शिलाभट्टारिकावाचि वाणोक्तिषु च सयदि।।

बाणभट्टस्य वर्णने स्निग्धता, रूचिरता, चिक्कणता च गोचरीभवन्ति। 'कथितपदता' तु गवेष्यमाणाऽपि न क्वचित्प्रत्यक्षीभवति नवपदविन्यासो, नूतनाऽर्थाभिव्यक्तिः, मंजुला भावभंगी च पदे पदे पाठकानां चित्तमावर्जयन्ति इमे एव सन्ति ते गुणा यैराकृ धर्नदास आह–

रूचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हारति।
सा किं तरूणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुशीलस्य।।

Adolescent Health Program in India

Smt. Shilpi
Asst. Prof. - Home Science

The 11 to 19 year old age is called adolescence. This is the period of rapid change and maturation when the child grows into the adult. This is one of the most enjoyable stages of one's life and it has to be experienced with joy and friendship paving the way for building a healthy society with good social relationships. The National Population Policy 2000 identified adolescents as an under served group for which health needs and within this reproductive and sexual health interventions are to be designed. The National Youth Policy 2003 recognizes 13 to 19 years as a distinct age group which had to be covered by special programmes in all sectors including health. The National Curriculum Framework 2005 for school education highlights the need for integrating adolescent reproductive and sexual health messages into school curriculum .Based on this the National Adolescence Education Program of NACO along with the Ministry of Human Resources Development is developed

The government has launched a Program called the Adolescent Reproductive and Sexual Health Program under National Rural Health Mission as a part of RCH. This focus on ARSH and special interventions for adolescents was in anticipation of the following expected outcomes: Delay age of marriage, Reduce incidence of teenage pregnancies, meet unmet contraceptive needs and reduce the number of maternal deaths, reduce the incidence of sexually transmitted diseases and reduce the proportion of HIV positive cases in the 10-19 years age group. One of the main problems during this phase of growth is the inadequate calorie intake. Studies have shown that girls in rural areas take a mean of 1355K.Cals/day in the 13-15 years and 1292 K.Cals/day in the 16-18 years which is much below the recommended age-groups. The commonly observed health problems are vaginal discharge, hair lice, headache, painful menstruation, irregular and excessive bleeding, dental problems and short sight. Silent urinary tract infection, poor menstrual hygiene is some other additional problems. Psychological problems also arise like emotional disturbances, depression, low self esteem, anxiety over inadequate or excessive secondary sexual development etc. Some of the specific strategies undertaken by various governments are KishoriBalika scheme under ICDS by Dept of Women and Child Development. Weekly once 100 mg iron Folic Acid supplementation of all adolescent girls through schools and anganwadi centers in AP.

Peer education and life skill development through education dept in Tamil Nadu, Maharashtra, Karnataka, AP etc. There is need for a service for providing counseling for adolescents within the district hospital and the CHC. In primary health centers and sub-centrers the skills to provide counseling both to adolescents and also to newly weds must be available. Peer educator network is also one of the key strategies to meet adolescents especially in marginalized groups like migrants, rag pickers and certain occupational categories, street children and even larger socially under privileged groups like the urban slums or in tribal areas.Helplines and internet are some of the other way through which educated adolescent can access information. This is the period of life when there is maximal need for nutrition.

The major limiting factor in accessing this is poverty .The second factor is patriarchy when intra family allocation reduced availability for the adolescent girl who needs this the most. There ar various government efforts to address this problem. For example the ICDS program provides for package of nutritional services to be made available. In practice few adolescents have been able t access this. There have been special schemes to give 10kms of grain every month to the underweigh adolescent. This too has been slow to implement. Preventing the marriage of girls below the legall permissible age of 18 should become a national concern .One needs to enforce the Child Marriag Restraint Act 1976 to reduce the incidence of teenage pregnancies. A more positive approach is t promote higher retention of girls at schools. This would also encourage their participation in th workforce. It is important to bring social pressure on errant families and specific communities b women's groups and organizations. Promotion of healthy life styles through sports competition o a cultural program for youth can also bring positive change. Some activities can provide opportunitie for youth to take part together. A health component that has behavior change communicatio counseling and service delivery aspects could be built into these.

RURAL UPLIFT PROGRAMME IN INDIA

Dr. Vineeta Sing
Asst. Prof. – Sociolog

In free India, rural uplift programmes were initiated in the year 1952 under community developmer program. These were aimed at changing the face of the countryside, and building a new outlook amor the village folk. Under the Five Year Plans, a high priority is being given to these programmes. Much yet left to be done as most of the people live in villages. However, a new awakening is growing amor the people living in villages.

The goals of the community development program are quite ambitious. With the advent of scientific metho of agriculture, increased production of wheat, rice, barley, cotton and other crops has been achieved a efforts go unabated in this direction. Cottage industries are the backbone of village wage-earners. Substanti increase in the production of cottage goods based on agro, marine and natural products or bio-products h generated employment in the rural sector. Co-operative credit societies have sprung up to cope with t increasing demand of capital by small farmers and workers engaged in cottage industries. Beside, th efforts are continuing to execute works of common benefit for the village community ; such as, villa roads, tanks, gas plants, technical know-how centers and adult education units in the rural sector. Increa in agricultural production , rural industrialization and a change in the outlook of the rural people are th the outstanding features of the village uplift programmes.

During the Five Year Plans, the community development program has shown excellent results. Villa link roads, rural water supply and sanitation, electrification and mass education are the areas whe much work has already been done. Radio and Television are today as common in rural areas as towns and cities. Schools, colleges, and technical institutes are now being opened in the rural ar semi-rural areas. There is a spate of tractors, harvesters and tube wells in villages. Improved see and fertilizers are made available to farmers near their homes. Minor irrigation schemes are comi up and the village industries are booming. Primary health centers and veterinary health care uni are roaring with improved life and livestock. A new awakening has now dawned upon village peop

heading for a bold advance in the new set-up. Village boys and girls are now teeming with latest info- rmation on various topics touching science, politics and life itself.

An important aspect of the community development is the Panchayati Raj which has been introduced in all the provinces. The panchayat system has been thought necessary to decentralize and democratize the administration of community development. The system envisages a far reaching change in the structure of local administration and rural development. Its chief purpose is to involve all the people living in rural areas to work for their own development and betterment. This mini government will now look after rural water supply, irrigation facilities, housing program, consolidation of holdings, roads, schools and health centers. In this new set-up, women are more than ever before occupying exalted positions in these Panchayats.

Banks have also been pressed into service to help entrepreneurs from villages to start new projects and generate job opportunities in the countryside. Banks are advancing huge sums of money at low interest rates to the rural folk to set up industries, by seeds and machinery for increasing production and launching various development projects. It is because of this massive program launched under different names by different financial institutions that the face of the Indian villages is quickly changing. The government of the day appears to be alive to its duties towards the vast rural population in the country. India, it has been rightly said, lives not in its towns but in its villages. Village uplift program is, therefore, being taken up at the top priority. That is why that plans are always afoot to see that the farmer gets a proper price for his produce and all the inputs required by him are made available to him at a subsidized price.

The village uplift program is poised for a bold advance. Much, however, remains to be done. Prosperity has, no doubt, percolated to villages. But the landless agricultural laborers are still a neglected lot. Red tapism and unscrupulous and dishonest officers are blocking the roads to the prosperity of villages. Dirty politics has also crept into the fabric of the village life. Vices like drinking, gambling and litigation and still playing havoc with the lives of the people in villages. It is time that village people recognized their new role in the new set-up and managed their affairs. Rural employment, health, education, sanitation, co-operative farming, storage of wheat and rice and increase in agriculture and industrial production are the areas which still demand their attention. Let us hope that villages in India regain their old glory, health and prosperity.

Environment and Human Health

Dr. Meenakshi Lohani
Asst. Prof. – Geography

Health depends on the environment in which one is born and brought up. Environment can be both a causes as cure of many diseases.In the context of health and disease environment may be divided under two headings (i) External environment and (ii) Internal environment factors like air, water, earth and its various products etc. comprise the external environment whereas the blood with various components that includes in our body, hormones, our emotions constitute what we call internal environment.

Earth's surface and the environment surrounding is important to human health. The nature of soil,

water, air, temperature, wind, cloud, rainfall, humidity etc. determines man's health and welfa Pollution of the environment result from a wide range of human activities: uncontrolled dispo of human excreta and refuge, industrial discharges, smoke from coal or oil burning, fumes fr motor vehicles, misuses or overuse of insecticides and fertilizers. Population explosion, results malnutrition, over consumption of food causes obesity, diabetes and dental decay.

In both rural and urban areas of developing countries, the age old issues of access to safe water, po domestic hygiene and dependence on traditional low grade fuels for cooking and heating continue pose particular problems to the health of under privileged women. Rapid urbanization exposes wom to other ha rd in addition, such as inadequate housing, exploitative and employment. Exposures women to p sticides and other toxins has not been addressed in depth.

Industrial expansion results into congestion. The pressure is building up on big cities in develop world. But the process is more complicated in third world countries. Congestion of cities leads primar to air and water pollution that are starting points for many diseases. Due to congestion, the qual of air and water is greatly affected

It is expected that in a decade or so, India would become increasingly industrial and there would more people (about 75%) in urban areas. Slum settlements arise in metropolitan cities due to acu shortage of housing. Due to influx of rural poor in to urban areas in search of job, are not able to fi a dwelling. The dwelling has no civic facilities of water supplies, drainage, roads, transport etc. whi leads to many social evils and ill health. Slums are not only overcrowded but created soc complications and health problems.

Slum dwellers face environmental, health, educational and cultural problems. Since there are basic amenitie f drinking water, sewage, bathrooms and latrines, there develop health hazar not only in slum dwellers but other people of urban areas.

The situation today is that more than one thousand million people-are trapped in the vicious cir of poverty disease, malnutrition. The environmental component in communicable diseases such malaria, filariasis, trypanosomiasis, and the efforts to control these diseasesthrough environmen interventions have come for considerable attention. But the large sale use of pesticides to prot crops and kill disease carrying insects and the increasing use,particularly in developing countries growth promoting substances have led to increasing concern about chronic toxic effects in hum beings. Apart from direct health effects of cooking fuels used by the poor these are indications th the growing scarcity of cooking affects the health of the poor in several indirect ways.

With the advance of civilization have come rising population, overcrowded cities and towns, chok the environmental sanitation. Industrial growth has contributed to all round pollution and so has do by various sources of energy production e.g. petrol, coal, nuclear material. The increasing use of chemi substances in the fields, factories and homes has added to the dangers of man's environment.

Provisions of basic sanitary measures, especially the safe water supply and disposal of human excr and other wastes are a top priority. The lack of basic environmental health, facilities and resultant c in terms of sickness, health the world economic growth cannot be ignored. The study of man's relati ship with the various elements in the surroundings and the use of knowledge to prevent disease a promote health is presently is top priority.

MY LOVELY MOTHER

Anjali Pal
B.A. I'

1. My mother's heart is pure.
   Paradise lies under the feet of my mother.
2. My mother is the most beautiful woman, I ever saw. All I am I owe to my mother. I attribute all my success in life to the moral, Intellectual and physical education, I received from her.
3. Life is a song, sing it. Life is a game, play it. Life is a challenge, meet it. Life is a dream-realize it. Life is a sacrifice, offer it. Life is love, enjoy it.
4. Mother is our greatest teacher. A teacher of compassion, love and is, as sweet as a flower our mother is the sweetest flower of love.
5. Being a full time mother is one of the highest salaried jobs..... since the payment is pure love.
6. Don't send artificial loves to your mother and father. Give them the respect and courtesy they desire. They are your most precious treasure, care for them.
7. The life ahead can only be glorious if you learn to live in total harmony with the lord.
8. All our dreams may come true. If we have the courage to pursue them. **- Walt Disney**
9. Those prone to get drunk on knowledge. Wealth and good birth, but the same are triumphs of the strick. **- Vidura (Mahabharate)**
10. The area of a people is a true mirror to their minds. **- P.J.L. Nehru**

STORY - Do Not Boast Yourself

Pooja
B.A. I'

There was a village near the river. There lived a couple who had no child. They were very sad. They wanted a child. So they prayed to God. God accepted their prayer.. Soon the woman became pregnant. Hearing this, her husband was full of happiness. He came to his wife and said "My dear, I am very happy. You will give birth to a son who will be our heir and give the comfort of our hearts. I will give him the best education and he will increase my renown."

His Wife replied. " How can you say that I will give birth to a son ? You do not know the future. So don't be foolish. My child birth is going to go well. Either that is boy or girl. But the child is going to live long and be healthy we should leave everything to God . It may befall you as it once befall a certam dervish.

Her husband asked. " What had happened to that dervish?" The wife Said, "I tell you the story of dervish."

Once there was a king who used to give a piece of cake and a bowl of honey daily to a dervish. The dervish ate the cake and keep the honey into a jar which was always on his head. In those days honey was very expensive dervish wanted to sell it in the market for money.

water, air, temperature, wind, cloud, rainfall, humidity etc. determines man's health and welf
Pollution of the environment result from a wide range of human activities: uncontrolled disp
of human excreta and refuge, industrial discharges, smoke from coal or oil burning, fumes fr
motor vehicles, misuses or overuse of insecticides and fertilizers. Population explosion, result
malnutrition, over consumption of food causes obesity, diabetes and dental decay.

In both rural and urban areas of developing countries, the age old issues of access to safe water, p
domestic hygiene and dependence on traditional low grade fuels for cooking and heating continu
pose particular problems to the health of under privileged women. Rapid urbanization exposes wom
to other haz rd in addition, such as inadequate housing, exploitative and employment. Exposure
women to pesticides and other toxins has not been addressed in depth.

Industrial expansion results into congestion. The pressure is building up on big cities in develop
world. But the process is more complicated in third world countries. Congestion of cities leads prima
to air and water pollution that are starting points for many diseases. Due to congestion, the qua
of air and water is greatly affected

It is expected that in a decade or so, India would become increasingly industrial and there would
more people (about 75%) in urban areas. Slum settlements arise in metropolitan cities due to ar
shortage of housing. Due to influx of rural poor in to urban areas in search of job, are not able to f
a dwelling. The dwelling has no civic facilities of water supplies, drainage, roads, transport etc. wh
leads to many social evils and ill health. Slums are not only overcrowded but created so
complications and health problems.

Slum dwellers face environmental, health, educational and cultural problems. Since there are
basic amenities of drinking water, sewage, bathrooms and latrines, there develop health haza
not only in slum dwellers but other people of urban areas.

The situation today is that more than one thousand million people-are trapped in the vicious cir
of poverty disease, malnutrition. The environmental component in communicable diseases such
malaria, filariasis, trypanosomiasis, and the efforts to control these diseasesthrough environmen
interventions have come for considerable attention. But the large sale use of pesticides to prot
crops and kill disease carrying insects and the increasing use,particularly in developing countrie
growth promoting substances have led to increasing concern about chronic toxic effects in hum
beings. Apart from direct health effects of cooking fuels used by the poor these are indications t
the growing scarcity of cooking affects the health of the poor in several indirect ways.

With the advance of civilization have come rising population, overcrowded cities and towns, chok
the environmental sanitation. Industrial growth has contributed to all round pollution and so has d
by various sources of energy production e.g. petrol, coal, nuclear material. The increasing use of chem
substances in the fields, factories and homes has added to the dangers of man's environment.

Provisions of basic sanitary measures, especially the safe water supply and disposal of human excr
and other wastes are a top priority. The lack of basic environmental health, facilities and resultant c
in terms of sickness, health the world economic growth cannot be ignored. The study of man's relati
ship with the various elements in the surroundings and the use of knowledge to prevent disease a
promote health is presently is top priority.

MY LOVELY MOTHER

Anjali Pal
B.A. I

1. My mother's heart is pure.
   Paradise lies under the feet of my mother.
2. My mother is the most beautiful woman, I ever saw. All I am I owe to my mother. I attribute all my success in life to the moral, Intellectual and physical education, I received from her.
3. Life is a song, sing it. Life is a game, play it. Life is a challenge, meet it. Life is a dream-realize it. Life is a sacrifice, offer it. Life is love, enjoy it.
4. Mother is our greatest teacher. A teacher of compassion, love and is, as sweet as a flower our mother is the sweetest flower of love.
5. Being a full time mother is one of the highest salaried jobs..... since the payment is pure love.
6. Don't send artificial loves to your mother and father. Give them the respect and courtesy they desire. They are your most precious treasure, care for them.
7. The life ahead can only be glorious if you learn to live in total harmony with the lord.
8. All our dreams may come true. If we have the courage to pursue them. **- Walt Disney**
9. Those prone to get drunk on knowledge. Wealth and good birth, but the same are triumphs of the strick. **- Vidura (Mahabharate)**
10. The area of a people is a true mirror to their minds. **- P.J.L. Nehru**

STORY - Do Not Boast Yourself

Pooja
B.A. I

There was a village near the river. There lived a couple who had no child. They were very sad. They wanted a child. So they prayed to God. God accepted their prayer.. Soon the woman became pregnant. Hearing this, her husband was full of happiness. He came to his wife and said "My dear. I am very happy. You will give birth to a son who will be our heir and give the comfort of our hearts. I will give him the best education and he will increase my renown."

His Wife replied. " How can you say that I will give birth to a son ? You do not know the future. So don't be foolish. My child birth is going to go well. Either that is boy or girl. But the child is going to live long and be healthy we should leave everything to God . It may befall you as it once befall a certam dervish.

Her husband asked. " What had happened to that dervish?" The wife Said, "I tell you the story of dervish."

Once there was a king who used to give a piece of cake and a bowl of honey daily to a dervish. The dervish ate the cake and keep the honey into a jar which was always on his head. In those days honey was very expensive dervish wanted to sell it in the market for money.

The dervish thought that he would buy ten sheep and they will give birth to lambs. As soon as shall have twenty sheep in one year and their number will steadily increase surely. I shall be th honour of five hundred sheep in five years. Then I shall buy a cow. an ox and get a piece of lamb. M ox will be helpful to plough my land and my cow will give birth to calves and will provide me wi milk.

Soon I shall be rich and earn more and more money. Then I shall build a house and buy slave and maidservants. I shall marry with a beautiful girl. She will give me a healthy and robust son. H will bring honour to my name after my death. If he will refuse to obey me then I will beat him with stick.

The dervish was in his daydream and he raised his stick. Which hit the jar and broke it int pieces. All the honey spread on the floor.

The wife said. " So it is not wise to speak of things that are uncertain."

STORY - Saying 'Sorry'

Deepan
B.A

Adit and Neha were brother and Sister and Studied in the same school at first and fourth standa- respectively. They loved each other. They played together, went to school together, Watche television together and of course, quarelled together. One day during the lunch hour at school, Am opened his bag to take out his lunch box. But he could not find it. He was hungry. So he thought for while and went to Neha's class. Neha gave half of her lunch to Amit.

Generally, they come back from school with their friends. Today, Neha reached earlier. After little while. Amit stepped into the house and seeing Neha said. "Sorry Deedi." Mother wa astonished for a while because Amit rarely uttered this word. Neha narrated what had happened school. And Amit added. "I Found the lunch box concealed under the books when I readied the ba to return home.

Seeing their love for each other mother gathered them into her arms.

STORY - Shibi Rana the King

Mon
B.A. I

Once there lived a king named Shibi Rana. He was a just and powerful king. He was famous for h kindness towards the poor. People loved him like God. So, Gods decided to test his justice a kindness.

One day the king was sitting on the throne. Suddenly, he saw a dove landed on his hands. It wa frightened. Just then, an eagle also entered the hall. The dove seeing the eagle said to the king, "M Lord, this cruel eagle wants to kill me. I request you to save my life."

The eagle said to the king, "Dear King, this dove is mine. So I request you to return my dove."

The King said, "This poor dove has come to me for protection. If I don't help it, It will be a great injustice. Then God will punish me and my kingdom. My kingdom shall not be blessed with rains and crops. I will be thrown into the hands of my enemies. So you may ask whatever you want other than this poor dove and I am ready to give you."

The clever and the cruel eagle thought for a moment and asked the king, "Give me an equal quantity of flesh from your body."

The courtiers were surprised. But the king was happy to keep his promise., The scales and the sword were brought there at the order of the king. The dove was placed on one of the sides of the scales. The attendant cut a piece of flesh from the right side of the King's body and kept on the scale. But the dove weighed more. He kept more flesh but the dove remained heavier. Seeing this the king was sad because he could not save the dove. At last, he agreed to give himself fully to the eagle. The courtiers became angry towards the eagle. Suddenly, the hall was filled with a bright light. Nobody could see anything.

In that light, the dove and the eagle became God's Indra and Agni. They were pleased with Shibi Rana and blessed him and his kingdom.

RIGHT TO EDUCATION

Divya Sharma
M.A. II Sem.

Education is a dynamic process that start from birth. Education is the mirror of the society and base of the socioeconomic development. It transforms human beings form ignorance to enlightenment, from under development to faster economic and social development.

The Indian constitution recognized UEE as crucial input for nation building and included in the directive principles to be implemented with a period of ten year. Article 45 of the constitution states. "The state shall endeavor to provide with a period of ten years from the commencement of this constitution for free and compulsory education for all children until they complete the age of fourteen years."

The National Education Policies have reiterated the constitution directive. The National Policy on Education 1986, provided that"free and compulsory education satisfactory quality shall be provided to all children upto the age of 14 years before we entered the 21st Century." The Programme of action (POA) , 1992 outlined various spaces for achieving the goal. Main features of right to education act:

The Year 2009 is a landmark year in the development of the history of elementary education as the government finally managed to pass the 86th ammendment to the constitution that made RIGHT to EDUCATION a fundamental bright.

The main features Right to Education Act are -

1. Free and Compulsory education for all children of India in 6 to 14 age group.
2. A Child who completes elementary shall be awarded a certificate.
3. Call for a fixed students - teachers ration.

Duties & Responsibilities of schools

1. School Shall admit out of school children through out the academic year.
2. Children will learn through activities, discovery and exploration and will be assessed thro continuous comprehensive evaluation.
3. School must have clean classrooms, safe drinking water, toilets, play area and Libraries facilit

Duties and Responsibilities of teachers :

1. Maintain regularity and punctuality in attending school.
2. Conduct and provisions of section 29 of RTI Act 2009 with the specified time.
3. Participate in training programmes.

In May, the government notified all schools in the state to reserve 25% state in the school economically weaker and backward class students. The deadline for completing admissions un the provision of the RTE was june 30. The government collected reports form each of its regions prepared a report from each of its regions and prepared a report on the data received.

JOKES

Ka
B.

1. Chemistry Teacher - Tell me the formula of water.
   Student - Hijklmno.
   Teacher- What the hell, idiot
   Student - Sir, last time you told in the class, the formula of water is H to O.

2. Son - I am not able to go to school today.
   Father- What happened ?
   Son- I am not feeling well.
   Father- Where you are not feeling well ?
   Son- In School.

3. The doctor to the Patient., "You are very sick."
   The patient to the doctor, "Can I get a second opinion ?"
   The doctor again, "Yes, you are very ugly too."

4. Teacher- Which one is closer , Sun or Africa
   Johny - "sun."
   Teacher- Why ?
   Johnny - We can see the sun all the time but can't see Africa.

Tulsi : The Best Medicine

Kavita
B.A. IIIrd

Tulsi is a well known Plant. It is a herb about 75 to 90cm high . It's scientific name is Ocimum Sanctum. It also has some regional names. For example in marathi and Tamil, It is called Tulsi, in Sanskrit Manjari and Krishna Tulsi, etc.

Its leaves are nearly round and upto 5cm long with the edges being slightly toothed Tulsi Flowers are small and are purple to reddish in colour. Its fruits are small and the seeds are yellow to reddish in colour.

Tulsi leaves are used nearly in all religious rites and routine worship in Hindu homes. It's juice or concotion is called 'Jushanda'. This gives relief in common cold, Fever, Cough and digestive complaints. Tulsi oil is used as an eardrop in case of earache.

The best part of the matter in that certain Indian scientists are at the threshold of finalizing the discovery of reliable medicine against cancer made from Tulsi.

Since the Tulsi Plants holds religious importance. It is grown by most Hindu families in their houses.

What is Life or Different view of Life

Neelam
B.A. I[st]

Every one has his own views of life. A rich man burst into laugther and said. "Money is life."

A poor man shivering with cold said, " Life is a Struggle."

In spiring a bird sitting on the tree said, " Life is like a blooming flower." A Soldier standing in the battle field said. "Life is a battle field." A Sparrow flying in the sky said, "Freedom is life."

A helpless bird in a cage said, " Life is bondage."

A monk delivering a sermon said "Life is only a way to reach God." Waiting in loneliness for his beloved, lover said. "Waiting eagerly for the be loved is life."

But I Say

"Life is an unsolved mystery, The Solution of which is." "Seek according to your own lights."

A Person who eats much. drink much and have no tension says.
"Life is eat, drink and to merry." **-"Golden Words"**
"Education is the manifestation of the perfection already in man." **- Swami Vivekanand**
"Go to help your friend in problem without invitation and don't go to share your friend in happiness without invitation." **- Shakespeare**

Who is poor - (Story)

Ra
B.A.

One upon a time there was a renowned saint Many people used to visit him to get his blessings. O a rich and great merchant went to him and offered him a bag full of gold coins. The saint refuse accept the offerings and said, I don't accept money from people, who are very poor.

The merchant said, "But I'm very rich

"Don't you wish to earn more money asked the saint.

Yes" said the merchant

"Those who wish for money always run after it. They can do anything to acquire it "No one is as p as these people," said the slant.

The merchant felt ashamed and went back to his home.

Lazy Jack

Ra
B.A

One upon a time in a small village a lazy called jack lived with his mother. He was so lazy that he fo it very difficult to move even his fingers. His mother worked as a servant maid in town homes earned for herself and son. People started to call him lazy jack and jack's mother was totally irrit and worried about her son.

One day she fell sick and was feeling fever severally She worked ridden for two days and c not go to work. She asked her son to earn something for them, otherwise there won't be anythi eat.

Lazy Jack finally understood her mother's health and their poverty. He promised her mother to b some thing and went on to search for a work.

A farmer offered him work in his land and paid two promise for jack's work.

Jack thanked him and rushed to him the pennies in hand. As he was running to home he did notice the pennies rolled down from his hand. He could not fined the coins and reached home unhappy face.

He told the incident to his mom Jack's mom told him, "Dear," Jack next time you put them in pocket so that they won't fall."

The next day a milkman offered. Jack a job. Jack was offered a glass of milk as wages for his w As told by his mother he poured the milk into his pocket and ran towards his mom.

His mom recognised what would have happened after seeing jack's dress. She told him jack should have carried the milk in your hand Don't worry. But be careful next time.

THE IMPORTANCE OF VALUES AND MORALS

Priya Bansal
B.A. I"

According to father of Indian Nation M.K. Gandhi

"If Wealth is lost nothing is lost."

"If health is lost something is lost."

"If Character is lost everything is lost."

Best of all things is character.

Everyone knows that life is precious. Life is important. We all protect our life because we care for it more than anything else. If life is important, the values of life are even more important. Values are guiding principles of standard of behaviour which are regarded desirable, important and held in high esteem by a particular society in which a person lives.

The importance of values and morals are the code we live by in a civil and just society. They are what we use to guide our interaction with others, with our friends and family, in our business and professional behaviour our values and morals are a reflection of our Spirituality our character, They are what we hope to model for our children and the children around us, because children do watch us as they develop their own sense of right and wrong.

You always say Hello when answering the Phone why?

A nice information :

When you lift the phone you say Hello ? Do you know what is the Real meaning of Hello ..... ? It is the name of a girl..... ! Yes and do you know who is that girl ..... ?"Margaret Hello", She was the girl friend of Graham Bell who invented telephone. Graham Bell's first word on his phone after his invention was "Hello". That Practice of starting the call with Hello still Continues.

ज्ञानाञ्जलि

विविध गतिविधियाँ

स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस, गाँधी जयन्ती, छात्रा संघ चुनाव, आज़ादी-पखवाड़ा एवं शैक्षिक भ्रमण इत्यादि

साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना
सत्र 2016-17 की विभिन्न गतिविधियाँ

रेंजर्स एवं एन.सी.सी.
सत्र 2016-17 की विभिन्न गतिविधियाँ

वक्त

डॉ० कनकलता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

ऐ वक्त तेरा शुक्रिया, जो हर पल को जीना सिखाया
वक्त ने रोना सिखाया और हँसना भी
वक्त ने ही कुछ करना सिखाया और रहना भी
फिर क्यों कोई गिला करें इससे,
वक्त ने ही जीवन जीना भी सिखाया
वक्त दे गम वक्त दे खुशी,
वक्त ने हर जख्म पर मरहम लगाना भी सिखाया,
ऐ वक्त तेरा शुक्रिया, जो हर पल को जीना सिखाया,
वक्त यूं ही बदलता है सुख का नीर छलकता है,
तो कहीं दिल दहलता है जीवन का रंग नया ही झलकता है,
वक्त की करवट के चिह्नों ने जीवन को संवारना भी सिखाया,
ऐ वक्त तेरा शुक्रिया, जो हर पल को जीना सिखाया,
वक्त के आंचल में छिपा है, हजारों यादों का चमन,
उस चमन का कोई कुसुम वक्त को बदला दिखाता,
जहाँ गम की छाया रहती, वक्त उस पर चादर बिछा दे,
वक्त ही कल को जगाये, बिखरे पल को सजा दे,
वक्त से बड़ा न कोई, वक्त है प्रबल सत्ता,
सभी का अपना वक्त होता, है भाँति-भाँति जीवन जीता
जो जन करें वक्त की कदर, उसपे बिछे सबकी नज़र,
वक्त ने ही सब पाठ पढ़ाया और रहना भी,
वक्त ने ही आदत छुड़ाया और बनना भी,
वक्त जगाता, विश्वास प्रबल,
वक्त ही मानव को मानव बनना भी सिखाया,
ऐ वक्त तेरा शुक्रिया, जो हर पल को जीना सिखाया।

सत्यता

पू. गनीधा [illegible]
बी.एस.सी. [illegible]

पंचतत्व की बनी जो काया
माया को जिसने भरमाया
इंद्रियों के रस है सब छूटे
रिश्ते नाते सब झूठे
आधि-व्याधि कार शाश्वत घेरा
खेल लिया नाटक बहुतेरा
हुआ भंग ज्यों त्यों साधो
क्यों अब रोक करें!
आ, अब लौट चलें!

कबका छूटा माँ का आँचल
बिखर गई कबकी वो बाखल
दादी की वो मधुर लोरियाँ
कान्हा संग खेली सभी छोरियाँ
स्वप्न सजी वो परी कथाएँ
गई छूट है शेष व्यथाएँ
युग के घातक प्रहारों से
बचे किधर किस ओर चलें।
आ, अब लौट चलें!

रोते आये ये इस जग में
खाली हाथ पथिक हम मग में
मिली हमें सौगात सांस की
जलती भट्टी हाड़-मांस की
खत्म हुए सब कोयला-कंडी
जली सदा, अब होती ठंडी
तज अपना इहलोक यहीं पे
चल परलोक चलें!
आ, अब लौट चलें!

काया अपनी साथ छोड़ती
सांसें जीवन आस छोड़ती
मधुमासों के थके हैं घोड़े
पतझड़ ने सब पत्ते तोड़े
'जीव अमर और शरीर फानी
कहते सभी गुणी और ज्ञानी
बस दो बूंद गिरा पानी को
क्यों अब होठ चलें!
आ, अब लौट चलें!

जीवन भर मेले ही मेले
किंतु है जाना सिर्फ अ केले
रहे साथ मंजिल-दर-मंजिल
गुम हैं अब वो, कहाँ है ओझल
चलने की अपनी बारी
सोती है ये दुनिया सारी
क्यों बे-बात जगायें जग को
चल अनटोक चलें!
आ, अब लौट चलें!

भारत देश

काजल [illegible]
बी.एस.सी. [illegible]

प्यारा भारत देश हमारा
जग भर में वह सबसे न्यारा
यहाँ की धरती उगले सोना,
हमें नहीं पड़ता कुछ खोना।
सूरज सबसे पहले दमके
चाँद भी है रात में चमके।
कुछ-कुहक कर कोयल बोले
कानों में मिसरी सी घोले।
गाँवों की शोभा देख निराली,
है खेतों में छाई हरियाली।
ऐसा प्यारा देश हमारा,
हम सबको प्राणों से प्यारा

अनमोल दहशत

प्रियंका
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

एक सैनिक जो कम उम्र में शहीद हो गया
और मरते वक्त उसने अपनी माँ को
क्या खत लिखा होगा .....

सीमा पर एक जवान जो शहीद हो गया
संवेदनाओं के कितने बीज बो गया।
तिरंगे में लिपटी लाश उसके घर पर आ गई
सिहर उठीं हवाएँ, उदासी छा गयी
तिरंगे में रखा खत, जो उसकी माँ को दिख गया
मरता हुआ जवान उस खत में लिख गया
बलिदान को अब आँसुओं से धोना नहीं है
तुझको कसम है माँ मेरी रोना नहीं है
मुझको याद आ रहा है, तेरी उंगली पकड़ना
कंधे पर बिठाना मुझे बाहों में जकड़ना
पगडंडियों पर खेतों में तेज भागना
सुनने को कहानी तेरी रातों को जागना।
पर बिन सुने कहानी तेरा लाल सो गया,
सोचा था तूने और, कुछ और हो गया।
मुझ-सा कोई घर में, तेरे खिलौना नहीं है
तुझको कसम है माँ मेरी की रोना नहीं है।
सोचा था तूने अपने लिए बहू लायेगी
पोते को अपने हाथ से झूला-झुलायेगी
तुतलाती बोली पोते की सुन न सकी माँ
आँचल में अपने कलियाँ तू चुन न सकी माँ
न रंगोली बनी घर में, न घोड़े पर मैं चढ़ा
वहाँ माँ तेरे आँचल का तो बिछौना नहीं है
तुझको कसम है माँ मेरी, रोना नहीं है।
बहना से कहना राखी पर याद न करे
किस्मत को न कोसे, कोई फरियाद न करे
अब कौन उसे चोटी पकड़कर चिढ़ाएगा
कौन भाई-दूज का निवाला खाएगा
कहना की भाई बनकर अबकी बार आऊँगा
सुहागवाली चुनरी अबकी बार लाऊँगा
अब भाई-बहना में मेल होना नहीं है
तुझको कसम है माँ मेरी रोना नहीं है
सरकार मेरे नाम से कई फंड लाएगी
चौराहे पे तुझको तमाशा बनाएगी
अस्पताल, स्कूलों के नाम भी रखेगी
अनमोल शहादत का कुछ दाम रखेगी
दलालों की इस दलाली पर तू थूक देना माँ
बेटे की मौत की कोई कीमत न लेना माँ
भूखे भले, मखमल पर हमको सोना नहीं है
तुझको कसम है माँ मेरी रोना नहीं है।

यदि तुम भूले हुए लोगो के लिए द्वार बन्द कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जाएगा।

विश्वास

पू. पूजा कर्डे
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

कहानी तीन घनिष्ठ मित्रों की– 1. ज्ञान 2. धन 3. विश्वास
जब ये तीनों अलग हो रहे थे तो एक दूसरे से पूछने लगे कि तुम मुझे कहाँ मिलोगे?
ज्ञान– "मैं तो मंदिर मस्जिद और विद्यालय में मिलूँगा।"
धन– "मैं अमीरों के पास मिलूँगा"
विश्वास चुप था। दोनों ने विश्वास से चुप होने की वजह पूछी तो विश्वास ने रोते हुए कहा,
"मैं अगर एक बार चला गया तो फिर नहीं मिलूँगा।

उस आदमी का जीना

पू. मोनिका
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

वह जीत कोई जीत नहीं होती है
जो मिली हो बिना युद्ध के मैदान में उतरे।
वह मंजिल कोई मंजिल नहीं होती है।
जहाँ पहुँचा गया हो किसी के कंधे पर चढ़के।
वह सुख कोई सुख नहीं होता है।
जो मिला हो बिना दुख पीड़ा की आँच से गुजरे।
उस आदमी का जीना कोई जीना नहीं होता।
जो चला हो फकत अपनी ही जीत
अपनी ही मंजिल और अपने ही सुख के बारे में ।।

मन के हारे हार है

काजल लाजर
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

'मन के हारे हार, मन के जीते जीत' एक व्यक्ति ने कहा मैं सर्वोत्तम कार्य करता हूँ। मैं जानता हूँ कि सर्वोत्तम कार्य मैं कैसे कर सकता हूँ और मैं निश्चय ही करता रहूँगा। उस व्यक्ति के जीवन का घटनाक्रम इस प्रकार है :–

1831 में व्यवसाय में असफलता
1832 में विधानसभा चुनाव में हार
1833 में व्यवसाय में पुनः असफलता
1834 में विधान सभा में जीत
1836 में दलबदली
1840 में मानसिक विकास
1843 में कांग्रेस के चुनाव में पराजय
1846 में कांग्रेस के चुनाव में पुनः हार
1848 में सैनेट के चुनाव में हार
1856 में उपराष्ट्रपति के चुनाव में हार
1858 में सैनेट के चुनाव में पुनः हार
1860 में अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए।

यह घटनाक्रम अब्राहिम लिंकन के जीवन का है। जिन्होंने अपने जीवन में बार–बार हारकर भी हार नहीं मानी और अन्त: में अपने लक्ष प्राप्ति में विजयी हुये। जीवन में हार मानना जीवन को असफल बनाना है इसलिए हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए कहा है .....

"कुछ लोग वक्त के सांचो को ही बदल जाते हैं माना कि वक्त माफ नहीं करता उनको
जो वक्त से आगे निकल जाते है।"

हिन्दुस्तान

रिंकी लाजर
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

कल एक बुजुर्ग से मुलाकात हुई
मैंने पूछा बाबा इतने दुखी क्यों हो ?
मरे, कटे, फटे, बदहाल क्यूँ हो
जिस्म छलनी है, हाथ कटे है
कौन हो, किसने ये हालत तुम्हारी बनाई है ?
बाबा बोले–बेटा मैं हिन्दुस्तान हूँ'
मैं बोला हिन्दुस्तान..... ?
'हिन्दुस्तान तो जवान होना चाहिये।
भला साठ साल की भी कोई उम्र होती है
और आप तो लगते ही सौ से भी
ऊपर के।'
बोले बेटा मैं इससे भी ज्यादा बड़ा हूँ।
तुम्हीं बताओ जिसकी छत्तीस औलादें
थीं
और अब हो गई हैं सौ
सब निकम्मी और नाकारा,
उन्हें खून देता हूँ रोज
और वे अब मुझे रुलाती है बेनागा।
मेरी ही औलादें, मेरी ही
औलाद के खून की प्यासी हैं
बलात्कार, हत्या, बेईमान,
रिश्वत, चोर बाजारी है।
मैं एक जिंदा लाश हूँ
अब बे–आस, बे–औलाद हूँ।'
मैनें कहा – 'बाबा इतने निराश न हो
कोई तो तरीका निकलेगा
कुछ तो हालात बदलेंगे
कोई तो रोशनी दिखलायेगा।'
बाबा न गहरी नजर से देखा।
एक जलजला सा आने लगा
चारों दिशाएँ काँप उठीं
बाबा बोले इस पल का इंतजार था
मेरे शरीर में वो बीज आ गया।
जल्द ही मेरा काबिल बेटा आयेगा
वो नया हिन्दुस्तान बनायेगा।
जो मेरा हमदर्द होगा
चार जिस्म एक जान होगा
वह किसी जाति, धर्म का
ठेकेदार भी नहीं होगा
उसे न कोई काट सकेगा
और न कोई बाँट सकेगा
वही होगा नया हिन्दुस्तॉं!
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।

बरसात

कु. मनीषा
एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

मेघ!
मुझे था तुम्हारा इन्तजार
पूछ रही थी सबसे .....
मेघदूतों से, मौसम से, कब बरसोगे?
तुम बरसो तो मैं भी बरस जाऊँ
कब से थाम रही हूँ अपने आँसू
तुम्हारी तरह वे भी
नयनों के कौर तक आकर
मानसून की तरह लौट जाते हैं
मेरे आँसू चुपचाप बादल बनकर
मन में घनघनाते हैं
बाहर आने का साहस नहीं कर पाते
इस भय से कि कहीं
कोई यह न कह दे कि
दूसरों का गम पीने वाला
देखो खुद रो रहा है
इसलिए तुम्हारे आने पर
मैं खूब नहाई हूँ
ताकि बरसात में नहाते वक्त
आँसुओं की अविरल धारा
कोई देख न ले।

क्या रोये

कु. मोनिका शर्मा
एम.ए. द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

क्यों रोये तू उसकी चाह में,
छोड़ गया जो छूटती सांसों में।
मिल जाएगी एक दिन तेरी दुनिया में,
ढूँढता है खुशियाँ, खोज अपने
अन्तर्मन में।
वो एक कतरा दे गया तड़पने के लिए,
भूल जा उसे जीने के लिए।
तू तो राही है मंजिल का चलने के लिए,
छोड़ दे जिद देख! वो अब नहीं
आयेगी
तुझे आवाज देने के लिए।
क्यों रोये तू उसकी चाह में,
छोड़ गया जो छूटती सांसों में।
ये तो दुनिया का दस्तूर है।
जो चाहे वह नहीं होता,
प्यार के बदले प्यार फिर नहीं
मिलता।
समेट ले अपनी चाह फिर से जीने को,
नई दुनिया बसाने और प्यार न
करने को।
क्यों रोये तू उसकी चाह में,
छोड़ गया जो छूटती सांसों में।

वक्त और हालात सदा बदलते रहते हैं,
लेकिन अच्छे दोस्त और अच्छे रिश्ते कभी नहीं बदलते .....

अमन चाहता है

कु. नेहा नागर
बी.ए. प्रथम वर्ष

अमन चाहता है हमारा वतन
करो यत्न ऐसे खिले ये चमन
भाषा के झगड़े, या सीमा विवाद
नदियों का जल हो या मजहबी फसाद
रें ध्यान इतना ना टूटें ए मन
अमन चाहता है .....
बाँधों का निर्माण, मिलों का सृजन
शहरीकरण हो या अणु अस्त्रों का शमन
सोचो न बिगड़े यह पर्यावरण
अमन चाहता है .....
सुजलां सुफलां की है यह धरती
अज्ञान वश हो न जाये परती
न भूखी रहे अब मानव की बस्ती
जनसंख्या पर हो प्रभावी नियंत्रण
अमन चाहता है .....
शिक्षा सभी के लिये हो सुगम
चिकित्सा बिना हो न जाये निधन
मिले सबको रहने का अपना भवन
अंध विश्वासों की होलिका हो दहन
अमन चाहता है .....
आयी वर्षा की बहार
बरसे पानी की फुहार
वृक्षों पर झूले लहराये
गूंजे राग मल्हार
खेत ताल सब एक हुए है
दादुर करे पुकार
प्यासी धरती तृप्त हुई है
पक्षी करे कुहार .....
जन मानस सब सुखी हुए
पुरवा करे गुंजार
सोंधी मिट्टी महक उठी
हरित बना श्रृंगार
नीलाम्बर में टके सितारे
चंदा ले मनुहार
शत्रु मित्र सब बैर भुलायें
ढूँढे आश्रय चारू
आयी वर्षा की बहार
बरसे पानी की फुहार

गजब

पूजा नागर
बी.ए. तृतीय वर्ष

न पूछो कौन है, क्या राह में लाचार बैठे हैं
मुसाफिर हैं, सफर करने की
हिम्मत हार बैठे हैं।
हम मोड़ पर एक नई उलझन हैं
कदमों को सम्भालना मुश्किल है
गजब है प्रभु आपकी पाठशाला
विषभरी मनु जाति के लिए
मानों मदप्याला
खेल खिलौने हों या हो पढ़ाई
दम तोड़ती मनु जाति को, राह दिखाई
समाधान देती शिष्यों को निराला
गजब है, हे प्रभु आपकी पाठशाला

सरस्वती वन्दना

अर्चना शर्मा
एम०ए० प्रथम वर्ष

विद्यादात्री शुभगुणयुता पावनी पालिका या,
ज्ञान वृद्धिं विविधिषति या वन्दिता सेविता भो ।
पूजनीया विविधविधिना मानवान् सर्वलोके,
नम्राभावै मनसि सततं नौम्यहं शारदां ताम् ।
हस्ते नित्यं धरति शुभदा वल्लकी मानयुक्ता,
पादौ यस्या कलयति शुभा भूमिलोके सदैव ।
श्रद्धापुष्पं धरति हि सदा पावनी शाटिका वा,
विद्यादात्री हरति जडतां नौमि तां शारदामहम् ।।
या देवी, पद्मे विराजिता,
संसारे, सर्वेषु पूजिता ।
ज्ञानं या सर्वान् ददाति भो,
तां देवी नित्यं नमाम्यहम् ।।
शुक्लां या कीर्तिं प्रवाहयति,
विद्यानां, दानं ददाति वै ।
हस्ते या वीणा सुधारिणी,
तां देवी, प्रेम्णा नमाम्यहम् ।।

देवस्तुतिः

वेतेन्द्री
एम०ए० द्वितीय वर्ष

1. शिरसि हि शुभश्चन्द्रो, यस्य भाति नु सर्वदा ।
तं शिवं भावयुक्तं वै, मनसा प्रणमाम्यहम् ।।1।
2. सृष्टिकर्ता च हर्ता यः पुष्पे जलकणो यथा ।
स ब्रह्माणीपतिर्नित्यं, सर्वलोकेषु शोभते ।।2।।
3. ब्रजवासी हि यः कृष्णो, ब्रह्माण्डधारकः मुखे ।
वध करोति पापीनां, ते देवं प्रणमाम्यहम् ।।3।।
4. कृष्णस्य दिव्यसौन्दर्यं सम्मोहति नु गोकुलं ।
आकर्षयति नृत्याय, सर्वान् गोकुलवासिनः ।।4।।
5. वेणुवादनं श्रुत्वा ये, कार्यं कुर्वन्ति सर्वदा ।
ते ब्रजवासिनः नित्यं, तृप्ताः सन्ति दिने दिने ।।5।।

अग्निपुराणे प्रकृतिः

[illegible]
एम०ए० द्वि०

अग्निमहापुराणेऽत्र प्रकृतिवर्णनं शुभम् ।
चन्द्रमासो यथा रात्रौ सूर्योऽपि दिवसे तथा ।।
प्रकृतितत्त्वरूपं हि पुराणे सुशोभते मुदा ।
सप्तदशे मुदाऽध्याये प्रकृतिर्मिलति स्वयम्
पञ्चविंशेनु तत्त्वैर्हि निर्मिता प्रकृतिर्मुदा ।
एकमत्याधिकं तत्त्वं पुराणे हि समाहितम् ।।
भासते गुणयुक्तो हि काले ह्यतिसुशोभन
नक्षत्रेषु तथा रम्या गगने रोहिणी शुभा ।।

प्रहेलिकाः

[illegible]
बी०ए० द्वि०

1. हिमस्य आलयोऽस्मि, तिष्ठामि सततं गृहे
न चाहं गृहं अस्मि, न गिरे शिखरं तथा ।
2. नित्यं प्रातः आगच्छति, बोधयति सर्वजनान् च
अन्धकारं च अपाकरोति, किं त्वं जानासि तस्य नाम
3. केरलात् आगतः, कृष्णयुवक एकः
चत्वारः तस्य कर्णाः, शिरसि च छत्रम् ।
4. विविधानि तु रूपाणि, दर्शयामि क्षणे-क्षणे
वदामि विविधान् वर्णान्, यद्यपि नास्ति मे मुखम्

उत्तर :

फ्रिज (प्रशीतनयन्त्रम्) 2. सूर्यः
3. लवङ्गः 4. दूरदर्शनम्

शिवस्तुति

अंजली भास्कर
बी०ए० प्रथम वर्ष

1. ललाटे शोभते चन्द्रः, कण्ठे यस्य च नीलिमा ।
जटासु हि स्थिता गंगा, तं शिवं प्रणमाम्यहम् ।।
2. गणेशो यस्य पुत्रो हि, भार्या नु पार्वती तथा ।
सिंहचर्मासनं तस्य, तं शिवं नमाम्यहम् ।।
3. यो निवसति कैलाशे, सर्वलोकेषु पूजितः
नीलकण्ठः शुभो देवस्तं शिवं प्रणमाम्यहम् ।।
4. संहारको हि दुष्टानां, सज्जनानाञ्च पालकः ।
यः प्रभुर्ननु सर्वेषां, तं शिवं नमाम्यहम् ।।
5. ताण्डवं यो करोतीह, हस्ते च त्रिशूलं सदा ।
गात्रे भस्म च पावनं, तं शिवं प्रणमाम्यहम् ।।

महाभारते इच्छामृत्युः

संजू
एम०ए० प्रथम वर्ष

संगोष्ठी शास्त्रसम्या प्रचलति समुदं या समारोह इद्धा
नत्वाध्यक्षं नु तस्यां पुलकितमनसा तां सभां नो गुरूञ्च ।
इच्छामृत्युर्विशिष्टः स्फुटपदचरितो यो महाभारतेऽस्मिन्
प्रेम्णा भव्यं मुदा तं विवरिषति हृदाऽयं नरेन्द्रः स्ववाण्या ।1।
अद्वैषेयं ज्वलन्ती जगति नु महती चिन्तनीया समस्या
स्वेच्छामृत्युर्नु साक्षात् मिलति नु समुदं यो महाभारते हि ।
भीष्मो भव्यः सुवीरः पुलकितमनसा ख्यात इद्धो नु लोके
त्यक्त्वा प्राणान् स लेभे स्वयमिह च यशश्चेप्सितं तं नु मृत्युम्
।2।
एवं व्यासेन दत्तं स्वयमिह सुलभं तत् समाधानमिष्टं
लोके यो ह्यूर्ध्वरेता निजदृढतपसा तेन शीघ्रं नु लेभे ।
स्वेष्टो मृत्युः सदैव स्फुटपदकथितो दर्शनीयः प्रसिद्धः
संसारे काम्यमानो ह्यनुकृति परमः व्यासवाण्या समुक्तः ।3।

महाभारतीयसंवादसमीक्षणम्

नीता
एम०ए० प्रथम वर्ष

पूज्या वन्द्या सभा या प्रचरति सततं नो विभागे प्रशस्या
नत्वा शुभ्रां सभां तां विबुधकवियणान् वन्दितं नो गुरुं तम् ।
संवादानां समीक्षेति विषयमिह यस्तं नु चित्वा मुदेयं
प्रेष्ठायामत्र सभायां पिपठिषति हृदा मोदमानोऽलकेयम् ।।

ज्येष्ठो यो पाण्डवानामभवदिह शुभः शोकभावेन युक्तो
मार्कण्डेयस्य पार्श्वे स्फुटपदभरितं वाक्यमेवं जगाद ।
लोकेऽहं भाग्यहीनो विगलितहृदयो दैन्यभावान्नु खिन्नो
दृष्ट्वा भार्या विपत्तौ पशुरिव विवशः शक्तिहीनो हि जातः ।।

"सुभाषितानि"

अंजना
बी०ए० प्रथम वर्ष

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा वयं नावसीदति ।।
यथा हयेकेन चक्रेण न रथस्थ गतिर्भवेत् ।
एवं परुषकारेण विनादैवं न सिद्ध्यति ।।
बलवानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धनः ।
श्रुतवानपि मूर्खोऽसौ यो धर्मविमुखी जनः ।।
चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः ।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः

Why Didn't you let me live ?

Aanchal Naga
B.A. I

I was just a girl,
Who came in this world with closed eyes.
Thinking for a bright future.
But then why you didn't let me live ?
Is it my mistake that I was a girl ?
Then, how could you be so Cruel ?
That you didn't even care for my mothers tears,
Who was just begging you for my life.
Why didn't you let me live ?
Mom, I was so safe in your womb,
I wish I hadn't come in this cruel world,
The people here are devils,
I hate this world .....
Why didn't you let me live ?
I was not the burden.
I could've stood on my own legs;
Become a doctor or engineer,
All I needed was a chance to prove myself
Why didn't you let me live ?
I am the giver of life,
Who carries you for nine months.
Bear the pain of thousand bone cracks,
Then how can you think of killing me ?
Why didn't you let me live ?

Teachers

Pooja Naga
B.A. I

The World is full of people,
Some are big, some are small,
But when it comes to teachers,
They are best of all.
The teachers at the class door,
Making the students excitement more.
Telling about the activities to come,
Adding to the students excitement & Fun.
Encouraging us more to do,
Making us play games too.
Teachers work hard, Teachers never rest,
Therefore, they are the best
A Teachers is a candle which burns for us.
A Teacher is a friend, who gives comfort.
So let's thanks our teachers,
for the words they have taught us.

Do not wait for the perfect moment take the moment and take it.

My Nation

Priya Bansal
B.A. I

MATHEMATICS

Add - Friends
Subtract - Enemies
Multiply- Friendship
Divide - Enmity

COLLEGE IS PHONE

School Life is like reliance kar lo duniya Muthi mein.
College life is like a Airtel, Aisi Aazadi aur Kahan.
Married life is like Idea, Jo badal de aapki duniya.

MESSAGE FOR STUDENTS

This time is not for you to waste
use it according to your taste.

None will help you in your need.
Read my dear students read.

If you are really anxious to pass.
you must daily attend your class.

If you want to build your future.
Serve your parents obey your teachers.

Never do an evil deed.
Read my dear students Read.

Never be careless to class in college
Curiosity and attention is key of
knowledge

We are the masters of the unsaid words, but slaves of those we let slip out

(Winston Churchill)

MY INDIA

Priya
B.

Bombay for beauty
Delhi for Majesty
Goa for Romance
Bihar for Mines
Bengal for Writing
Punjab for Fighting
Himachal for pines
Uttar Pradesh for population
Kashmir for looking
Madras for Cooking
Rajasthan for renuncia
Orisa for Odissia
Kerala for Dance
Haryana for being happ

I LOVE MY COUNTRY

Ma
B.

I Love Punjab for Fighting
Bengal for Writing
Goa for Duty
Kashmir for beauty
Rajasthan for History
Maharasthra for victory
Mysoore for silk
Haryana for Milk.
Gujarat for Peace
Assam for tea leaves.
Kerala for Brain
U.P. for Sugar Cane
Himachal for app
Orissa for temples
Bombay for beau
Delhi for Majesty
Thus we can say
I Love my Country.

IT IS THE HOUR OF TRIAL THAT MAKES MEN GREAT,

NOT THE HOUR OF TRIUMPH.

राष्ट्रीय सेमीनार

"स्वाधीन भारत के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की रचनात्मक, क्रान्तिकारी भूमिका"
10 -11 नवम्बर-2016
प्रायोजक - आई.सी.एस.एस.आर.

National Workshop

Use of I.C.T. and e-Education Tools :
Techniques in higher Education and Research
From 22nd February, 2017 to 28th February,2017

वार्षिक क्रीड़ा समारोह

मुख्य अतिथि :- श्री नोरिस प्रीतम, स्पोर्टस जर्नलिस्ट, बी.बी.सी. न्यूज, (एन.डी.टी.वी.)

वार्षिकोत्सव – 2017

मुख्य अतिथि : प्रो० (डॉ०) आर० के० खाण्डल

भूतपूर्व कुलपति, उ०प्र० तकनीकी विश्वविद्यालय (UPTU)

विविधाञ्जलि

वार्षिक आख्या

सत्र - 2016-17

डॉ० अनीता रानी राठी
एसो० प्रो० अर्थ

उत्तर प्रदेश राज्य शिक्षा की इकाई के रुप में 'कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर ग्रामीण अंचल की छात्राओं को गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्रदान कर महिला सशक्तिकरण को यथार्थ स्वरुप प्रदान करने हेतु कृत संकल्प है। अपनी शैशवावस्था में महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर नौ विषय एवं B.A., B.Sc. तथा B.Com की कक्षा प्रारम्भ हुई। वर्तमान में शासन द्वारा दूरदर्शिता एवं पारदर्शिता के फल स्वरुप तथा प्राचार्यों के अथक प्रयासों, प्राध्यापकों के लगन एवं कर्मठता के कारण अपनी प्रगति के उत्तरोत्तर सोपान चढ़ते हुये आज महाविद्यालय में नौ विषयों में PG तथा B.Ed की कक्षाएं संचालित है।

किसी भी महाविद्यालय की समृद्धि एवं विकास गति का परिचायक उसमें अध्ययनरत शिक्षार्थी होते हैं। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 26 छात्र/छात्राओं से प्रारम्भ करते हुये अब महाविद्यालय में 1830 छात्रायें अध्ययनरत हैं जो विकास की अनवरत प्रक्रिया का प्रत्यक्ष प्रमाण है। शिक्षकों के अथक प्रयास एवं छात्राओं की लगन से सत्र 2015-16 का परीक्षा परिणाम औसतम 95 प्रतिशत रहा है। महाविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त छात्राओं की तार्किक, बौद्धिक एवं सर्वांगीण विकास हेतु समय-समय पर विभागीय परिषदों द्वारा विभिन्न प्रतियोगितायें जैसे वाद-विवाद, कविता पाठ, निबन्ध स्लोगन पोस्टर एवं सामान्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताएं सम्पन्न करायी जाती हैं तथा इनमें विजयी छात्राओं को सत्रान्त 'वार्षिकोत्सव' में पुरस्कृत भी किया जाता है।

"साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः।।" इस बात को ध्यान में रखते हुये, छात्राओं की नैसर्गिक सुलभ रुचियों एवं प्रतिभाओं के संवर्धन हेतु साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद् द्वारा वर्षपर्यन्त मेहंदी, रंगोली, कहानी लेखन, त्वरित आशु भाषण, लघु नाटिका इत्यादि अनेकानेक प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है जिनमे छात्राएं सोत्साह एवं सोत्साह भाग लेती हैं।

लोकतान्त्रिक भारत राष्ट्र के युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश शासन के आदेशानुसार लिंगदोह कमेटी के नियमानुसार महाविद्यालय में दिनांक 12.11.2016 को छात्रसंघ चुनाव निष्पक्ष रुप से कराये गये जिसमें कु. [illegible] भाटी(अध्यक्ष), कु. पिंकी नागर को उपाध्यक्ष, कु. रुबी विकल को सचिव तथा कु. आरती को सह-सचिव के रुप में चुना गया।

महाविद्यालय की छात्राओं को महिलाओं के उत्थान व समान अधिकारों के प्रति सचेत करने हेतु दिनांक 06.09.2016 को 'महिला प्रकोष्ठ का चयन किया गया जिसके अन्तर्गत सत्र 2016-17 में दिनांक 08.11.2016 को **'महिला सशक्तिकरण तथ्य एवं सत्य'** विषय पर एक वाद विवाद प्रतियोगिता दिनांक 09.02.16 को पोस्टर प्रतियोगिता तथा दिनांक 25.01.16 को महिला मतदाता जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। सत्र 2016-17 में महाविद्यालय से '151' वीमेन पावर ऐन्जिल एक गर्जियन एन्जिल' का भी चयन किया गया।

महाविद्यालय में वर्षपर्यन्त अनेकानेक समारोह भी आयोजित किये गए यथा - स्वतंत्रता पखवाड़ा (आजादी - याद करो कुर्बानी), गाँधी एवं शास्त्री जयन्ती समारोह, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, मानवाधिकार दिवस, गणतंत्र दिवस समारोह इत्यादि। अगस्त 16 को आयोजित अर्न्तमहाविद्यालयीय प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने के कारण कु. चित्रा शर्मा (B.A. III) को नेहरु युवा केन्द्र, गाजियाबाद द्वारा National Youth Volunteer के रुप मे चयनित किया गया।

छात्राओं को रोजगारपरख जानकारी देने के उद्देश्य से महाविद्यालय में रोजगार प्रकोष्ठ एवं Career Counselling Cell संचालित है जिसके तत्वावधान में दिनांक 24.09.16 को UNDP कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत में नयी दिशा' संस्था द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे छात्राओं को FMGC, Retail Telecom Automobile इत्यादि क्षेत्र में नौकरियों की संभावनाओं की जानकारी दी गयी। डॉ. अनीता सिंह व डॉ. मिन्टू द्वारा दिनांक 26.11.16 को 'पुरातन छात्र

सम्मेलन' तथा 'छात्रा अभिभावक समागम' का भी आयोजन किया गया तथा डॉ. निधि रायजादा द्वारा दिनांक 21.9.16 को अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस' के अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना से सम्बन्धित इकाईयां जैसे NCC, NSS तथा Rangers कार्यरत है। जिनके अन्तर्गत वर्षपर्यन्त विभिन्न प्रकार के शिविर आयोजित किये जाते हैं। वर्तमान सत्र मे राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के अन्तर्गत विभिन्न एक दिवसीय एवं सात दिवसीय शिविर के माध्यम से पौधारोपण, श्रमदान, मतदान, पहचान पत्र पंजीकरण इत्यादि कार्यक्रम सम्पन्न कराये गए। साथ ही महाविद्यालय की Rangers इकाई ने विश्वविद्यालय द्वारा VMLG College, Ghaziabad में आयोजित 'रेंजर्स समागम में प्रतिभाग कर उपविजेता का स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया तथा महाविद्यालय की तीसरी इकाई दबब में 53 छात्राएं registered है जिन्होने इस वर्ष विभिन्न CATC, IGC Camps में प्रतिभागिता की है। इन छात्राओं को Drill, Map reading, First aid and weapon training का प्रशिक्षण भी NCC अधिकारियों द्वारा दिया गया।

महाविद्यालय में वैचारिक एवं शोध कार्य को समृद्ध करने के उद्देश्य से ICSSR अनुदानित 'स्वाधीन भारत के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की रचनात्मक क्रान्तिकारी भूमिका' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रुप में पधारे माननीय शिक्षा निदेशक उ. शिक्षा Dr. R.P. Singh ने महाविद्यालय का निरीक्षण भी किया तथा महाविद्यालय की प्राचार्या एवं समस्त स्टाफ की उनके प्रयासों के लिए भूरि भूरि प्रशंसा की। महाविद्यालय में इतिहास राजनीति, विज्ञान, भूगोल, समाजशास्त्र इत्यादि विषयों में इस सत्र में लगभग 15 छात्र Ph.D अथवा PDF हेतु registered है।

महाविद्यालय ग्रामीण अंचल में स्थापित होने के कारण बहुत सी छात्राएं परिस्थितिवश संस्थागत Course में सम्मिलित नहीं हो पातीं। इनकी सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए एवं शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु IGNOU अध्ययन केन्द्र सफलता पूर्वक संचालित हो रहा है जिसमें लगभग 400 विद्यार्थी विभिन्न विषयों में पंजीकृत हैं।

सम्प्रति महाविद्यालय में शासन द्वारा अनुदानित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला दिनांक 22.02.17 से दिनांक 28.02.2017 तक आयोजित की जा रही है तथा हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यशाला के सकारात्मक पहल हमारे समक्ष आएंगे।

महाविद्यालय में विकास की असीमित सम्भावनाओं को देखते हुए प्राचार्या डॉ. करुणा सिंह निरन्तर नई योजनाओं के क्रियान्वन हेतु प्रयासरत रहती हैं। प्राचार्या महोदया के कुशल निर्देशन के परिणामस्वरुप महाविद्यालय आगामी सत्रों मे सफलता के नये आयाम स्थापित करेगा, ऐसा हमारा दृढ विश्वास है।

डॉ० कलाम

अगर आप फेल हो गए, तो कभी निराश मत होना, क्योंकि FAIL का अर्थ है 'First Attempt In Learning' और End कभी अंत नहीं होता बल्कि END का मतलब होता है, 'Effort Never Dies'

हिन्दी परिषद्

डॉ० मि
असि० प्रो० हि

सफलता के उच्चतम शिखर पर अग्रसर होने के लिए विषय सम्बन्धी अध्ययन के अतिरिक्त शिक्षणेत्तर कार्यकलापों सहभागिता आवश्यक है। महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं के विकास व उनके व्यक्तित्व निर्माण में न केवल शिक्षा का वि महत्व है वरन् इसके साथ–साथ अनेक शिक्षणेत्तर गतिविधियां भी इसमें सम्मिलित होती हैं। छात्राओं की बौद्धि विश्लेषणात्मक और सृजनात्मक दोनों क्रियाओं के विकास के लिये महाविद्यालीय परिषदें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर है। हिन्दी साहित्य परिषद के तत्वावधान में समय–समय पर अनेक आयोजन किये जाते हैं जिनका उद्देश्य हिन्दी भाषा के साहित्यिक परम्परा से छात्राओं को परिचित कराकर हिन्दी भाषा के प्रति उनमें निष्ठा व अनुराग उत्पन्न करना है। इ उद्देश्य की पूर्ति हेतू दिनांक 18–10–2016 को हिन्दी विभागीय परिषद् का निम्नवत् गठन किया गया –

संरक्षिका –	डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या)
परिषद् निदेशक –	डॉ० रश्मि कुमारी
अध्यक्ष –	कु० संजय, एम.ए. द्वितीय
सचिव –	नेहा नागर, एम.ए. प्रथम वर्ष
कक्षा प्रतिनिधि –	रेनू, आकांशी, राखी

हिन्दी विभागीय परिषद् के तत्त्वावधान में सूक्ति लेखन एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सूक्ति लेख प्रतियोगिता में कु. संजय, कु. मनीषा एवं कु. निधि क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं। निबन्ध लेखन प्रतियोगि में नेहा नागर प्रथम भावना देवी द्वितीय रुबी विकल तृतीय स्थान पर रहीं। हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत म कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध कवि डॉ० अशोक मैत्रेय, कविवर आशुतोष आज़ाद श्री चेतन एवं श्रेयस्कर गौड ने अपनी कविताओं से समां बाँध दिया। दिनांक 11–12 दिसम्बर को हिन्दी विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्री संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

संस्कृत परिषद्

डॉ० दीप्ति वाजपेय
परिषद् प्र

"सुवर्णा सदवृत्ता विविधललितालङ्कृतिचणा,
गुणाढ्या निर्दोषा विबुधनिवहाराधितपदा।
सुरीतिप्रख्याता भवविभवरुपाश्रितरसा,
सदेयं शर्वाणी जयतु सुखाणीह सततत्।।"

देववाणी, सुखवाणी, गीर्वाणी इत्यादि नामों से व्यवहत संस्कृत भाषा अपनी प्राचीनता, वैज्ञानिकता, व्यापक शब्दको दर्शन एवं साहित्यिक समृद्धता तथा अन्य भाषाओं की जननी होने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति को सम्यक् त परिलक्षित करने की दृष्टि से अद्वितीय है।

वैश्वीकरण के युग में संस्कृत भाषा की श्रेष्ठता सिद्ध करने एवं संस्कृत के महत्त्व से नवीन पीढ़ी को सुपरिचित क

के उद्देश्य से विगत सत्रों की भाँति सत्र 2016–17 में भी संस्कृत परिषद् का गठन किया गया।

परिषद् के गठन के उपरान्त सर्वप्रथम दिनांक 15.10.16 को संस्कृत परिषद् के तत्त्वावधान में "अभिविन्यास कार्यक्रम" का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत विभाग प्राध्यापकों द्वारा संस्कृत अध्ययन की महत्ता, परिषद् के अन्तर्गत सत्र पर्यन्त संचालित होने वाली विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं की रुपरेखा प्रस्तुत की गई, साथ ही छात्राओं की विभिन्न समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 25.10.16 को परिषद् के अर्न्तगत 'संस्कृत साहित्य भाषा उन्नयन में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान' विषयक विभागीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के पूर्वाह्न में डॉ. दीप्ति वाजपेयी द्वारा उपयुक्त विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा गया कि संस्कृत भाषा का महत्त्व एवं वैश्वीकरण के फलस्वरूप उत्पन्न नवीन चुनौतियों का समाहार कर संस्कृत के उन्नयन में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का विशेष महत्त्व है। कार्यशाला के अपराह्न में डॉ० नीलम शर्मा एवं श्रीमती कनक लता द्वारा छात्राओं को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न प्रयोगात्मक पक्षों से अवगत कराया गया।

दिनांक 30.01.17 को संस्कृत परिषद् के तत्त्वावधान में प्रसार व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत डॉ. वाचस्पति मिश्र एसो. प्रो. संस्कृत मेरठ, द्वारा छात्राओं को 'छंद निर्माण' की तकनीकियों से परिचित कराया गया। डॉ. वाचस्पति मिश्र एवं विभाग प्राध्यापकों के सहयोग से छात्राओं ने विभिन्न छंदों का निर्माण किया। अपराह्न में छात्राओं के लिए 'करियर कांउसलिंग' सत्र का आयोजन भी किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. वाचस्पति मिश्र ने छात्राओं को रोजगारपरक जानकारी उपलब्ध करायी। तत्पश्चात् क्रमशः डॉ. एस.एस. यादव, डॉ. दीप्ति वाजपेयी, डॉ० नीलम शर्मा एवं श्रीमती कनक लता द्वारा राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट), संस्कृत विषय के विभिन्न पाठ्यक्रमों (ज्योतिष, शिक्षण, कर्मकाण्ड, अनुवादक इत्यादि), देश–विदेश में संस्कृत अध्ययन की संभावनाओं एवं शोधकार्यो से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान प्रदान किया गया।

दिनांक 28.3.17 को संस्कृत परिषद् के अन्तर्गत "भूतपूर्व छात्रा समागम" का आयोजन किया गया। समागम में पुरातन छात्राओं ने विभाग में उपस्थित होकर प्राध्यापकों एवं अन्य छात्राओं से अपने अनुभव सांझा किये एवं भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला।

उपर्युक्त गतिविधियों के अतिरिक्त परिषद् में निबन्ध प्रतियोगिता एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। निबन्ध प्रतियोगिता में कु. गीता एम.ए. प्रथम वर्ष ने प्रथम स्थान, कु. मंजू एम.ए. द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान एवं कु. अन्जली, बी.ए. प्रथम वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में कु. सरिता बी.ए. प्रथम ने प्रथम स्थान, कु. संजू नागर एम.ए. प्रथम वर्ष ने द्वितीय स्थान एवं कु. गीता एम.ए. प्रथम वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजयी छात्राओं को "विभागीय परिषद् पुरस्कार वितरण समारोह" में प्राचार्या महोदया के कर–कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अंग्रेजी परिषद्

डॉ० अनीता रानी राठौर
परिषद् प्रभारी

इस प्रतियोगी संसार में सभी के लिये शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। उचित शिक्षा भविष्य में आगे बढने के लिये बहुत से रास्तों का निर्माण करती है। यह हमारे ज्ञान के स्तर, तकनीकी कौशल और नौकरी से उच्च पद को प्राप्त करने के द्वारा हमें सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक रुप से मजबूत बनाती है। अतः आज के परिवेश में संवाद का प्रभावकारी तरीका भी आना चाहिए। वैश्विक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व बन चुका है। देश के गाँव–देहात और दूर दराज के इलाकों से आने वाली छात्राओं का प्रथम विकास अंग्रेजी भाषा का अध्ययन ही है।

गत वर्षो की भाँति इस सत्र 2016–17 में अंग्रेजी परिषद् के तत्त्वावधान में विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक

राजनीति विज्ञान परिषद्

कोई तुम्हारा साथ न दे तो उदास मत होना,
क्योंकि भगवान से बड़ा हमसफर कोई नहीं है ।

अर्थशास्त्र परिषद्

श्रीमती पव
अस्सि०प्रो० अर्थशास्त्र

महाविद्यालय का अर्थशास्त्र विभाग अपनी छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु सदैव प्रयासरत् है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र उपलब्धि के लिए विषय संबंधी अध्ययन के अलावा शिक्षणेत्तर कार्यकलापों में सहयोग आवश्यक है। विश्व में नवीन क्रांतिकारी संस्थात्मक एवं नीतिगत परिवर्तन निरंतर होते रहते हैं, जिनका ज्ञान छात्राओं के लिए आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु अर्थशास्त्र परिषद् द्वारा "विमुद्रीकरण एवं भारतीय अर्थव्यवस्था" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बी.ए. एवं एम.ए. अर्थशास्त्र की छात्राओं ने सहर्ष भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा–

प्रथम स्थान– कु. नेहा M.A. I[st] Sem.

द्वितीय स्थान– कु. सरिता M.A. I[st] Sem.

तृतीय स्थान– सोनिया M.A. IInd Sem.

छात्राओं को जागरूक करने हेतु "ऊर्जा का आर्थिक विकास में योगदान" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका परिणाम निम्नवत् रहा–

प्रथम स्थान– कु. सविता सिंह B.A. IIIrd

द्वितीय स्थान– कु. पप्पी रानी B.A. I[st]

तृतीय स्थान–कु. दिपांशी B.A. IIIrd

दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पुरस्कार एवं प्रमाण-प्र देकर उत्साहवर्धन किया गया। दोनों प्रतियोगितायें श्रीमती भावना यादव, श्रीमती पवन तथा डॉ. वन्दना के द्वारा सम्प कराई गयी।

इतिहास परिषद्

डॉ० निधि रायज़ा
परिषद् प्र

आदि काल से आधुनिक काल, पूर्व पाषाण युग से वर्तमान विज्ञान की अद्भुत उपलब्धियों से परिपूर्ण जैट युग तक अविराम मनुष्य के बहुआयामी जीवन–भौतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सम्पूर्ण मानवी क्षेत्रों में उन्नति एवं अवनति – इतिहास का कार्यक्षेत्र है। इसका गहन अध्ययन एवं उससे प्राप्त शिक्षा इतिहासकार उत्तरदायित्व है। इतिहास एक कुशल शिक्षक के रुप में समाज को, मनुष्य जीवन को सुन्दर एवं मानवीय गुणों से भरपूर में शक्तिशाली सहयोगी है। सुन्दर, सरल, मृदुल, सद्भावनापूर्ण, समृद्ध, सांस्कृतिक आचरणयुक्त जीवन हेतु मार्गद इतिहास से सहज प्राप्त होता है।

इतिहास के इन्हीं गुणों के परिणामस्वरुप महाविद्यालय के इतिहास विभाग में दिनांक 7 अक्तूबर 2016 को विभाग सभी प्राध्यापकों की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें विभागीय परिषद् का गठन किया गया जो निम्नवत् हैं –

संरक्षक – डॉ० करुणा सिंह, प्राचार्या

अध्यक्ष – डॉ आशा रानी, विभाग प्रभारी

उपाध्यक्ष – डॉ० निधि रायजादा, परिषद् प्रभारी

सचिव – डॉ० अनीता सिंह, एसो० प्रो० इतिहास

कोषाध्यक्ष – डॉ० किशोर कुमार, एसो० प्रो० इतिहास

इसके अतिरिक्त प्रत्येक कक्षा से दो–दो प्रतिनिधि छात्राओं का चयन किया गया, जिन्होंने सत्रान्त विभाग की गतिविधियों में सहभागिता की। प्रतिनिधि छात्राओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं –

1. कु. साक्षी शर्मा – बी.ए. प्रथम
2. कु. स्वाति नागर – बी.ए. प्रथम
3. कु. सायना सैफी – बी.ए. द्वितीय
4. कु. मेघा वर्मा – बी.ए. द्वितीय
5. कु. कंचन – बी.ए. तृतीय
6. कु. ज्योति – बी.ए. तृतीय
7. कु. रेशमा – एम.ए. प्रथम
8. कु. शीतल – एम.ए. प्रथम
9. श्रीमती भावना – एम.ए. द्वितीय
10. कु. भावना – एम.ए. द्वितीय

इससे पूर्व दिनांक 21/9/16 को 'अन्तर्राष्ट्रीय शांति दिवस' के अवसर पर इतिहास विभाग द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ० निधि रायज़ादा, एसो०प्रो० इतिहास के द्वारा किया गया। विभाग की प्राध्यापक डॉ० अनीता सिंह के द्वारा Power Point Presentation के माध्यम से छात्राओं को महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। मनुष्य जीवन में शांति की उपयोगिता पर व्यापक चर्चा की गई। इस अवसर पर छात्राओं हेतु एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसका शीर्षक 'शांति स्थापना में मदर टैरेसा का योगदान" था। कार्यक्रम के अंत में विभाग प्रभारी डॉ० आशा रानी द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

सत्रारम्भ में स्नातकोत्तर की छात्राओं हेतु एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को विषय की उपयोगिता, सम्बन्धित रोजगार की सम्भावनाओं पर व्यापक चर्चा की गयी। इसी सत्र में विभाग में भाषण प्रतियोगिता तथा पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसके परिणाम निम्नवत् रहे :–

1. भाषण प्रतियोगिता –

	छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	स्थान
1.	कु. कंचन	श्री भगवत सिंह	बी.ए. II	प्रथम
2.	कु. सोनम कुमारी	श्री बाबू राम	एम.ए. II	द्वितीय
3.	कु. तनु भाटी	श्री जितेन्द्र भाटी	बी.ए. III	तृतीय
4.	श्रीमती भावना	श्री नन्द किशोर	एम.ए. II	सांत्वना पुरस्कार

2. पोस्टर प्रतियोगिता –

1.	कु. शीतल	श्री सुभाष	एम.ए. I	प्रथम
2.	कु. प्रीति	श्री राम भरोसे	एम.ए. I	द्वितीय
3.	कु. ईरम	श्री इरफ़ान अली	एम.ए. I	तृतीय

उपर्युक्त सभी छात्राओं को दिनांक 30/1/17 को विभागीय परिषद् द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

समाजशास्त्र परिषद्

डॉ० सुशीला
परिषद् प्रभा

सामाजिक अन्वेषण के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आवश्यक है कि हम समाजशास्त्र विभाग की परिभाषा एवं परिधि अन्वेषण करें। अन्तर्विभागीयता की भूमिका सामाजिक अन्वेषण के सन्दर्भ में कहाँ आती है ? अतः प्रारम्भ करने के लिये हम केवल आधार स्वरुप यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि वस्तुतः "सामाजिक" शब्द का क्या अर्थ है एवं वहाँ से हम समाजशा की ओर कैसे जाते हैं।

समाजशास्त्र मानव व्यवहार व्यक्तियों का व्यक्तियों और समूहों के बीच और समूहों का सामाजिक संबंधो के लिए अध्ययन है। यह मूल संगठनों, संस्थानों और मानव समाज के विकास का अध्ययन है। अगर हमारी रुची मानव की सामाजि गतिविधियों और उसके संबंधों को जानने में है तो समाजशास्त्र आपके कैरियर के लिए अच्छा विकल्प हो सकता है। इस सामाजिक वर्ग, प्रजाति, संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन के विकल्प में अध्ययन किया जाता है।

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में समाजशास्त्र विषय का शुभारम्भ वर्ष 1997 स्नातक स्तर पर हुआ तथा वर्ष 2007 में स्नातकोत्तर स्तर पर छात्राओं को अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ। समाजशा परिषद् द्वारा महाविद्यालय में प्रत्येक सत्र में स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर अनेक गतिविधियां जैसे – समसामयि सामाजिक विषयों पर निबन्ध व पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन, वर्तमान ज्वलन्त सामाजिक मुद्दों पर वाद-विव प्रतियोगिता, समाजशास्त्र विषय से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता सेमिनार एवं सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता रैलियों आयोजन इत्यादि किया जाता है, समाजशास्त्र परिषद् द्वारा प्रत्येक वर्ष सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रा को वार्षिकोत्सव के अवस पर पुरस्कृत किया जाता है। सत्र 2015–16 में कु० पिन्की पुत्री श्री राधे श्याम एम.ए. द्वितीय वर्ष ने समाजशास्त्र में 67.05 अंक प्राप्त कर सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रा का पुरस्कार प्राप्त किया।

गृह विज्ञान परिषद्

डॉ० शिवानी व
परिषद् प्र

गृह विज्ञान ऐसा विषय है जो सभी क्षेत्रों में व्यापक है। विषय सम्बन्धी अध्ययन छात्राओं द्वारा व्याख्यान प्रयोगात्मक कक्षाओं में किया जाता है परन्तु छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षणेत्तर क्रिया कलाप भी अनिवार्य होते इसी को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक वर्ष गृह विज्ञान परिषद् का गठन किया जाता है। इस वर्ष भी गृह विज्ञान परिषद् का गठ किया गया जो कि निम्नवत् है –

परिषद् प्रभारी –	डॉ० शिवानी वर्मा
सह–प्रभारी –	श्रीमती शिल्पी
अध्यक्ष –	कु० सोनिका, एम.ए. (द्वितीय वर्ष)
उपाध्यक्ष –	कु० ज्योति, एम.ए. (प्रथम वर्ष)
सचिव –	कु० अरशी, बी.ए. (तृतीय वर्ष)
कक्षा प्रतिनिधि –	कु० आस्था, बी.ए. (प्रथम वर्ष)

गृह विज्ञान परिषद् के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं एवं अन्य कार्यक्रम विभाग में कराये गये।

सत्र 2016–17 में गृह विज्ञान परिषद् द्वारा दो प्रितयोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तु बनाना (Best out of waste)
2. पोस्टर प्रतियोगिता

प्रतियोगिताओं के परिणाम

अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुएँ बनाना

प्रथम पुरस्कार –	कु० शिफाली एम.ए. (प्रथम वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार –	कु० शीतल एम.ए. (प्रथम वर्ष)
तृतीय पुरस्कार –	कु० नेहा त्रिपाठी एम.ए. (द्वितीय वर्ष)

छात्राओं हेतु प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

बी.ए. (प्रथम वर्ष) एवं एम०ए० (प्रथम वर्ष) की छात्राओं के लिए गृह विज्ञान विभागीय परिषद् द्वारा "अभिविन्यास कार्यक्रम" आयोजित किया गया जिसमें विभाग प्रभारी डॉ० शिवचानी वर्मा ने कार्यक्रम रुपरेखा बताते हुए छात्राओं को व्याख्यान व प्रयोगात्मक कक्षाओं, अनिवार्य प्रतिशत उपस्थिति, आन्तिरक एवं वाह मूल्यांकन पद्धति से अवगत कराया। साथ ही विभाग में प्रतिवर्ष होने वाली शिक्षणेत्तर गतिविधियों की जानकारी दी। श्रीमती शिल्पी, असि० प्रोफेसर ने गृह विज्ञान के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर प्रकाश डाला एवं गृह विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की जानकारी छात्राओं को दी। 1 सितम्बर से 07 सितम्बर तक सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय पोषण सप्ताह' मनाया जाता है। गृह विज्ञान विभाग द्वारा भी "अन्तर्राष्ट्रीय पोरूाण सप्ताह" का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिदिन छात्राओं को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा पोषण सम्बन्धी जानकारी दी गई। कार्यक्रम रुपरेखा निम्नवत् है –

01 सितम्बर 2016 – 'पोषण' विषय पर प्रसार व्याख्यान का आयोजन
02 सितम्बर 2016 – अधिक प्रोटीन युक्त रेसिपि पकाना एवं प्रतियोगिता
03 सितम्बर 2016 – ग्राम बादलपुर के प्राइमरी स्कूल में पोषण स्तर पर सर्वेक्षण
04 सितम्बर 2016 – 'खाद्य एवं पोषण' पर सेमिनार
05 सितम्बर 2016 – प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
06 सितम्बर 2016 – निबन्ध लेखन प्रतियोगिता।
07 सितम्बर 2016 – छात्राओं द्वारा 'नुक्कड़ नाटक' का प्रदर्शन।

उपरोक्त कार्यक्रमों के साथ–साथ एम.ए. की छात्राओं द्वारा प्रतिदिन 'पोस्टर प्रस्तुतिकरण' भी किया गया।

छात्राओं को विषय सम्बन्धी व्यवसाय के सही चुनाव के लिए समय समय पर निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता पड़ती है। अतः छात्राओं के मार्गदर्शन हेतु "कैरियर काउन्सलिंग सेशन" का आयोजन किया गया जिसमें विभाग की प्राध्यापिकाओं शिवानी वर्मा एवं श्रीमती शिल्पी द्वारा गृह विज्ञान के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला गया।

'महिला उद्यमिता' विषय पर प्रोजेक्ट बना रहीं एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) की छात्राओं द्वारा हस्तनिर्मित वस्तुओं की प्रदर्शिनी एवं सेल" का आयोजन किया गया। स्वनिर्मित वस्तुओं में हैंडीक्राफ्ट की सजावटी वस्तुओं सहित विभिन्न प्रकार के जैम, अचार, मुरब्बो, लड्डू, पापड़, नमकीन, चिप्स भी शामिल थे। कुछ छात्राओं ने फैशन डिजायनिंग एवं ब्यूटी पार्लर सम्बन्धी प्रोजेक्ट भी प्रस्तुत किये। प्रदर्शिनी का उद्घाटन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह के कर कमलों द्वारा किया गया।

भूगोल परिषद्

डॉ. मीनाक्षी
परिषद

महाविद्यालय के शैक्षिक परिवेश मे छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ शिक्षा गतिविधियों की ओर भी ध्यान केन्द्रित किया है। छात्राओं की सृजनात्मकता एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता के विकास लिये भूगोल विभागीय परिषद् द्वारा सत्र 2016–2017 में क्विज तथा विभिन्न भौगोलिक समस्याओं पर उत्तम प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता कराई गयी जिसके परिणाम निम्नवत् रहे।

क्विज प्रतियोगिता :–

प्रथम स्थान– शिवांगी पुत्री श्री प्रवीन शर्मा बी.ए. द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान – आँचल पुत्री श्री अजीत सिंह, बी.ए. द्वितीय वर्ष
तृतीय स्थान – किरन पुत्री श्री भिकारी सिंह, बी.ए. प्रथम वर्ष

उत्तम प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता :–

प्रथम स्थान– सोनू नागर पुत्री श्री धीर सिंह नागर एम.ए. द्वितीय वर्ष
द्वितीय स्थान – पिंकी पुत्री श्री सत्यवीर सिंह, एम.ए. द्वितीय वर्ष
तृतीय स्थान – ज्योति जोशी पुत्री श्री राजेन्द्र कुमार जोशी, एम.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षाशास्त्र परिषद्

डॉ० सोनम
परिषद

शिक्षा विकोसोन्मुख प्रक्रिया है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की अर्न्तनिहित गुणों का विकास केवल पुस्तकीय ज्ञान द्वारा सम्भव नहीं है अपितु मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही समसामयिक शिक्षणेत्तर कार्यकलाप भी सहभागिता करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए महाविद्यालय में शिक्षाशास्त्र परिषद् के अन्तर्गत निबन्ध प्रतियोगिता आयोजत की गई। निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत् रहे –

प्रथम स्थान – यशोदा सैनी बी.ए. तृतीय
द्वितीय स्थान – अंजली बी.ए. प्रथम
तृतीय स्थान – भारती बी.ए. तृतीय

सभी विजयी छात्राओं को वार्षिकोत्सव 2017 में पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

संगीत परिषद्

डॉ० यवती अरुण
परिषद प्रभारी

संगीत के बिना जीवन अधूरा है। संगीत न केवल मन को आनन्दित करता है, यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक सुन्दर साधन है। वर्तमान समय में युवा वर्ग बड़ी संख्या में संगीत को जीविकोपार्जन के रुप में अपना रहे हैं। संगीत साधना है। संगीत की सुन्दरता, गम्भीरता, परिपक्वता को संगीत प्रेमी ही अनुभव कर सकता है। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये वर्ष 2014–15 में महाविद्यालय में संगीत को विषय के रुप में मान्यता प्राप्त हुई और आज यहाँ स्नातक स्तर पर अनेक छात्रायें अध्ययनरत् है।

सत्र के प्रारम्भ में ही संगीत विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसके अन्तर्गत सत्र पर्यन्त अनेक गतिविधियां हुई। स्नातक स्तर पर विभागीय परिषद् के तत्त्वावधान् में इस वर्ष एक शास्त्रीय संगीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक छात्राओं द्वारा सहभागिता की गई। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नवत् रहे –

क्रम सं०	छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा प्रति० में स्थान	
1.	सोनम देवी	श्री प्रकाश	बी.ए. II	प्रथम
2.	आरती रानी	श्री सोराम सिंह	बी.ए. I	द्वितीय
3.	सोनिया	श्री रनवीर	बी.ए. III	तृतीय

विजयी छात्राओं को पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

विभागीय परिषद् प्रतियोगिता के अतिरिक्त महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्वों यथा 26 जनवरी, 15 अगस्त व 2 अक्टूबर पर आयोजित कार्यक्रमों में छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई। वार्षिकोत्सव पर भी महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये व जिसके उत्साहवर्धन स्वरुप समस्त प्रतिभागी छात्राओं को प्रशस्ति पत्र दिये गये।

वाणिज्य परिषद्

डॉ० अरविन्द कुमार यादव
परिषद प्रभारी

छात्राओं के समुचित विकास और व्यावसायिक ज्ञान में वृद्धि हेतु प्रति वर्ष वाणिज्य परिषद् का गठन किया जाता है। इस वर्ष भी इसी उद्देश्य के साथ 8/11/2016 को कक्ष संख्या सी–5 में सभी छात्राओं की उपस्थिति में वाणिज्य परिषद् का गठन किया गया। परिषद् में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये :–

संरक्षक :	डॉ० करुणा सिंह
प्रभारी/अध्यक्ष:	डॉ० अरविन्द कुमार यादव
उपाध्यक्ष :	साक्षी नागर – बी०कॉम० III
सह–उपाध्यक्ष :	निशा शर्मा – बी०कॉम० II
सचिव :	कोमल – बी०कॉम० II

सह–सचिव : पूनम – बी०कॉम० II
प्रचार मंत्री : अंशु शर्मा – बी०कॉम० II

गत वर्ष 8 नवम्बर 2016 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 500रु. व 1000रु. के नोटों को चलन से बाहर कर विमुद्रीकरण (Demonetization) लागू किया। हम सभी लोगों ने इसके प्रभाव देखे। इसी का छात्राओं के ज्ञान पर प्रभाव जानने के लिये सकाय में विमुद्रीकरण (Demonetization) पर एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसके परिणाम निम्नवत् रहे :–

प्रथम स्थान – निशा शर्मा – बी.कॉम II
द्वितीय स्थान – अंजली नागर – बी.कॉम II
तृतीय स्थान – श्वेता नागर – बी.कॉम I

विमुद्रीकरण का मुख्य आशय था कि भारत की Economy को Cashless किया जा सके। इसी कारण एक भाषण प्रतियोगिता Cashless and Digital India' भी आयोजित की गयी जिसके परिणाम निम्न हैं :–

थिम स्थान – भावना गर्ग – बी.कॉम II
द्वितीय स्थान – निशा शर्मा – बी.कॉम II
तृतीय स्थान – महिमा शर्मा – बी.कॉम II

स्थान पाने वाले छात्राओं को परिषद् की ओर से पुरस्कार वितरित किये गये।

रसायन विज्ञान परिषद्

श्रीमती नेहा त्रिपाठी
परिषद् प्रभारी

दिनांक 17/10/16 को रसायन विभाग विभागीय परिषद् का गठन किया गया। जिसका विवरण निम्न प्रकार है :–

संरक्षक – प्राचार्या
प्रभारी – नेहा त्रिपाठी
उपाध्यक्ष – कु० प्रियंका शर्मा (पुत्री श्री राम प्रकाश शर्मा बी.एस–सी. तृतीय)
सचिव – कु० वैशाली गोटवाल (पुत्री श्री रविन्द्र कुमार बी.एस–सी. द्वितीय)
संयुक्त सचिव – कु० परमिल तोंगर (पुत्री श्री सतीश कुमार बी.एस–सी. तृतीय)
कोषाध्यक्ष – कु० शिवानी कर्दम (पुत्री श्री सतीश कुमार बी.एस–सी. तृतीय)
कक्षा प्रतिनिधि –
बी.एस–सी. प्रथम – कु० योगिता सिंह (पुत्री श्री राजकुमार सिंह)
बी.एस–सी. द्वितीय – कु० अदिति त्यागी (पुत्री श्री नवीन त्यागी)
बी.एस–सी. तृतीय – कु० ललिता बेसोया (पुत्री श्री संदीप बेसोया)

इस परिषद् के अन्तर्गत आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का परिणाम दिनांक 20/07/16 को घोषित हुआ। जो निम्नवत् रहा –

प्रथम पुरस्कार – कु० रचना कुमारी – पुत्री श्री कुँवरपाल सिह बी.एस–सी. तृतीय
द्वितीय पुरस्कार – कु० भारती – पुत्री श्री पदम सिंह बी.एस–सी. तृतीय
तृतीय पुरस्कार – कु० अंकिता शर्मा – पुत्री श्री प्रदीप कुमार शर्मा बी.एस–सी. द्वितीय

उक्त छात्राओं को दिनांक 30/01/17 को विभागीय परिषद् के तत्वावधान में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

भौतिक विज्ञान परिषद्

डॉ० ऋचा
परिषद् प्रभारी

गत वर्षों की भांति इस वर्ष 2016–17 में दिनांक 17/10/2016 को भौतिक विज्ञान परिषद् का गठन किया गया। परिषद् के विभिन्न पदों पर जिन छात्राओं का चयन किया गया उनका विवरण निम्नवत् हैं :–

संरक्षक – डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या)
प्रभारी – डॉ० ऋचा
उपाध्यक्ष – कु० शिखा नागर (पुत्री श्री संजय नागर) बी.एस–सी. तृतीय
सचिव – कु० वैशाली गोटवाल (पुत्री श्री रविन्द्र कुमार) बी.एस–सी. द्वितीय
संयुक्त सचिव – कु० परमिल तोंगर (पुत्री श्री रनवीर सिंह) बी.एस–सी. प्रथम
कोषाध्यक्ष – कु० शिवानी कर्दम (पुत्री श्री सतीश कुमार) बी.एस–सी. तृतीय
कक्षा प्रतिनिधि –
बी.एस–सी. प्रथम – कु० योगिता सिंह (पुत्री श्री राजकुमार सिंह)
बी.एस–सी. द्वितीय – कु० अदिति सिंह (पुत्री श्री नवीन त्यागी)
बी.एस–सी. तृतीय – कु० ललिता बेसोया (पुत्री श्री संदीप बेसोया)

इस परिषद् के अन्तर्गत आयोजित प्रश्नोत्तरीपरीक्षा का आयोजन दिनांक 20/01/16 को किया गया। जिसका परिणाम निम्नवत् रहा –

प्रथम पुरस्कार – कु० पूजा शर्मा – पुत्री श्री विनोद शर्मा बी.एस–सी. प्रथम
द्वितीय पुरस्कार – कु० रेखा बेसोया – पुत्री श्री राकेश कुमार बी.एस–सी. प्रथम
तृतीय पुरस्कार – कु० मेघा सिरोही – पुत्री श्री राज बहादुर सिरोही बी.एस–सी. तृतीय

उक्त प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को दिनांक 30/01/2017 को विभागीय परिषद् के तत्वावधान में पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार वितरण किया गया।

वनस्पति विज्ञान परिषद्

डॉ० प्रतिभा तोमर

महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के अन्तर्गत दि० 17/10/2016 को वनस्पति विज्ञान विभाग परिषद् का गठन किया गया। परिषद के अन्तर्गत विभिन्न पदों का विवरण निम्नवत् है –

संरक्षक – डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्या)
प्रभारी – डॉ० प्रतिभा तोमर
उपाध्यक्ष – कु० प्रियंका (पुत्री श्री राम प्रकाश शर्मा) बी.एस–सी. तृतीय
सचिव – कु० अंकिता (पुत्री श्री प्रदीप कुमार शर्मा) बी.एस–सी. द्वितीय
संयुक्त सचिव – कु० गीता शर्मा (पुत्री श्री मंगल चन्द शर्मा) बी.एस–सी. प्रथम
कोषाध्यक्ष – कु० सपना शर्मा (पुत्री श्री मनविन्द्र शर्मा) बी.एस–सी. तृतीय
कक्षा प्रतिनिधि –
बी.एस–सी. प्रथम – कु० भारती गौतम (पुत्री श्री ओमप्रकाश सिंह)
बी.एस–सी. द्वितीय – कु० ज्योति (पुत्री श्री सुशील कुमार)
बी.एस–सी. तृतीय – कु० तारिका अग्रवाल (पुत्री श्री संतोष अग्रवाल)

इस परिषद के तत्त्वावधान में दिनाक 19/01/17 को आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा –

प्रथम पुरस्कार – कु० कोमल कुमारी – पुत्री श्री कृष्ण पाल बी.एस–सी. द्वितीय
द्वितीय पुरस्कार – कु० गायत्री – पुत्री श्री नेमपाल सिंह बी.एस–सी. द्वितीय
तृतीय पुरस्कार – कु० मेघा बेसोया – पुत्री श्री राकेश कुमार बी.एस–सी. प्रथम

उपर्युक्त प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को दि० 30.1.2017 को विभागीय परिषद के [illegible] पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार प्रदान किये गये।

जन्तु विज्ञान परिषद्

डॉ. दिनेश चन्द्र [illegible]

जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा सत्र 2016–17 में समस्त कक्षाएं स्मार्ट कक्ष में पी.पी.टी., एनीमेशन, वीडियो, विडियो आदि के द्वारा ली गई तथा छात्राओं को आई.सी.टी. के उपयोग सिखाने एवं उनमें आत्मविश्वास विकसित करने हेतु छात्राओं को शिक्षण के बाद प्रत्येक दिन आई सी.टी. के उपयोग कर पाँच मिनट के लिए विषय से संबंधित किसी भी [illegible] व्याख्यान देने की अनिवार्यता की गई। जिसमें समस्त छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जन्तु विज्ञान की छात्राओं में [illegible] विकसित करने हेतु प्रोजेक्ट बनाने को कहा गया, जिसे समस्त छात्राओं ने सत्र के अन्त में विभाग में उपलब्ध [illegible]

प्रोजेक्ट के अंक भी निर्धारित किये गये जो प्रायोगिक परीक्षा में बाह्य परीक्षक के आंकलन के बाद जोडे गये।

सत्र में विभाग की छात्राओं ने यू.जी.सी. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एंटी–रैगिंग लोगो निर्माण तथा एंटी–रैगिंग निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। जिसका परिणाम वांछित है। पंद्रह छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय फिल्म विकास संस्थान द्वारा आयोजित 'स्वच्छ भारत' लघु फिल्म निर्माण प्रतियोगिता हेतु तीन लघु फिल्मों का निर्माण किया।

Best Practices started in deptt from session 2016-17

Self-directive time table : All students are made to prepare a time-table with rout map (from college to home) for themselves with the help of their parents. Time-table is submitted to me. So I randomly check, are the students following this or not by visit to their home or by telephone to their parent.

WhatsApp Group

- To share information related to college, future, important articles, Job, National/International Scholarship, Competitions, Admission in P.G. etc.
- To share lecture before class.
- Group discussion on current topics
- Eco-friendly Education
- To save environment
- 100% class on smart board using digital tools (No use of paper, chalk, ink)
- Digital test practice for B.Sc.-III students using PRS techniques.
- Students are also encouraged to use online test for practice.

Morning prayer - Every day is begun with Morning Prayer songs (Alternatively using songs of different religions). This step is taken to promote moral education and maintain social harmony in young girls, when these girls become mother, they can pass values to their children.

Student lecture - All student have to give a 5 minutes lecture at the end of the class. This will help to control their hesitation, face audience and share their views with public.

Student - Project - Every student is assigned short project. This will help to develop analytic approach in students.

Dep't Academic Calender - Every year departmental academic calender is prepared, by this students are well known in advance about what will be taught/happen in next week/class.

monthly Display of Attendance - Monthly attendance is displayed on notice board and communicated to their parents during parent meet.

पाठ्यक्रम के अतिरिक्त छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु विभाग द्वारा सत्र पर्यन्त विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित करने हेतु 'दिल्ली सफारी' नामक एनीमेटिड फिल्म दिखाई गई। सत्र के समापन पर प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा अपने कनिष्ठ साथियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

शारीरिक शिक्षा विभाग

श्री धीरज कुमार
असि० प्रो०, शारीरिक शिक्षा

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर ने इस वर्ष अपना 17 वी वार्षिक क्रीड़ा समारोह बड़े धूमधाम से बनाया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रपोटर्स जर्नलिस्ट बी.बी.सी. न्यूज, (एन.डी.टी.वी.) नोरिस प्रीतम ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित किया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा क्रीड़ा सचिव श्री धीरज कुमार के निर्देशन एवं एन.सी.सी. कैडेट, एस.एस. कार्यक्रम अधिकारी, रेंजर्स अधिकारी के नेतृत्व में मार्च पास्ट द्वारा मुख्य अतिथि को सलामी दी गयी, तत्पश्चात् गतवर्ष की चैम्पियन छात्रा द्वारा प्रज्जवलित मशाल लेकर क्रीड़ा प्रांगण की परिक्रमा लगाई गई तथा प्रज्जवलित मशाल प्रांगण में स्थापित कर दिया गया।

मुख्य अतिथि डॉ० नोरिस प्रीतम ने छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्हें क्रीड़ा क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने के लिये प्रोत्साहित किया। उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से छात्राओं का मनोबल बढ़ाया जिससे छात्राओं में उत्साह का संचार हुआ तथा सभी छात्राओं ने बढ़-चढ़कर क्रीड़ा प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापन किया और छात्राओं को उद्बोधित करते हुए कहा कि महिला विद्यालय में प्रेरणा दायिनी व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। प्राचार्या महोदया ने कहा कि प्रत्येक छात्रा में प्रतिभा होती है, आवश्यकता होती है उसे उभारने की उन्होंने कहा कि खेल में भाग लेने का महत्त्व होता है। सकारात्मक रूप से जय-पराजय को स्वीकार करें।

इस अवसर पर वार्षिक क्रीड़ा आख्या प्रस्तुत की। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं गोला प्रक्षेपण प्रतियोगिता, चक्का प्रक्षेपण प्रतियोगिता, भाला प्रक्षेपण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। जिसके परिणाम निम्नवत् है –

चक्का प्रक्षेपण प्रतियोगिता –	प्रथम स्थान	विधि
	द्वितीय स्थान	मोनिका शर्मा
	तृतीय स्थान	आरती नागर
गोला प्रक्षेपण प्रतियोगिता –	प्रथम स्थान	मन्जू नागर
	द्वितीय स्थान	विधि
	तृतीय स्थान	चिन्की
भाला प्रक्षेपण प्रतियोगिता –	प्रथम स्थान	अन्जू नागर
	द्वितीय स्थान	विधि
	तृतीय स्थान	मीनाक्षी
400 मी० दौड़	प्रथम स्थान	चंचल
200 मी० दौड़	प्रथम स्थान	मंजु नागर
लम्बी कूद	प्रथम स्थान	शालू
ऊँची कूद	प्रथम स्थान	भीम सिंह
रस्सी कूद	प्रथम स्थान	कंचन

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में विभागीय प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया गया

बैडमिन्टन सिंगल

साक्षी मावी	बी०एस०सी०	तृतीय वर्ष

बैडमिन्टन डबल

दीपशिखा	बी०ए०	द्वितीय वर्ष
सोनम	बी०ए०	द्वितीय वर्ष

इस वर्ष की चैम्पियन छात्रा बी०ए० प्रथम वर्ष की कु० मंजू नागर पुत्री श्री महेन्द्र सिंह रही।

बी.एड. विभाग

डॉ० बलराम सिंह
प्रभारी, बी.एड

बी.एड विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला पी.जी. कॉलेज, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर का नवीनतम संकाय है। बी.एड. पाठ्यक्रम का प्रारम्भ सत्र 2015-16 से हुआ। प्रथम सत्र में 68 छात्राओं ने प्रवेश लिया जिसमें 57 छात्राएँ परीक्षा में बैठी तथा सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुईं। सत्र 2016-17 के लिए लखनऊ वि.वि. द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय बी.एड. प्रवेश परीक्षा के माध्यम से काउंसलिंग द्वारा 47 छात्राओं ने प्रवेश लिया है।

किसी समाज की दशा और दिशा तय करने में शिक्षकों की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण होती है। भावी गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों को तैयार करना बी.एड. प्रशिक्षण द्वारा सम्भव हो पाता है। इसी पावन उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यह संकाय कार्यरत है। सैद्धान्तिक शिक्षण के साथ-साथ पाठ्य सहभागी व पाठ्येत्तर कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करना व उनके संचालन हेतु भी प्रशिक्षित भी किया जाता है। छात्राओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु प्राचार्या के संरक्षण में विभागीय परिषद का गठन किया गया है। जिसका विवरण निम्नवत् है–

संरक्षक :	प्रो० (डॉ०) करुणा सिंह, प्राचार्या
प्रभारी :	श्री बलराम सिंह
अध्यक्ष :	कु. मीनू रानी, बी.एड. II
उपाध्यक्ष :	कु. प्रीती भाटी – बी.एड. II
सचिव :	कु. रीमा यादव – बी.एड. I
कोषाध्यक्ष:	कु. अंशु, बी.एड. I
कक्षा प्रतिनिधि :	1. कु. अनु भाटी, बी.एड. II
	2. कु. कविता सरोज, बी.एड. I

सत्र 2016-17 के दौरान विभागीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें शिक्षक दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, स्काउट-गाइड प्रशिक्षण आदि प्रमुख है। परिषद् द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी (क्विज) का परिणाम निम्नवत रहा–

प्रथम स्थान – रीमा यादव – बी.एड. I
द्वितीय स्थान – गौरवी ककक्ड़ – बी.एड. I
तृतीय स्थान – ज्योति नागर – बी.एड. I

वाद-विवाद प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा –

प्रथम स्थान – रीमा यादव – बी.एड. I
द्वितीय स्थान – कु. मीनाक्षी – बी.एड. I
तृतीय स्थान – कविता सरोज – बी.एड. I
योगिता अग्रवाल – बी.एड. I

इसके अतिरिक्त श्री द्रोणाचार्य पी.जी. कालेज, दनकौर द्वारा आयोजित 'अन्वेषण-2017' कार्यक्रम में प्रथम वर्ष की छात्रा रेशमा शर्मा ने भाग लिया तथा पोस्टर प्रतियोगिता में द्वितीय एवं वाक्पटुता में भी द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शिक्षण प्रशिक्षण के साथ साथ यहाँ की छात्राओं का उपयोगी पाठ्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी, कैरियर काउंसलिंग शिक्षकों द्वारा दी जाती है। 08 मार्च 2017 को बी.एड. पाठ्यक्रम की स्थाई सम्बद्धता हेतु चौधरी चरण सिंह, वि.वि. मेरठ द्वारा निरीक्षण पैनल कराया गया। भविष्य में विद्यालयों को कर्मठ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षिका उपलब्ध कराने हेतु यह विभाग प्रतिबद्ध है।

साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद्

डॉ० अनिता रानी राठौर
परिषद प्रभारी

"All Work and no play, makes Jack a dull boy."

"Creativity is as important now in education as literacy and we should treat it with the Some Started."

Ken Robinson

किसी भी देश या समाज के विभिन्न जीवन व्यापारों में या सामाजिक सम्बन्धों में मानवीयता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले आदर्शों की समिष्टि को संस्कृति कहा जाता है। संस्कृति मानव की मानसिक, नैतिक, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं कलात्मक जीवन की समग्रता का नाम है। संस्कृति के व्यक्ति एवं समाज पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव के दृष्टिगत संस्कृति को उसके अंगभूत साहित्य से जोड़ते हुए विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी छात्राओं के उत्तरोत्तर विकास एवं परिष्कार हेतु साहित्यिक, सांस्कृतिक परिषद् का गठन किया गया जिसका एकमात्र उद्देश्य छात्राओं की साहित्यिक सांस्कृतिक प्रतिभाओं को निखारना तथा उनकी रचनात्मक अभिवृद्धि को पोषित करना था।

दिनांक को त्वरित आशु भाषण प्रतियोगिता से प्रारम्भ होने वाली साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद् के तत्त्वावधान में वर्षपर्यन्त अनेकानेक प्रतियोगिताओं (यथा रंगोली/मेहंदी प्रतियोगिता, वाद-विवाद, गायन/नृत्य, एकांकी, कहानी लेखन, स्वरचित कविता पाठ, एकांकी इत्यादि) का आयोजन किया गया जिनमें छात्राओं ने सोत्साह भाग लिया महाविद्यालय की प्रबुद्ध प्रवक्ताओं के मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन में आयोजित हुए विभिन्न कार्यक्रम छात्राओं की चहुँमुखी प्रतिभा के उन्नयन में अत्यन्त सहायक रहे। प्रतियोगिताओं में विजयी छात्राओं को सत्रान्त आयोजित "वार्षिकोत्सव" के अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गये। साहि. सांस्कृतिक परिषद् के समस्त सदस्य डॉ० ममता उपाध्याय, डॉ० दीप्ति वाजपेयी डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० शिवानी वर्मा, डॉ० नेहा त्रिपाठी, डॉ० बबली अरुण एवं परिषद् प्रभारी डॉ० अनिता रानी राठौर वर्षपर्यन्त छात्राओं के निर्देशन स्नेहसिक्त मार्गदर्शन एवं उत्साह वर्धन हेतु कृतसंकल्प है।

लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो, हर क्षण उसी का चिन्तन करो।
उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहों।

- स्वामी विवेकानन्द

राष्ट्रीय सेवा योजना
'सेवा वै श्रेष्ठतमं कर्म'

डॉ० दीप्ति वाजपेयी
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

"सेवा परमोधर्मः" के सिद्धान्त का प्रतिपालन करने वाली राष्ट्रीय सेवा योजना युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित एक केन्द्रीय योजना है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है। भारत सरकार द्वारा इस योजना के नियमित तथा विशेष शिविर कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग 75 विधियों का उल्लेख किया गया है। 1969 के स्थापना वर्ष से ही "मुझको नहीं तुमको" की भावना से ओत-प्रोत राष्ट्रीय सेवा योजना शैक्षिक वातावरण में युवा वर्ग को समाज सेवा के लिए प्रेरित कर रही है।

राष्ट्रीय सेवा योजना देश में समाज सेवा का एकमात्र ऐसा कार्यक्रम है जो विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में अध्ययन अध्यापन के मध्य सेवा ही महाविद्यालयों में स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामुदायिक सौहार्द, सामाजिक संचेतना व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास, दायित्वबोध, अनुशासन एवं एकता की भावना विकसित होती है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत प्रत्येक स्वयं सेवक के दो वर्ष की अवधि में 240 घंटो का सामुदायिक कार्य करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर में राष्ट्रीय सेवा योजना की सभी स्वयं सेवी छात्राएँ पूर्ण तत्परता व मनोयोग से सामान्य प्रशिक्षण एवं श्रमदान आदि के द्वारा शिविरों के माध्यम से योजना को मूर्त रुप देने के लिए सतत संलग्न है।

वर्तमान सत्र 2015-16 में भी राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत विभिन्न शिविरों के माध्यम से अधिग्रहित ग्राम बादलपुर में श्रमदान स्वच्छता, साक्षरता, वृक्षारोपण, एड्स से बचाव मतदान के प्रति जागरुकता, विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागृति, स्वास्थ्य एवं आहार पोषण सम्बन्धी जानकारी, पल्स पोलियो एवं टीकाकरण आदि राष्ट्रीय अभियानों में सहयोग, सर्वेक्षण एवं परिचर्चा कार्यक्रमों के माध्यम से जागरुकता अभियान चलाया गया। साथ ही समय-समय पर निबन्ध, स्लोगन, पोस्टर बिन निर्माण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। इसी श्रंखला को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन अधिग्रहित बादलपुर में दिनांक 02.02.2017 से 08.02.2017 के मध्य किया गया।

शिविर का कार्य योजना के अनुरुप सभी स्वयंसेवी शिविरार्थी राष्ट्रीय स्वयंसेवा के मूल उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पूर्ण मनोयोग से कार्य किया शिविर को प्रतिदिन तीन सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में अधिग्रहीत ग्राम बादलपुर की मलिन बस्तियों की स्वच्छता, वृक्षारोपण, समतलीकरण से सम्बन्धित श्रमदान कार्य किए गये। तत्पश्चात् भोजनावकाश के उपरान्त बौद्धिक सत्र में साक्षरता, जनसंख्या नियंत्रण, पर्यावरण सुरक्षा, समूह परिचर्चा, सामुदायिक एवं व्यक्तित्व विकास, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि विषयों पर विषय-विशेषज्ञों को आमंत्रित कर गोष्ठी के माध्यम से शिविरार्थी छात्राओं को सम्बन्धित किया गया। तृतीय सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित कर छात्राओं में हस्तकौशल एवं क्षमताओं में अभिवृद्धि का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त शिविर के सात दिनों में स्वयंसेवी छात्राओं ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, जन जागरुकता, साक्षरता एवं कुरीतियों के उन्मूलन हेतु नुक्कड़ नाटक रैली, भाषण इत्यादि के माध्यम से जागरुकता अभियान को गति प्रदान की गई।

शिविर के प्रथम दिन मुख्य अतिथि माननीय प्राचार्य जी द्वारा रिबन काटकर शिविर का विधिवत उद्घाटन द्वारा किया

गया। प्राचार्या महोदया ने शिविरार्थी छात्राओं को राष्ट्रीय सेवा योजना के मूल उद्देश्य 'सेवा–भावना को आत्मसात करने' लगन एवं निष्ठा से शिविर की कार्य योजना के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा दी।

शिविर के नियमित कार्यक्रम के मध्य 'स्वच्छ भारत–स्वस्थ भारत' के देश व्यापी अभिमान को ध्यान में रखते स्वयंसेवी छात्राओं के लिए डस्टबिन निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। अतः शिविर के उदघाटन के पश्चात् प्राचार्या जी एवं महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों के निर्णायक मंडल द्वारा डस्टबिन प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया। तत्पश्चात् शिविरार्थी छात्रायें अधिग्रहित ग्राम बादलपुर के प्राथमिक विद्यालय पहुँची तथा वहाँ टोली बनाकर उन्होंने बादलपुर ग्राम्वासियो की विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण कार्य किया। सर्वेक्षण में पाया गया कि बादलपुर प्राथमिक माध्यमिक, उच्च इत्यादि निम्न स्तरों कमी राजकीय एवं प्राइवेट शिक्षण संस्थायें होने पर भी कुछ परिवार विशेष कर बालिका शिक्षा से अभी वंचित है जिसका कारण आर्थिक सीमा बताया गया। स्वयं सेवी छात्राओं द्वारा उन्हें अवगत कराया गया कि राजकीय विद्यालयों में न्यूनतम शुल्क देकर प्रवेश मिलता है तथा इससे सम्बन्धित अन्य जानकारी विस्तार उपलब्ध कराई गयी। उन परिवारों ने आगामी सत्र में अपनी बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश दिलाने हेतु स्वयं सेविकाओं आश्वस्त किया।

शिविर के दूसरे दिन शिविरार्थी छात्राओं ने विधान सभा निर्वाचन चुनाव 2017 में 100 प्रतिशत मतदान को बनाकर गॉव में मतदाता जागरूकता रैली निकाली तथा घर–घर जाकर ग्रमीण महिलाओं एवं पुरूषों से मतदान करने आह्वान किया। ग्रामीण जनों ने स्वयं सेवी छात्राओं को अपने मताधिकारों का प्रयोग करने का आश्वासन दिया। बौद्धिक में श्री जसवन्त सिंह चौहान, उपथाना–निरीक्षक बादलपुर द्वारा शिविरार्थी छात्राओं को 'महिला सुरक्षा एवं कानून' विषय लाभप्रद जानकारी उपलब्ध कराई गई।

शिविर के तीसरे दिन स्वयंसेवी छात्राओं ने 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' अभियान की श्रृंखला को आगे बढ़ाते बादलपुर गॉव के धार्मिक स्थलों एवं मलिन बस्तियों में जाकर स्वच्छतां अभियान चलाया। साथ ही उन्होंने ग्रामीण जनों स्वच्छता का महत्त्व बताते हुये अपने आस–पास के परिसर को स्वच्छ बनाने हेतु प्ररित किया।

शिविर के चौथे दिन रविवार को शिविरार्थी छात्राओं ने बादलपुर ग्राम में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पुनः ग्रामवसियों से मतदान अवश्य करने की अपील की गयी। तत्पश्चात् स्वयंसेवी छात्राओं ने माध्यमिक विद्यालय में स्वच्छता एवं श्रमदान कार्य किया। विद्यालय में चल रहे निर्माण कार्य के कारण फैली गंदगी एवं मलबे छात्राओं ने श्रमदान द्वारा हटाकर परिसर को अपेक्षित स्वच्छता प्रदान की। तत्पश्चात तहसीलदार दादरी श्री जीत सिंह ने शिविर में उपस्थित होकर छात्राओं को सम्बोधित किया तथा उन्होंने शिविर में संचालित हो रहें विभिन्न कार्यक्रमों सराहना की। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं में दृढ़–संकल्प एवं लगन होती है अतः यदि वह ठान लें कि मतदान अवश्य करना है और अपने परिवार के अन्य सदस्यों से भी करवाना है तो निसःन्देह 100 प्रतिशत मतदान का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। स्वयंसेवी छात्राओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंनें कहा कि छात्रायें देश का भविष्य है और यह अत्यन्त सराहनीय है कि राष्ट्रीय सेवा योजना जैसे कार्यक्रमों से जुड़कर देश की प्रगति में योगदान दे रही हैं। बौद्धिक सत्र में डॉ० अरविन्द कुमार असिस्टेन्ट प्रोफेसर वाणिज्य संकाय द्वारा नोट बंदी: दूरदृष्टि या भावावेश विषय पर सारगर्भित समूह–परिचर्चा कराई गई जिसमें छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शिविर के पाँचवे दिन शिविरार्थी छात्राओं द्वारा प्लास्टिक बैग से होने वाले दुष्प्रभावों से पर्यावरण को संरक्षित करने उद्देश्य से ग्रामीण महिलाओं को इस विषय में जागरुक किया तथा उन्हें पुराने अखबारों से पेपर बैग बनाने का हस्त कौशल सिखाया गया।

बौद्धिक सत्र में श्रीमती निशा सिंह जी०सी०आई०–II 13 गर्ल्स बटालियन गाजियाबाद द्वारा छात्राओं को अन्त

प्रदान से महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। उन्होंने कहा कि कुछ आपदायें प्राकृतिक प्रदत्त होती है। किन्तु अधिकतर आपदाओं को मनुष्य स्वयं विनिर्मित करता है। अतः हमें ज्ञान आपदाओं के प्रति सजग रहना चाहिए जिससे इनका निवारण किया जा सकें।

शिविर के छठे दिन स्वयंसेवी छात्राओं ने ग्रामीण महिलाओं को आहार–पोषण एवं टीकाकरण से सम्बन्धित उपयोगी जानकारी प्रदान करते हुये इस तथ्य से अवगत कराया कि 'स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मस्तिष्क की आधारशिला है''। हम स्वस्थ रहकर ही जीवन की चुनौतियो का सामना कर सकते हैं। अतः हमें अपने आहार पर ध्यान देना आवश्यक है। बौद्धिक सत्र में डॉ० शब्बीहा, राजकीय चिकित्सालय बादलपुर द्वारा 'महिला स्वास्थ्य एवं पोषण' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया तत्पश्चात् छात्राओं की विभिन्न समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

प्रतिदिन शिविर के तृतीय सत्र में हस्त कौशल एवं अन्तर्निहित क्षमताओं के संवर्धन हेतु विभिन्न प्रतियोगितायें भी आयोजित की गई थीं जिसमें शिविरार्थी छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शिविर के अन्तिम दिन दिनांक 08.02.2017 को समापन समारोह के शुभ अवसर पर माँ शारदे के सम्मुख दीप प्रज्जवलन के पश्चात कार्यक्रम अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी आगन्तुओं का स्वागत किया गया। तत्पश्चात शिविरार्थी छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के उपरान्त कार्यक्रम अधिकारी द्वारा शिविर की आख्या प्रस्तुत की गई तथा शिविरार्थी छात्राओं ने शिविर के अनुभवों पर वक्तव्य दिए।

अंत में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह द्वारा छात्राओं को पुरस्कार वितरण किया गया। प्राचार्या द्वारा छात्राओं को दिये गये आशीर्वचन के उपरान्त कार्यक्रम अधिकारी डॉ० दीप्ति वाजपेयी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के संचालन में विश्वविद्यालय प्रशासन, ग्राम बादलपुर के निवासियों, प्राथमिक विद्यालय प्रशासन ने वांछित संसाधन उपलब्ध कराकर विशेष सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना की सम्पूर्ण समिति डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० मिन्तु, श्रीमती शिल्पी, डॉ० नेहा त्रिपाठी, डॉ० विनीता सिंह एवं डॉ० नीलम शर्मा ने शिविर संचालन करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसमें शिविर के नियमित एवं विशेष कार्यक्रमों को सफलता पूर्वक संचालित किया जा सका।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह जी के कौशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन तथा महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों एवं कर्मचारी वर्ग के महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय सहयोग से राष्ट्रीय सेवा योजना के सभी एक दिवसीय एवं विशेष शिविर अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल हो सके।

राष्ट्र एवं समाज सेवा को अपने नैत्यिक क्रियाकलापों एवं स्वाभाविक गतिविधियों में आत्मसात् कर राष्ट्रीय स्वयं सेवा की समस्त स्वयं सेवी छात्रायें 'वसुधैव कुटुम्बकम' की उदात भावना को साकार रुप देने हेतु कृत संकल्प है।

National Cadet Corps

Dr. Meenakshi Lohani
Dr. Neelam Sharma

The National Cadet Corps is the Indian military cadet corps with its Headquarters at New Delhi, India. The motto of NCC is 'Unity & Discipline' which was adopted on 23 Dec. 1957. In living upto its motto, the NCC strives to be and is one of the greatest cohesive forces of the nation, bringing together the youth hailing from different parts of the country and moulding them into united, secular and disciplined citizens of the nation. In our college 53 cadets, students are enrolled on voluntary basis through 13 UP Girls Battalion, Ghaziabad. The Cadets are given basic military training in arms and 40 parades.

The institutional training includes basic military training to the cadets as part of the curriculum and prepares them to join the Armed forces. It is conducted with the following specific purpose :-

(i) Firstly, to expose young cadets to a 'regimental way of life' which is essential to inculcate in them the values of discipline, duty, punctuality, orderliness, smartness, respect for the authorities, correct work ethos, and self-confidence.

(ii) Secondly, to generate interest in cadets by including and laying emphasis on those aspects of institutional Training which attract young cadets into the NCC and provides them an element of thrill and excitement.

(iii) Thirdly, to inculcate Defence Services work ethos that is characterized by hard work, sincerity of purpose, honesty, ideal of selfless service, dignity of labour, secular outlook, comradeship, spirit of adventure and sportsmanship.

Cadets attend several CATC's, NIC's and various other camps every year. NCC Cadets are given the opportunity to participate in a host of adventure activities including Mountain Treks and Expeditions, Trekking, Parasailing, Sailing, Scuba Diving, Kayaking, Camel safari etc. Adventure based activities enable cadets to hone leadership skills and enhance their character qualities.

With the aim of imbibing selfless service to the community, dignity of labour importance of self help, need to protect the environment and to assist weaker sections of the society in their upliftment the following programmes were organized in and around the college premises.

Anti Plastic Rally

NCC Cadets conducted awareness rally against the use of plastic in Badalpur village market complex and main NH 91 Road. They carried placards containing awareness messages, encouraging rainwater harvesting saving water bodies and other environment-friendle measures. Principal and teaching staff participated in the event.

The Tree Plantation programme at our college campus

Around fifty cadets of the NCC along with the faculty members assembled at the college premises. Trees were planted by the students across the open area of the college premises, near the college field. The trees were also watered by the students. The students took care & interest to complete the above activity under the supervision of the NCC faculty members. Principal and teachers, present also spoke about the importance of tree plantation.

Cleaning Program at the college premises was undertaken by the NCC cadets & Faculty members at our college premises throughout the year. The student took initiatives to clean the classrooms, painted the trees. The teachers stressed the need of clean classroom where the students spend most of the times.

The basic aim of NCC in the college was to introduce cadets to a regimented way of life which helps in developing team work, leadership qualities, self-confidence, self-reliance ans dignity of labour in the cadets.

I welcome all the students of KMGGPG College Badalpur to get enrolled and explore the untouched aspects of life with Unity and discipline.

रेंजर्स

डॉ० सुशीला
प्रभारी रेंजर

राष्ट्रीय एकता और युवा पीढी में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति हेतु स्काउटिंग एवं गाइडिंग भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक सशक्त माध्यम के रुप में स्थापित है। युवा वर्ग में सम्यक मूल्यों का संचार करना, उनके व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं में निखार लाना तथा एक आदर्श लोकतंत्र आर्थिक शक्ति और प्रगतिशील समाज के निर्माण में आज स्काउट एवं गाइड महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रेंजर्स इकाई का संचालन वर्ष 2001 से अहिल्याबाई टीम के नाम से किया जा रहा है। इस इकाई के माध्यम से रेंजर्स को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने एवं उनमें सेवा, सौहार्द, सहयोग, स्वावलम्बन, स्वदेश प्रेम और विश्व बन्धुत्व की भावनाओं का विकास करना के माध्यम से रेंजर्स इकाई के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य है।

रेंजर्स इकाई की प्रमुख गतिविधियाँ

महाविद्यालय की रेंजर्स इकाई के तत्त्वावधान में **दिनांक 30 सितम्बर 2016** को अभिविन्यास कार्यक्रम (Orientation Programme) का आयोजन किया गया जिसका प्रमुख उद्देश्य छात्राओं/रेंजर्स में यह जागरुकता उत्पन्न करना था कि किस प्रकार स्काउट गाइड के माध्यम से वह अपनी कैरियर मेकिंग कर सकती है और इसमें सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्र में क्या सभावनाएं है इत्यादि की जानकारी रेंजर्स को भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालयों के सदस्यों द्वारा प्रदान की गई।

दिनांक 15 अगस्त, 2016 को महाविद्यालय मे आजादी 70 वर्ष के उपलक्ष्य मे रेजर यूनिट द्वारा एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन एव जागरूकता रैली का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 23 नवम्बर, 2016 को भारत सरकार के द्वारा संचालित अभियान बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के अन्तर्गत कन्या भ्रूण हत्या एव बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ विषय पर NH 91 स्थित ग्राम बादलपुर व सादोपुर मे जागरूकता रैली एव पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे छात्राओं ने बढ चढकर प्रतियोगिता सुनिश्चित की।

2 दिसम्बर, 2016 को रेजर्स इकाई द्वारा समसामयिक विषय "महिला सुरक्षा वर्तमान परिदृश्य" पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

3 दिसम्बर, 2016 को रेजर्स मे हस्तशिल्प कला कौशल को बढावा देने एवं इनकी इस प्रतिभा को परखने हेतु एक हस्तशिल्प कला कौशल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत रेजर्स ने घरेलू अनुपयोगी वस्तुओं को पुन: प्रयोग मे लाकर अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया।

6 दिसम्बर, 2016 से महाविद्यालय मे रेजर इकाई के माध्यम से पौधारोपण एवं संरक्षण अभियान भी संचालित है उक्त प्रतियोगिता मे कई किस्म के इन्डोर प्लाट तथा फलो इत्यादि के पौधे महाविद्यालय प्रांगण मे रोपित किये गए है तथा वर्तमान मे भी अभियान जारी है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय की रेजर इकाई महाविद्यालय मे संचालित स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत अभियान के तहत भी महाविद्यालय मे स्वच्छता की ओर एक कदम मे भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है तथा सत्र भर अनेक जागरुकता कार्यक्रम रेजर इकाई के माध्यम से महाविद्यालय मे संचालित होते रहते हैं।

दिनांक 6 दिसम्बर, से 9 दिसम्बर 2016 तक महाविद्यालय प्रांगण मे त्रिदिवसीय रेंजर प्रशिक्षण शिविर व बी. एड. प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के रोवर्स रेजर्स समन्वय एव दिगम्बर जैन कॉलेज बडौत के प्राचार्य डॉ. विरेन्द्र सिंह जी के करकमलों द्वारा किया गया। महाविद्यालय में संचालित बी. एड पाठ्यक्रम की छात्राओ को भी स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसके अन्तर्गत छात्राओ को गाँठे, बन्धन, पुल निर्माण, प्राथमिक चिकित्सा, गैजेट्स व तम्बू निर्माण इत्यादि सम्बन्धी प्रशिक्षण जिला सगठन आयुक्त भारत स्काउट एव गाइड श्री शिवकुमार एवं डी.ओ.सी. गाइड सुश्री शैफाली गौतम द्वारा दिया गया तथा प्रशिक्षण शिविर महाविद्यालय प्रचार्या डॉ. करूणा सिंह जी के सरक्षण मे सफलतापूर्वक सचालित हुआ।

दिनांक 31 जनवरी, से 2 फरवरी 2017 तक महाविद्यालय की रेजर अहिल्याबाई टीम ने महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए विद्यावती मुकुन्दलाल पी.जी. कॉलिज, गाजियाबाद में आयोजित 25वां अर्न्तमहाविद्यालयी रोवर्स रेंजर्स समागम मे प्रतिभाग कर कुल आयोजित 20 प्रतियोगिताओं मे क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर दूसरी बार भी महाविद्यालय रेजर टीम ने उपविजेता का खिताब हासिल किया।

महिला प्रकोष्ठ

डॉ. अर्चना सिंह
महिला प्रकोष्ठ प्रभारी

स्त्री और पुरूष दोनों जीवन की गाड़ी के दो पहिये होते हैं और जीवन की गाड़ी तभी सुचारू रूप से चलती है जब दोनों पहियों के बीच समानता हो। हमारे देश में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता' माना जाता है किन्तु वास्तविकता में स्त्री को समाज मे दोयम दर्जे का स्थान दिया गया है। स्त्री आज भी अपने परिवार, समाज व कार्यक्षेत्र मे अपने अधिकारों को पाने व अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्षरत है। शासन द्वारा महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करने व कार्यक्षेत्र मे उनके उत्पीड़न व शोषण को रोकने के उद्देश्य से प्रत्येक कार्यालय में 'महिला प्रकोष्ठ' की स्थापना की गई है। **कु० मायावती महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर** में भी सन् 2009 से महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। इसका उद्देश्य छात्राओं की समस्याओं का समाधान करना करना व उनको उनके अधिकारों के प्रति सचेत करना है।

वर्तमान सत्र में महिला प्रकोष्ठ समिति डॉ. अर्चना सिंह (प्रभारी महिला प्रकोष्ठ), डॉ. दीप्ति वाजपेयी (सह प्रभारी), डॉ सुशीला चौधरी, डॉ. प्रतिभा तोमर, डॉ. नीलम शर्मा, डॉ. रमाकांति, डॉ. विनीता सिंह (सदस्य) महिला प्रकोष्ठ के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील हैं।

महिला प्रकोष्ठ समिति के छात्र सदस्य के लिए सभी संकायों से छात्राओं का चयन निर्वाचन के माध्यम से किया गया जो कि निम्नवत् है। 1. कु. गीता शर्मा (बी. एड.) 2. कु. संजय (एम.ए) 3. कु. निशा (बी.ए. प्रथम) 4. कु. भावना गर्ग (बी.कॉम) 5. कु. सोनम तेवतिया (बी.एस–सी.) / दिनांक 8.11.2016 को महिला प्रकोष्ठ अभिविन्यास कार्यक्रम में प्रभारी डॉ० अर्चना सिंह द्वारा महिला प्रकोष्ठ के विषय में छात्राओं को विस्तार से बताया गया कि महाविद्यालयी कोई भी समस्या जो छात्राओं की मानसिक नैतिक, शारीरिक व सामाजिक पहलू से संबंध रखती है छात्राएं समिति के संज्ञान मे लायें। डॉ० सुशीला चौधरी ने छात्राओं को महिलाओं के विभिन्न अधिकारों और कानून के अनेकानेक नियमों की जानकारी दी जो कि छात्राओं को पारिवारिक एव सामाजिक जीवन मे होने वाली प्रताड़नाओं व हिंसा से बचाव करने मे सहयोगी होगी। डॉ० विनीता सिंह ने महिला हेल्पलाईन व 1090 के विषय में विस्तृत जानकारी दी।

महिला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में छात्राओं में संचेतना जागृत करने हेतु समय–समय पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया 8.11.16 को डॉ० रमाकान्ती द्वारा महिला अधिकार : तथ्य एवं सत्य विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रत्येक संकाय की छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया और निम्न छात्राओं ने स्थान प्राप्त किया।

प्रथम – 1. कु. गीता शर्मा (बी.एड.)
2. कु. प्राची शर्मा (बी.एड.)

द्वितीय – कु. भावना गर्ग (बी.कॉम II)

तृतीय – कु. शिल्पी (बी.एड.)

दिनांक 5.12.2016 को 'विश्व ख्याति प्राप्त' महिलाऐं विषय पर डॉ० प्रतिभा तोमर व डॉ० नीलम शर्मा द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विजयी छात्रायें निम्नवत् है :–

प्रथम – कु. सोनम (बी.ए. द्वितीय)

द्वितीय – कु. पूनम नागर (बी.कॉम II)

तृतीय – कु. अंजली नागर (बी.ए. प्रथम)

25 जनवरी 2017 को मतदान दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में डॉ० सुशीला चौधरी के निर्देशन में नुक्कड़ नाटक द्वारा छात्राओ को मतदान करने हेतु प्रेरित किया गया व महिला मतदाता जागरुकता हेतु रैली निकाली गयी।

27 फरवरी 2017 को डॉ० दीप्ति वाजपेयी के निर्देशन में छात्राओं के लिए शारीरिक प्रशिक्षण के विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह मे जिसमें 'महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से महिला प्रकोष्ठ द्वारा व्याख्यान माला का आयोजन किया गया जिसमें समिति के सभी सदस्यों ने छात्राओं को जागरुक किया।

इस सत्र में महाविद्यालय की छात्राओं के मध्य महिला सुरक्षा हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वीमेन पॉवर लाईन 1090 (SPO) को रू. रु रूप से चलाने के निमित्त 151 पॉवर एन्जिल का चयन किया गया। पॉवर एन्जिल का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि हर धर्म, सम्प्रदाय, जाति व संकाय की छात्रा इस चयन में सम्मिलित हो।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह महिला प्रकोष्ठ की बैठक आहूत कर छात्राओं से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर समिति द्वारा उनका निराकरण किया गया।

रोज़गार प्रकोष्ठ एवं कैरियर काउन्सलिंग सेल

श्रीमती भावना यादव
परिषद प्रभारी

महाविद्यालय में रोजगार प्रकोष्ठ एवं कैरियर काउन्सलिंग सेल के तत्वावधान में सत्र 2016–17 में निम्नांकित कार्यक्रम कराये गये :–

1. दिनांक 24–09- 6 को UNDP कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत में **"NAYI DISHA"** संस्थान द्वारा महाविद्यालय की स्नातक परस्नातक एवं बी.एड. की छात्राओं के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे छात्राओं को FMGC, Retail telecom, automobile इत्यादि क्षेत्रों में नौकरियों की संभावनाओं की जानकारी दी गई जिसमें कुल 232 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

2. दिनांक 25–10–16 को 'R.K. Institute of English Speaking and personality development' द्वारा 'Communication Skills and Personality development पर व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमे बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., एम.ए. एवं बी.एड. की छात्राओं को रोजगार हेतु 'Communication Skills' का महत्त्व बताया गया जिसमें 80 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

3. दिनांक 17–11–16 को 'नरथाम महात्मा गाँधी ट्रेनिंग सेन्टर द्वारा **'Paper Cutting Craft'** का प्रशिक्षण दिया गया जिसमें कुल 100 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

4. दिनांक 23–11–16 को सद्भावना प्रचार मंच द्वारा **'Anti addiction, anti stress and anti Cruelty'** विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें करियर में आने वाली **stress** संबंधी समस्याओं हेतु निरस्तारण के लिए विशेष जानकारी दी गई।

5. दिनांक 20–01–17 को **'APEX Institute'** के विशेषज्ञों द्वार **N.T.T.** की भविष्य संभावनाओं, कार्यकुशलता बढाने एवं स्नातक एवं परस्नातक छात्राओं के लिए करियर की विभिन्न सम्भावनाओ एवं **Competitive exams** की तैयारी हेतु जानकारी दी गई जिसमें 92 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

पुरातन छात्र सम्मेलन

डॉ० मिन्नु
असि० प्रा० हिन्दी

शिक्षण संस्थानों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान के प्रसार के साथ–साथ उनके जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। जीवन में सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचने के पश्चात् छात्राओं का समय–समय पर आकर अपने प्राध्यापकों से मिलना इस बात का संकेत होता है कि महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को व्यवहारिकता भी सिखाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कु० मा० रा० म० स्ना० महाविद्यालय में पुरातन छात्र/छात्रा सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इससे छात्राओं को एक ऐसा मंच प्राप्त होता है जिसमें वे अपने विचारों एवं प्रतिक्रियाओं को व्यक्त कर सकते हैं इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिनांक 26/11/2016 को पुरातन छात्र समागम का आयोजन किया गया। पुरातन छात्रों ने इस अवसर पर अपने अनुभव बाँटे। महाविद्यालय के विकास हेतु बहुत सी बातों पर चर्चा–परिचर्चा की गई। सत्र 2016–17 हेतु कार्यकारिणी समिति का निम्नवत् गठन किया गया।

अध्यक्ष – कु० पूजा नागर
सचिव – अन्जू
कोषाधिकारी – श्वेता
कार्यकारिणी सदस्य –

(i) कोमल नागर
(ii) अमृता विकल
(iii) वर्षा नागर
(iv) प्रीति विकल
(v) नेहा नागर
(vi) सोनिका नागर

इस अवसर पर यह भी निर्धारित किया गया कि प्रत्येक वर्ष वार्षिक समारोह के अवसर पर छात्राओं को आमन्त्रित किया जाए। साथ ही छात्राओं एवं प्राध्यापकों द्वारा रोजगार के अवसरों पर विस्तृत चर्चा–परिचर्चा की गई।

वॉल-मैगजीन आख्या

श्रीमती नेहा त्रिपाठी
डॉ० नीलम शर्मा

छात्राओं में अन्तर्निहित प्रतिभाओं के प्रकाशन एवं उनकी आन्तिरक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के उद्देश्य से महाविद्यालय मे वॉल मैगजीन का प्रदर्शन किया जाता है। इस वर्ष वॉल मैगजीन से सम्यक् प्रदर्शन हेतु निम्नलिखित समिति का गठन किया गयाँ

प्रभारी –	नेहा त्रिपाठी
सह–प्रभारी –	डॉ० नीलम शर्मा
सदस्य –	डॉ० रमाकान्ति
सदस्य –	डॉ० वन्दना शर्मा
सदस्य –	डॉ० सोनम शर्मा

वर्ष पर्यन्त वॉल मैगजीन पर समस्त संकायों की छात्राओं की उत्कृष्ट प्रविष्टियों को प्रदर्शित किया जाता है। इस वर्ष विशिष्ट रुप से प्रत्येक माह किसी विशेष विषय को मुख्य रुप से चुना गया जैसे कि स्वच्छ पर्यावरण, ऊर्जा, स्वच्छ भारत मतदाता जागरुकता, साक्षरता, नोटबन्दी, महिला सुरक्षा, जल बचाओं, बेटी बचाओ आदि। इसके अतीरिक्त विशेष पर्वो एवं अवसरों पर वॉल मैगजीन का विशेष रुप से प्रदर्शन किया गया। जैसे कि स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयन्ती, शिक्षक दिवस दीपावली, मानवाधिकार दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, गणतंत्र दिवस, शहीद दिवस एवं महाविद्यालय में आयोजित सह शैक्षणिक कार्यक्रम इत्यादि। इन समस्त कार्यक्रमों एवं अवसरों पर महाविद्यालय की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और अधिकाधिक प्रविष्टियाँ जमा करायी। जिन्हें समय–समय पर वॉल मैगजीन पर प्रदर्शित किया गया।

ESPD CLUB

Ms. Diksha
Convenor

Today, English has become a world-wide language. Whether you are a beginner or expert in English, spoken English can lead you to next level. To run any kind of event or to appear any job interview we need better English and it can be possible with language club. ESPD Club is to be in existance for the development of personality of students and enrich their english speaking skills. The motto of the club is 'Be Prepared."

Under this club the students are encouraged to participate in various extempore competitions, group discussion, vocabulary test, English speaking games, quizes and slogan competition etc.

This year an essay writing competition was held on 20/01/2017 and the following students were rewarded during the annual function.

1. Nidhi Kumari	B.A. Ist - Ist prize
2. Nidhi Verma	B.Sc. IIIrd - IInd prize
3. Sabnam	B.Com. IInd - IIIrd prize

राष्ट्रीय सेमिनार
10-11 दिसम्बर 2016

डॉ. जीत सिंह
संयोजक, सेमिनार

दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का मुख्य विषय है – "भारत के परिप्रेक्ष्य मे महिलाओं की रचनात्मक क्रांतिकारी भूमिका।" इस विषय का विवेचन विश्लेषण करने से पूर्व यह स्मरण रखना अनिवार्य है कि भारत जब स्वाधीन हुआ तब सभी वर्गों की रचनात्मक भूमिका रही थी। भारत की नारियों ने स्वयं भी स्वाधीनता प्राप्ति का संघर्ष किया, साथ ही युवा वर्ग को प्रेरित और प्रोत्साहित किया। हिन्दी के सुविख्यात कथाकार मुंशी प्रेमचन्द ने कर्मभूमि उपन्यास में महिलाओं को स्वाधीनता प्राप्ति का प्रेरक और प्रोत्साहक माना है। सभी सामाजिक वर्गों के पुरुषों को और उस समय के छात्र–छात्राओं को महिलाओं ने स्वाधीनता के संघर्ष में सक्रिय भाग लेने को प्रोत्साहित किया।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं ने समाज के सभी कार्य क्षेत्रों में अग्रिणी भूमिका का निर्वाह किया। न्याय व्यवस्था, शासन–प्रशासन, सुरक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, खेलकूद, व्यापार आदि सभी कार्य क्षेत्रों में महिलाओं की निस्वार्थ, साहसिक एवं क्रांतिकारी भूमिका रही है। नारियों ने सभी वर्गों के पुरुषों को नई दिशा, नई चेतना, नई गति और नई ऊर्जा प्रदान ही नहीं की है अपितु वर्तमान भारतीय समाज को रचनात्मक प्रगतिशील जीवन मूल्यों से भी जोड़ा है। सच्चे अर्थों में महिलाएँ देश भक्त, समाजसेवी, प्रकृति प्रेमी और मानव प्रेमी रही हैं। ये समस्त मानवीय गुण भारतीय समाज को स्वस्थ वैज्ञानिक प्रगतिशील जीवन मूल्यों से जोड़ते हैं।

महिलाएं अनुगामिनी, सहगामिनी और अग्रगामिनी की अनवरत और कालजयी रचनात्मक विकास तथा सकारात्मक प्रक्रिया से अपना नाम विश्वस्तर पर जोड़ती रही हैं और जोड़ती रहेंगी। यही विश्व का महाशक्ति रुप परिलक्षित हो रहा ह।

निश्चित रुप से दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार नारी केन्द्रित होने के कारण आज और कल के अकादमी परिवेश को मानवीय मूल्यों से जोड़ेंगी। इस प्रकार यह सेमिनार सभी विद्वानों शोधार्थियों एवं छात्र–छात्राओं को अपने–अपने विषयों की नवीनता और मौलिकता प्रदान करेंगी।

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर में आई.सी.एस.आर. नई दिल्ली द्वारा अनुदानित दो दिवसीय सफलतापूर्वक सेमिनार का आयोजन कालजयी विचारों से विद्वतवर्ग, शोधार्थियों एवं छात्राओं को लाभान्वित करने के उद्देश्य से किया गया था। महिलाओ के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं प्रेरक विचार हमारे जीवन दर्शन एवं हमारी मानसिकता की सकारात्मक ऊर्जा प्रदान कर समाज को एक नवीन दिशा प्रदान करेंगे।

सेमिनार का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि डॉ० आर.पी.सिंह, निदेशक उच्च शिक्षा, इलाहाबाद उ.प्र. द्वारा विद्या की अधिष्ठानी देवी माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर किया गया। आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना नाम भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर अंकित कर रही हैं। विकास की इस प्रक्रिया से नारी शक्ति विश्व की महाशक्ति के रुप में परिलक्षित हो रही है।

सेमिनार के मुख्य वक्ता डॉ० रमेश ऋषिकल्प ने कहा कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो भारत के गुलाम होने में महिलाओं की रचनात्मक भूमिका को प्रोत्साहन न करना था, इस कारण को महात्मा गांधी ने समझा और समाज के सभी वर्गों के साथ महिलाओं को भी रचनात्मक भूमिका में खड़ा किया। संवेदना से परिपूरित समाज के लिए नारी और पुरूष की सहभागिता एवं समानता आवश्यक है।

उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि किसी भी सेमिनार का सबसे दुरूह कार्य व्यापक विचार मन्थन को समय बद्ध एवं स्तरीय बद्ध करना है जिससे सेमिनार का मुख्य विषय पर अपेक्षित अमृत्य तुल्य तथ्य एवं गुणवत्ता उभरकर सबके सम्मुख आ जाये। इस दृष्टि से सेमिनार अपने उद्देश्य पूर्ति में

ऐतिहासिक रचनाओं की।

विशेषज्ञ सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. शशी वशिष्ट, प्राचार्या, एस.एस.वी. (पी.जी.) कॉलिज, हापुड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि नारी को किसी भी रूप में कमतर आंकना समाज की बहुत बड़ी भूल रही है। वर्तमान में महिलाओं ने चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है।

डॉ. पी.एन. अरोरा, संयुक्त रजिस्ट्रार तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद ने कहा कि नारी दृढ़ संकल्प से महाशक्ति है जब-जब नारी अपने अस्तित्व के लिए खड़ी हुई है तब-तब उसने अपना मुकाम हासिल किया है।

डॉ. नवीन चन्द्र लोहनी हिन्दी विभागाध्यक्ष, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ ने आह्वान किया कि नारी सदैव महान रही है और रहेगी। महिलाएँ ही पुरुष के प्रेरणात्मक एवं शक्ति है। यही पुरुष को नई दिशा, नई शक्ति एवं नई ऊर्जा देती रही है।

डॉ. विपलव, प्राचार्या, चन्द्रकान्ता पीर विद्यावती महाविद्यालय, बुलन्दशहर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि नारी मानवीय मूल्यों को जोड़ती हुई समाज को एक नई दिशा देने में सक्षम हुई है। नारियों ने हर दिशा में अपना नाम रोशन किया है।

तकनीकी सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. रजनी तिलक ने कहा कि महिलाएँ अनुगामिनी, सहगामिनी और अग्रगामिनी बनकर विकास यात्रा को पूर्ण करती हुई समाज के प्रत्येक वर्ग की प्रेरणा स्रोत परिलक्षित होती है। नारी का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है।

इसी सत्र की विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रज्ञा पाठक, एन.ए.एस. कॉलिज मेरठ ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की नारी अबला नहीं सबला है। नारी बाह्य रूप से जरूर कोमल दिखायी देती है लेकिन आन्तरिक रूप से गम्भीर एवं दृढ़ संकल्पी है।

डॉ. सुषमापाल सहवक्ता ने अपने वक्तव्य में कहा कि नारी की स्वाधीनता देश की स्वाधीनता से भी अधिक जरूरी है। नारी ही सम्पूर्ण समाज को दिशा देती है तभी समाज मजबूत और दृढ़ संकल्पी बनता है।

सेमिनार के द्वितीय दिवस के विशेषज्ञ सत्र की मुख्य वक्ता डॉ. उर्मिला शर्मा, जयपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि महिलाओं ने पृथ्वी से लेकर गगनारोहण तक महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है तथा समाज को जोड़ने का काम किया है। डॉ. अशोक मैत्रेय सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं बौद्धिक मंच हापुड़ के अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अद्वितीय विकास किया है। चाहे कितनी भी जोखिम भरा क्यों न हो। कल्पना चावला, सुनीता सिंह जैसे नाम हमारे समक्ष हैं।

डॉ. के.के. शर्मा एम.एम.एच. पी.जी. कॉलिज गा.बाद, ने अपने विचारों में कहा कि नारियों ने स्वाधीनता प्राप्ति के हर प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका निभाई है।

डॉ. तिलक सिंह भाषा वैज्ञानिक जी ने कहा मन्नू भंडारी, ममता कालिया, स्मिता, शिवानी, मृदुल सिन्हा, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्गल, कृष्णा शोभती, अमृता प्रीतम तथा नासिरा शर्मा आदि ने साहित्य के माध्यम से इस संघर्ष को आगे बढ़ाया है। रचनाओं के माध्यम से समाज की विभिन्न कुरीतियों तथा नारी अस्मिता की पहचान से आम नारी को अवगत कराया।

डॉ. विजयदत्त शर्मा निदेशक हरियाणा ग्रन्थ अकादमी हरियाणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वाधीन भारत का इतिहास जब भी रचनात्मक भूमिका में प्रस्तुत किया, उसमें नारियों की अहम् भूमिका परिलक्षित होती है। उन्होंने कहा कि हिन्दी की महिला साहित्यकारों ने देश को जोड़ा तथा समृद्ध किया है।

डॉ. अर्पणा शर्मा एम.ए.टी. ने कहा कि महिलाओं की ईमानदारी और त्याग की भावना पर संदेह नहीं किया जा

सकता। इस क्रम में दयानन्द गर्ल्स कॉलिज मेरठ की पूर्व प्राचार्या डॉ. सरोज शर्मा ने कहा कि महाविद्यालय के कुछ कर्मचारी देहरादून से आई हुई सभी उपस्थित के बारे में सहयोगात्मक रवैया रखते हैं लेकिन वर्तमान में एकाकीपन के दौर में भी महिलाएँ ने रचनात्मक कार्य कर विश्व को आश्चर्यचकित किया है।

समाज समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. वी.के. सिंह, सांसद गाजियाबाद ने कहा कि महिलाएँ घर से लेकर देश की सभी क्षेत्रों में अपना कार्य ईमानदारी से पूर्ण करती हैं। महिलाओं का समृद्ध इतिहास रहा है। महिलाओं ने मुगल दिनों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे कहीं अधिक आज के महिलाओं का योगदान परिलक्षित होता है।

इस द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के इस कार्यवाही ग्रंथ के प्रकाशन के निर्णायक संगोष्ठी के कार्यक्रमों का क्रमबद्ध रूप से संकलित करने के साथ-साथ प्रकाशित शोध लेखों के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक में मुक्त सांस्कृतिक समाज का निर्माण करने की दिशा में सहायक सिद्ध होता है।

महाविद्यालय परिवार एवं आयोजन समिति आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली का महाविद्यालय के राष्ट्रीय संगोष्ठी करने हेतु हृदय से आभार व्यक्त करती है। हम डॉ. आर.पी. सिंह निदेशक उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन के बिना सफल सेमिनार सम्भव नहीं थी। हम आभारी हैं डॉ. पी.एन. अरोड़ा डॉ. दिनेश दत्त शर्मा एवं डॉ. वी.के. शेखर जी के प्रति जिन्होंने अतिथि स्वीकार कर सेमिनार को गरिमामय बनाया।

इस कृतज्ञ है महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करुणा सिंह जी के प्रति, जिनके अमूल्य मार्गदर्शन उत्साहवर्धन एवं रचनात्मक दिशाओं से सफल आयोजन सहज रूप से सम्भव हो सका।

हम विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करने वाले मुख्य वक्ताओं का आभार व्यक्त करते हैं। जिन्होंने हमारे आमन्त्रण को सहज रूप से स्वीकार कर अपने सारगर्भित वक्तव्यों से सेमिनार को सार्थक बनाया। देश के विभिन्न भागों से पधारे हुए प्रतिभागी शोधार्थी तथा छात्राएँ भी साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने अपनी उपस्थिति एवं सक्रिय मार्गदर्शन से सेमिनार को सम्पूर्ण अवधि को जीवंत बनाये रखा।

मैं स्वयं भी व्यक्तिगत रूप से महाविद्यालय के समस्त सदस्यों, कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्रत्येक कार्य में यथासम्भव अपना सहयोग प्रदान कर संगोष्ठी को सफल बनाने में अहम् एवं सशक्त भूमिका प्रदान की।

राष्ट्रीय कार्यशाला

डॉ. बलराम सिंह
संयोजक, राष्ट्रीय कार्यशाला

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर मे दिनांक 22.2.2017 को Use of ICT and e-Education tools: Techniques in Higher Education and Research विषय पर सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ। प्राचार्या प्रो० (डॉ०) करुणा सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के प्रतिभागियों का आह्वान किया वे इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए उच्च शिक्षा के स्तरोन्नयन मे सहभागी बने।

इस अवसर पर कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ० अरुण मोहन शैरी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष HCL, चैन्नई ने अपने वक्तव्य मे कहा कि e-Education , e-Library तथा Digital Library आज सम्पूर्ण विश्व की आवश्यकता है, इसके बिना मानव जीवन अधूरा है। नई तकनीकि से सम्पूर्ण देश को एक नई गति एवं नई ऊर्जा प्राप्त हुई है । आज का शिक्षार्थी नई तकनीकी के माध्यम से अपने को विश्व मंच पर पाता है। इससे समय और धन की बचत की जा सकती है । विशिष्ट अतिथि प्रो के निवासन प्रोफेसर ICT, NUEPA, नई दिल्ली ने कहा कि शिक्षक एवं तकनीकि एक दूसरे के पूरक है, सहायक है। नई तकनीकि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों दोनों को सशक्त बनाती है। उन्होने कहा अध्यापक जीवन भर अध्येता बना रहना चाहिए तथा छात्रों के भी सार्थक विचार स्वीकार करने चाहिए। इस अवसर पर डॉ० विप्लव, प्राचार्य चन्द्रकान्ता महाविद्यालय, बुलन्दशहर ने कहा कि तकनीकि संस्कृति सापेक्ष होनी चाहिए। यथासम्भव देश काल परिस्थिति को ध्यान मे रखकर आवश्यक परिवर्तन एवं परिवर्धन करना चाहिए। डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा, कार्यक्रम निदेशक ने सात दिवसीय कार्यशाला मे चलने वाली कार्ययोजना से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० रश्मि कुमारी ने किया। कार्यशाला के संयोजक बलराम सिंह ने सभी उपस्थित अतिथियों, प्रतिभागियों एवं छात्राओं का धन्यवाद ज्ञापन किया ।

कार्यशाला के दूसरे दिन प्रतिभागियों को उच्च शिक्षा मे कक्षाओं को अन्तर क्रियात्मक एवं रोचक बनाने तथा समय की बचत के लिए नई तकनीकी का प्रशिक्षण दिया गया। मुख्य वक्ता के रूप मे डॉ० राजीव खन्ना ने Easy Test तथा उन सॉफ्टवेयर एवं डिवाइस का प्रयोग करके दिखा या जिनके माध्यम से छात्रों से दृष्टिकोण की जानकारी प्राप्त कर उनसे फीडबैक प्राप्त कर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों मे संवाद बढ़ाया जा सकता है एवं सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सकता है। रूसा (RUSA) के डिप्टी डायरेक्टर डॉ० आलोक श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों से राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अभियान मे तकनीकी के माध्यम से भागीदार बनने की अपील की द्वितीय दिवस के विभिन्न सत्रों का का संचालन डॉ० अनीता रानी राठौर द्वारा किया गया।

कार्यशाला के तृतीय दिवस पर मुख्य वक्ता श्री गौरव पाण्डेय ने Use of ICT in Digital Teaching and concept assessment in Education विषय पर जानकारी दी। उन्होने बताया आई.सी.टी. के विभिन्न उपकरणों जैसे – गूगल, गूगल डाईव, फेसबुक, वीडियो कन्फ्रेंस, लिकाडिन, स्काईप आदि के किस प्रकार अपने अध्ययन – अध्यापन मे प्रयोग करके शिक्षण कार्य को व्यापक एवं रोचक बना सकते है । इसके अलावा उन्होने वेबसाईट Security के बारे मे प्रकाश डाला उदाहरणतः URL Locked Sign, Password Creation etc.

आज के दिन के दूसरे सत्र के मुख्य वक्ता डॉ० प्रदीप तोमर असि० प्रोफेसर, ICT गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा थे जिन्होने

use of latest uleb based ICT tools and technique in education and research" विषय पर जानकारी दी उन्होने के विभिन्न उपकरणों की कार्यक्षमता, लाभ तथा हानि के बारे मे प्रतिभागियों को बताया । तीसरे दिन कार्यशाला का संचालन डॉ० नेहा त्रिपाठी द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय कार्यशाला के चतुर्थ दिन के मुख्यवक्ता डॉ० अभिषेक टण्डन , असि० प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने SPSS (Statistical Package for Social Science) साफ्टवेयर के विषय पर जानकारी दी। उन्होने बताया कि SPSS का विश्लेषण के कुछ भी नही है। उन्होने विभिन्न सांख्यिकी टेस्ट जैसे t-Test F-Test and ANOVA की जानकारी दी। उन्होने SPSS को एक्सेल सीट से बेहतर बताया और सभी प्रतिभागियों को सैम्पल साइज की विधि बताई। डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा, प्रोग्राम कोर्डिनेटर ने e-module सम्बंधी जानकारी दी। द्वितीय सत्र मे सभी प्रतिभागियों ने Computer Lab तथा स्मार्ट रूम मे प्रदत्त प्रोजेक्ट कार्य को पूरा किया। चतुर्थ दिन की कार्यशाला का संचालन संयोजक डॉ० बलराम सिंह द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय कार्यशाला के पांचवे दिन के मुख्य वक्ता श्री टी.के. नन्दी मुख्य कार्यकारी अधिकारी , एडन सिस्टम एण्ड सोल्यूशन प्रा लिमिटेड नई दिल्ली ने स्मार्ट बोर्ड का प्रयोग प्रतिभागियों को सिखाया स्मार्ट बोर्ड के द्वारा चित्रों का रेखांकन, संस्कृतियों का निर्माण आदि कार्यों की जानकारी दी। स्मार्ट क्लास के लिए स्मार्ट बोर्ड की अति आवश्यकता होती है। सभी प्रतिभागियों ने स्मार्ट बोर्ड के द्वारा शिक्षण कार्य करने का सफल अभ्यास किया। पाँचवे दिन के द्वितीय सत्र मे सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन MP हाल मे किया गया। पाँचवे दिन की कार्यशाला का सफल संचालन कार्यशाला सचिव डॉ. दीप्ति राजपेयी द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय कार्यशाला के छठे दिन के मुख्य वक्ता प्रो. अनिल कुमार गौतम अधिष्ठाता आई.सी.टी. गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय रहे, उन्हे LATEX सॉफ्टवेयर के बारे मे जानकारी दी। इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से शोधपत्र किस प्रकार लिखा जा सकता है डॉ. गौतम ने LATEX सॉफ्टवेयर के उन विशिष्ट उपयोग से प्रतिभागियों को अवगत कराया जिनके माध्यम से शोधार्थी, शिक्षक ,शोधपत्र, पुस्तक आलेख हेतु माइक्रोसॉफ्ट वर्ड से LATEX बेहतर सॉफ्टवेयर है। इसके पश्चात द्वितीय सत्र मे प्रतिभागियों ने अपने समूह के अनुसार आयोजक द्वारा प्रदत्त प्रोजेक्ट कार्य की प्रस्तुतीकरण दी। छठे दिन की कार्यशाला का संचालन डॉ. अर्चना सिंह द्वारा किया गया। सायंकाल मे प्रतिभागियों के लिए कैंप फायर का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के अंतिम दिन मे सभी बाहर से पधारे प्रतिभागियों ने अपने-अपने अनुभव बाँटे। कार्यशाला के समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप मे पूर्व निदेशक, उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश डॉ. एन.बी. खान एवं विशिष्ट अतिथि के रूप मे डॉ. आर. पी.एस. यादव अपर सचिव उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश मंचासीन रहे। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. करूणा सिंह ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों एवं अतिथियों का अपने उद्बोधन के माध्यम से स्वागत किया। डॉ. खान ने अपने संबोधन मे ग्रामीण क्षेत्रों मे शिक्षा मे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता बताई तथा अधिकाधिक संख्या मे कार्यशाला एवं सेमिनार जैसे आयोजनों मे छात्राओं की भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया। डॉ. आर. पी. एस. यादव ने कहा कि संगठित एवं अनुशासित होकर तथा प्रबल इच्छा से किसी भी लक्ष्य तक पहुँचा जा सै। समापन सत्र का संचालन डॉ. किशोर कुमार ने किया। कार्यशाला निदेशक डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा ने सात दिवसीय कार्यशाला की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत मे कार्यशाला के समन्वयक बलराम सिंह द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

शैक्षिक भ्रमण

डॉ० रतन सिंह
असो० प्रो० - (बी०एड०)

कु० मायावती राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर के बी०एड० विभाग की छात्राओं का जत्था शैक्षिक भ्रमण हेतु प्राचार्या डॉ० करुणा सिंह के निर्देशानुसार दिनांक 05.05.2017 को सुबह 6.00 बजे महाविद्यालय से देहरादून व मसूरी (उत्तराखण्ड) के लिए रवाना हुआ। लगभग 7 घण्टे के सफर के पश्चात दोपहर 1.00 बजे मसूरी से 6 किमी० पहले मसूरी यूथ हॉस्टल पहुँचकर सभी ने कुछ देर आराम किया तत्पश्चात् दोपहर 3 बजे मसूरी के लिए रवाना हुए। बादलपुर (गौतमबुद्ध नगर) से लगभग 260 किमी० तथा देहरादून से 35 किमी० की दूरी पर स्थित पर्वतों की रानी मसूरी उन स्थानों में से एक है जहाँ लोग बार-बार आना चाहते है। मसूरी समुद्र तल से लगभग 6600 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। जिसमें हरित-पर्वत विभिन्न पादप-प्राणियों सहित बसते हैं। वास्तव में मसूरी की खूबसूरती मन को मोह लेती है। कुछ छात्राओं के लिए अपने ग्रामीण परिवेश से इतर पर्वतीय स्थानों का भ्रमण करना प्रथम अनुभव था। निःसन्देह देहरादून से मसूरी तक का सफर उनके लिए बेहद रोमांचित करने वाला तथा अनूठा था। सर्वप्रथम मसूरी लाइब्रेरी पहुँचकर हम लोग कम्पनी बाग के लिए रवाना हुए। मसूरी लाइब्रेरी से कम्पनी बाग लगभग 4 किमी की दूरी पर है। आज सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक ईको फ्रेंडली एवं प्रदूषण मुक्त उपायों पर अधिक बल दे रहे हैं। कम्पनी विभाग में विभिन्न प्रकार के पादप व पुष्प इको फ्रैंडली ग्रीन हाउस के रूप में बेहद खूबसूरती समेटे हुए है। जहाँ एक ओर देवदार व चिनार के वृक्ष कम्पनी बाग को घेरे हैं वही दूसरी ओर ऊँची मनोरम पर्वतमालाएँ मन को मोह लेती है। कम्पनी बाग प्राकृतिक सम्पदा अध्ययन हेतु छात्राओं के लिए उत्तम स्थान है। यहाँ पर बी० एड० विज्ञान / ईको क्लब प्रभारी डॉ० रतन सिंह व श्रीमती रमाकान्ति ने छात्राओं के साथ पर्यावरण संरक्षण व पादप विविधता पर आवश्यक चर्चा-परिचर्चा की। कम्पनी बाग के प्राकृतिक व मनोहरी नजारों को मन में संजोए वापिस लाईब्रेरी पहुँचकर सभी लोग माल रोड़ पर घूमने के लिए निकले, हल्का अंधेरा होने लगा था। माल रोड़ से दून घाटी का नजारा आश्चर्यचकित करने वाला था। माल रोड़ से दून घाटी ऐसे लग रही थी मानो थाल में किसी ने हजारों दीप प्रज्ज्वलित कर दिए हो। तत्पश्चात् वापिस मसूरी यूथ हॉस्टल पहुँचकर रात्रि विश्राम किया। शैक्षिक भ्रमण के दूसरे दिन सभी लोग प्रातः 5.30 पर ही उठ गए ताकि पर्वतों की सुबह का आनन्द ले सकें, सुबह की ठण्डी हवाओं के साथ यूथ हॉस्टल के आस-पास का नजारा तन व मन को प्रफुल्लित करने वाला था और इस सुहावनी सुबह की बेला में डॉ० अरविन्द कुमार द्वारा कराया गया योगाभ्यास ताजगी से सराबोर करने वाला था। सुबह का नाश्ता यूथ हॉस्टल में करने के पश्चात हम देहरादून के लिए निकल पड़े, घुमावदार पर्वतीय सड़कों, सीढ़ानुमा खेतों को पीछे छोड़ते हुए देहरादून से लगभग 10 किमी पहले मसूरी मार्ग पर ही मालसी डियर पार्क पहुँचे। मालसी डियर पार्क वास्तव में एक चिड़िया घर है। वर्तमान में इसे देहरादून चिड़ियाघर के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर हमने तेंदुआ, हिरन, नीलगाय व विभिन्न प्रकार के पक्षी-मोर, सफेद मोर, शुतुरमुर्ग, लव बर्ड आदि देखे। यहाँ पर डॉ० माणिक रस्तोगी व मौ० वकार रजा ने छात्राओं को जैव संरक्षण व जैव विविधता पर महत्वपूर्ण जानकारी दी। हमारा अगला पड़ाव राष्ट्रीय दृष्टिबाधित संस्थान देहरादून था। एन.आई.वी.एच. सन् 1982 में एक सोसाइटी के रूप में सोसाइटी एक्ट 1860 के अन्तर्गत रजिस्टर्ड कराया गया था जो सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के अधीन कार्य करता है। एन.आई.वी.एच. दृष्टिबाधित छात्र / छात्राओं हेतु उच्च कोटि का शिक्षण / प्रशिक्षण संस्थान है। एन.आई.वी.एच. के डॉ० बलराम सिंह के निर्देशन में छात्राओं ने नेशनल बोलता पुस्तकालय, ब्रेल लिपी पुस्तकालय पर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। संस्थान में स्थित विशिष्ट शिक्षा एवं विकलांगता अध्ययन विभाग में बी.एड. पाठ्यक्रम भी संचालित है। एन.आई.वी.एच. में दृष्टिबाधित छात्र / छात्राओं को जीवन जीने की कला से लेकर उनके व्यवसायिक उन्नयन तक की शिक्षा दी जाती है। दृष्टिबाधित संस्थान में जाकर हमें अभ्यास हुआ की जीवन संघर्ष एवं मुश्किलों से मनुष्य अपनी हार को भी

जीत में बदल सकता है। निश्चित ही राष्ट्रीय दृष्टिबाधित संस्थान का भ्रमण एक अनूठा अनुभव रहा।

शैक्षिक भ्रमण से वास्तविक तथ्यों का सच्चा ज्ञान होता है तथा शैक्षिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों, संस्थानों का सूक्ष्म निरीक्षण कर वास्तविकता से अवगत होना होता है। छात्राओं में सहयोग, सहानुभूति एवं अनुशासन, सहकारिता, सद्भावना, सहनशीलता, प्रेम, अवलोकन, निरीक्षण, कल्पनाशीलता, अन्वेषण, सौन्दर्यानुभूति तथा दूरदर्शिता जैसे गुण उनमें विकसित हो सकेंगे तथा उन गुणों को अपने व्यवहार में समाहित कर ये भावी शिक्षक, अपने छात्र / छात्राओं के लगातार करेंगे, इसी आशा के साथ आगे भी इस प्रकार के सुनिश्चित शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाता रहेगा।

सुख सागर

जिस धागे की, गांठे खुल सकती है
उस धागे पर कैंची नही चलानी चाहिए
किसी की कोई बात बुरी लगे तो,
और तरह से सोचे,
यदि व्यक्ति महत्वपूर्ण है,
तो भूल जाए और,
बात महत्वपूर्ण है तो,
व्यक्ति को भूल जाएं!

महाविद्यालय परिवार

कला संकाय

प्राचार्य - डॉ० करुणा सिंह

हिन्दी विभाग

1. डॉ० रश्मि कुमारी — एसो० प्रो०
2. डॉ० अर्चना सिंह — एसो० प्रो०
3. डॉ० जीत सिंह — असि० प्रो०
4. डॉ० मिन्तु — असि० प्रो०

अंग्रेजी विभाग

1. डॉ० अनीता रानी राठौर — एसो० प्रो०
2. श्रीमती दीक्षा — असि० प्रो०

संस्कृत विभाग

1. डॉ० एस०एस० यादव — एसो० प्रो०
1. डॉ० दीप्ति वाजपेयी — एसो० प्रो०
2. डॉ० नीलम शर्मा — असि० प्रो०
3. श्रीमती कनकलता यादव — असि० प्रो०

समाजशास्त्र विभाग

2. डॉ० सुशीला — असि० प्रो०
3. डॉ० हरेन्द्र कुमार — असि० प्रो०
4. डॉ० विनीता सिंह — असि० प्रो०

इतिहास विभाग

1. डॉ० आशा रानी — एसो० प्रो०
2. डॉ० निधि रायजादा — एसो० प्रो०
3. डॉ० किशोर कुमार — एसो० प्रो०
4. डॉ० अनीता सिंह — एसो० प्रो०
5. श्री अरविन्द सिंह — असि० प्रो०

गृहविज्ञान विभाग

1. डॉ० शिवानी वर्मा — असि० प्रो०
2. श्रीमती शिल्पी — असि० प्रो०

राजनीति शास्त्र विभाग

1. डॉ० आभा सिंह — एसो० प्रो०
1. डॉ० ममता उपाध्याय — एसो० प्रो०
2. डॉ० पंकज चौधरी — असि० प्रो०
3. डॉ० सीमा देवी — असि० प्रो०

भूगोल विभाग

1. डॉ० मीनाक्षी लोहनी — असि० प्रो०
2. श्री कनक कुमार — असि० प्रो०
3. श्रीमती निशा यादव — असि० प्रो०

अर्थशास्त्र विभाग

1. श्रीमती भावना यादव — असि० प्रो०
2. श्रीमती पवन कुमारी — असि० प्रो०
3. डॉ० वन्दना शर्मा — असि० प्रो०

संगीत विभाग

1. डॉ० बबली अरुण — असि० प्रो०

शिक्षा विभाग

1. डॉ० सोनम शर्मा — असि० प्रो०

शारीरिक शिक्षा विभाग

1. डॉ० सत्यन्त कुमार — असि० प्रो०
2. श्री धीरज कुमार — असि० प्रो०

विज्ञान संकाय

जन्तु विज्ञान विभाग

1. डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा — एसो० प्रो०

रसायन विज्ञान विभाग

1. श्रीमती नेहा त्रिपाठी — असि० प्रो०

वनस्पति विज्ञान विभाग

1. डॉ० प्रतिभा तोमर — असि० प्रो०

भौतिक विज्ञान विभाग

1. डॉ० ऋचा — असि० प्रो०

गणित विभाग

1. पद रिक्त

वाणिज्य संकाय

1. डॉ० अरविन्द कुमार यादव — असि० प्रो०

शिक्षा संकाय

1. श्री बलराम सिंह — असि० प्रो०
2. डॉ० अरविन्द कुमार — असि० प्रो०
3. श्री माणिक रस्तोगी — असि० प्रो०
4. डॉ० रतन सिंह — असि० प्रो०
5. डॉ० वकार रजा — असि० प्रो०
6. श्रीमती रमाकान्ति — असि० प्रो०

शिक्षणेतर कर्मचारी

पुस्तकालयाध्यक्ष	पद रिक्त
कार्यालय अधीक्षक	पद रिक्त
वरिष्ठ लिपिक	1 श्री महेश सिंह भाटी
कनिष्ठ लिपिक	3 पद रिक्त
अर्दली	1 पद रिक्त
स्वीपर	1 पद रिक्त
कार्यालय परिचर	1 श्री चन्द्र प्रकाश
	2 पद रिक्त
प्रयोगशाला सहायक	4 पद रिक्त
प्रयोगशाला परिचर	भूगोल विभाग श्री मुकेश शर्मा
	6 पद रिक्त

अनुशासन मण्डल

प्रथम पंक्ति में बांए से दांए

डॉ० एल.एस. लाल, डॉ० रहिम, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्य), डॉ० अनीता रानी राठौर (मुख्य शासन), डॉ० दिनेश चन्द्र शर्मा, डॉ० आशा रा

द्वितीय पंक्ति में बांए से दांए

डॉ० अरविन्द कुमार लाल, डॉ० किशोर कुमार, श्री बलराम सिंह, डॉ० मीनाक्षी लोहनी, श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ० दीप्ति वाजपेयी

सम्पादक मण्डल

प्रथम पंक्ति में बांए से दांए

डॉ० रतन सिंह, डॉ० निधि रायजादा, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्य), डॉ० दीप्ति वाजपेयी (प्रधान सम्पादिका), श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ० मीनाक्षी

द्वितीय पंक्ति में बांए से दांए

श्रीमती दीक्षा, डॉ० मिन्तु, डॉ० नीलम शर्मा, डॉ० अरविन्द कुमार लाल

रैंजर्स/एन.सी.सी./एन.एस.एस. समिति

प्रथम पंक्ति में बांए से दांए

डॉ० सुशीला, श्रीमती शिल्पी, डॉ० अर्चना सिंह, डॉ० करुणा सिंह (प्राचार्य), डॉ० दीप्ति वाजपेयी, श्रीमती नेहा त्रिपाठी, डॉ० मीनाक्षी

द्वितीय पंक्ति में बांए से दांए

श्री बलराम सिंह, श्रीमती रमाकान्ति, श्रीमती मानला लाल, डॉ० विनीता सिंह, डॉ० मिन्तु, डॉ० नीलम शर्मा, श्रीमती दीक्षा, डॉ० सी

महर्षि परशुराम जयंती पर कालेज में कार्यक्रम आयोजित

गौतमबुद्धनगर। कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर में महर्षि परशुराम जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महर्षि परशुराम को महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ करुणा सिंह द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई। डॉ रश्मि कुमारी ने महर्षि परशुराम के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर महाविद्यालय में समस्त प्राध्यापकों के साथ छात्राएँ भी उपस्थित रहीं। डॉ निधि रायजादा द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

माया‌वती कॉलेज में स्काउट-गाइड प्रशिक्षण शिविर

दादरी (ब्यूरो)। कुमारी मायावत राजकीय स्नातक महाविद्यालय बुधवार को स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किय गया। शिविर का उद्घाटन डिंडल जैन कॉलेज के प्राचा सिंह ने किया। इस महाविद्यालय की प्राचा सिंह ने कहा कि स्का अनुशासन की सीख अनुशासन ही जीवन रत्न होता है। इस सुशीला, डॉ. स महाविद्यालय का स्टाप

जागरूकता कार्यक्रम

ए. एस. दादरी : कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर कॉलेज की छात्राओं ने शुक्रवार को बदलपुर गांव में घर-घर जाकर लोगों को मतदान के प्रति जागरूक किया। छात्राओं को गांव में 6 दिवसीय राष्ट्रीय सेवा कैंप चल रहा है।

खेल समारोह का समापन

दादरी। कु. मायावती राजकीय महिला विद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई शिविर में दादरी खजौलीखास जीत लिया। शिविर में उपस्थित सेवक विभिन्नों छात्राओं को सम्मानित किया। इस मौके पर कार्यक्रम अधिकारी डा. दीपि कार्यक्रम सौंपा रही।

जरूर न्यूज ब्यूरो

छात्राओं ने दी ग्रामीणों को मतदान का प्र

दादरी। कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय कादलपुर राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेवी छात्राओं ने प्रभातफेरी निकाल कर ग्रामीणों को विधानसभा चुनाव 2017 में 100 प्रतिशत मतदान करने हेतु प्रेरित किया। कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवायोजना का विशेष शिविर 2 फरवरी से फरवरी तक अधिगृहीत ग्राम बादलपुर में आयोजित किया जा रहा है। शुक्रवार को शिविर के दूसरे दिन

ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर का समापन

जम न्यूज संवाददाता

दादरी। बादलपुर स्थित कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना के 2 से 8 फरवरी तक ग्राम बादलपुर में संचालित हो रहे सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन हो गया। शिविर के सात दिनों में छात्राओं ने अधिगृहित ग्राम बादलपुर में स्वच्छता, श्रमदान, भूमि

निकाली एवं मतदाता जागरूकता सम्बन्धी नुक्कड़ नाटक भी किया। ग्रचित नुक्कड़ नाटक

समापन अवसर महाविद्यालय की प्राचार्या ड करुणा सिंह ने छात्राओं व परस्कृत किया। सर्वश्रेष्ठ शिविरा

छात्राओं ने की मतदान करने की अ